ISSN : 2582-1660
मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 2, अंक : 3, जनवरी-मार्च 2020

अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

मैथिली साहित्य संधान

पोथी समीक्षा

(2)

सामा चकेवा लोक उत्सवक भव्य आयोजन

अखिल भारतीय मिथिला संघक मिथिलानी समूह द्वारा गत 11 नवम्बर कें अपना कार्यालय परिसर मे सामा चकेवा लोक उत्सवक भव्य आयोजन संपन्न भेल।

उत्सव मिथिलां क्षेत्र में मनाओल जाय वला ई उत्सव कोनो जाति विशेष सं नहिं बान्हल गेल अछि। भाई बहिनक स्नेहक प्रतीक ई उत्सव वस्तुत: प्रकृति व विलुप्तप्राय जीब-जन्तुक संरक्षण लेल मनाओल जाईत अछि। जाहि में चिड़े-चुनमुनी के विशेष महत्व दए ओकरा संरक्षित करबाक लेल सभ के प्रेरित कएल जाईत छैक। बिहार राज्यक दरभंगा जिलान्तर्गत कुशेश्वरस्थान क लगीच अखनो ओ विश्वप्रसिद्ध पक्षी अभ्यारण्य मौजूद छैक जे कहियौ रंग-बिरंगक प्रवासी चिड़ै-चुनमुनीक कलरव सं गुंजार रहैत छलैक। परंच बहुतायत मात्रा में चिड़ै-चुनमुनिक अवैध शिकारक कारण आब ओ सून-मशान जेकॉ रहए लगलैक अछि। छठिक खरना दिन सं शुरू होई वला एहि पावनिक समापन कार्तिक पूर्णिमाक राति खन होईत छैक।

कहल जाईत छैक जे भगवान श्रीकृष्णक धीया श्यामा भ्रांतिवश अपनहिं पिता श्री कृष्ण सं शापित भए पक्षी रूप में जीवि रहल छलीह। ई समाद सुनितहि हुनक भाई साम्ब घोर तपस्या कए हुनका शाप मुक्त करौलैन्ह। बहिनक लेल भाईक स्नेह कें स्मरण करबाक उद्देश्य सं प्रतिवर्ष स्त्रीगण अपन हाथ सं माटिक सामा-चकेवा बनाकए संपूर्ण निष्ठा सं अपन - अपन भाईक सुख समृद्धि आ चिरायु क कामना लए एकरा एकगोट उत्सवक रूप में मनबैत छथि। पूर्ण रूपेन प्रकृति से जुड़ल एहि पावनि कें सभ वर्गक स्त्रीगण पूर्ण आस्था आ विश्वासक संग मनबैत छथि।एहि पूजा लेल नहिं त कोनो पंडितक बेगरता रहैत छैक आ ने कोनो आओर लाम-काफ केर बिना कोनो औपचारिकता के बहिन लोकनि राति खन भानस-भात सं निवृत्त भए खेनिहार सभ के सुतलाक उपरांत आड़ोसिन -पड़ोसिन संग मिलि ऑगन सं बहार भए खरिहान , दलान किंवा ईनारक लगीच (जे पहिने सभक दरवज्जा पर रहिते रहैक) बैसि क भाई - बहिनक स्नेहक अनेको गीत - कवित फकरा आदि गाबि के ननद-भऊज खूब चौल करैत छलीह, खूब हंसी ठट्ठा करैत छलीह आ कार्तिक पूर्णिमा के नव फसिल लेल जोतला खेत किंवा पोखरि में सामा-चकेवा के विसर्जित करैत छलीह आ अगिला साल पुन: अयबाक प्रार्थना करैत एहि खेलक समापन आ भाईक समृद्धि क कामना करैत छलीह।

सामाक एहि गीत में देखी :-

सामचक सामचक अबिह हे, अबिह हे
जोतला खेत में बैसिह हे, बैसिह हे
सब रंग पटिया ओछबिह हे, ओछबिह हे
एक पटिया पर कए - कए जना, कए - कए जना
छोटे बरे नबो जना, नबो जना
नबो जना के हाथे छड़ी, हाथे छड़ी
हमरा भैया के सोने छड़ी, सोने छड़ी
सामचक सामचक अबिह हे, अबिह हे
ढेपा फोड़ि - फोड़ि खैइह हे, खैइह हे।।

परंच आब ओ परंपरा कतहु हेरायल जा रहल छैक कारण जिविकोपार्जन हेतु सभ के गाम - घर छोड़ि परदेश जा बसय परलैक अछि।

ग्लोबलाइजेशनक कारण प्रवासी मैथिल अपन सभ परंपरा आ पावनि-तिहार सभ विसरल जा रहल छथि जे चिंताजनक छैक। येह कारण छैक जे देश भरिक कैयेको संस्था सभ अपन सामूहिक प्रयास सं अपन सभटा संस्कार आ संस्कृति के संरक्षित करबाक उद्देश्य सं जगह-जगह सामूहिक रूप सं बिसराइत पावनि-तिहार कें विधिवत रूपें मनबैत छथि जाहि सं नव पीढ़ी कें हस्तांतरित कएल जा सकय आ अपन संस्कृति के सुरक्षित, संरक्षित कएल जा सकय।

मौसम परिवर्तन क संग नव फसिल धानक कटाई आ ओकर उसिनियां-फटकिया में लागल जनि जातिक उत्साह देखते बनैछ।

हम हृदय सं अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा आ महामंत्री श्री विद्यानन्द ठाकुरक प्रति आभार प्रकट करैत छियेन्ह जे हुनके असिमित प्रयास आ संकल्प सं आई एहि तरहक आयोजन करबा में हम मिथिलानी समूह सफल भेलहुं अछि।

अखिल भारतीय मिथिला संघ आ श्री विजयचन्द्र झा भाईजी कें एकर पूर्ण रूपेन श्रेय जाइत छैन्ह जे संपूर्ण दिल्ली एन सी आर केर समस्त स्त्रीगण के सर्वप्रथम एकजुट कए एक मंच सं जोड़ि एतेक नीक कृत्य लेल प्रेरणास्रोत बनलाह आ सभ तरहे सहयोगी बनल रहैत सदति मार्गदर्शक बनल रहैत छथि। संघक सभ भाई पंडित कौशल, गोविंद, ओम, शंकर द्वय क प्रति आभार प्रकट करैत छियेन्ह जे सदति अपन सहयोग सं सभ कार्य सफल बनेबैत छथि।

संगहि हम अपन सहयोगी बहिन सभक प्रति सेहो आभारी छी जे सदैव सभ बहिन हमरा संग ठाढ़ रहैत छथि।संघक उपाध्यक्ष डॉ. ममता ठाकुर, नवीना मिश्रा , ममता , सांत्वना, ज्योति, मधु, कंचन, अर्चना, पूजा, रूबी, रीना, नूतन, आदि सभ बहिन के हृदय सं धन्यवाद! कारण येह बहिन सभ हमर प्राणवायु आ ज्ञानेन्द्रिय छथि।

हिनका लोकनिक सहयोग बिना किछु संभव नहिं छैक।

जय मिथिला! जय मैथिली! जय जानकी!

– कल्पना झा
संयोजक, सामा चकेवा उत्सव
संयोजक, मिथिलानी समूह, अखिल भारतीय मिथिला संघ

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 2, अंक : 3

जनवरी-मार्च 2020

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

ISSN : 2582-1660

RNI No. : DELMAI/2018/76698

संरक्षक
प्रभात झा
सांसद, राज्य सभा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादक
विनीत कुमार झा उत्पल*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
रौशन झा, भास्कर ज्योति, स्वाती शाकम्भरी, डॉ. प्रवीण कुमार झा, त्रिपुरारी ठाकुर

उप संपादक
गोविन्द कुमार झा

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर

प्रबंधन मंडल
पं. कौशल झा, अंजनी कुमार झा, ओम चौधरी, शंकर कुमार झा

आवरण चित्र
श्रुति झा

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062

पत्राचार पता
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल: teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

■ संपादकीय 5

संस्मरण

■ प्रार्थनामे नत भेल एक आख्यान / *केदार कानन* 7

■ मोन मे हौरैत मिथिला विभूति लोकनिक आख्यान! / *लक्ष्मण झा 'सागर'* 10

महाकाव्य

■ जनमनक नायक : परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ / *डॉ. महेन्द्र* 13

■ महाकाव्य एवं महाकाव्य मे शकुंतला / *अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'* 16

उपन्यास

■ उपन्यास विधामे मीलक पाथर: 'पृथ्वीपुत्र' / *शिवशंकर श्रीनिवास* 18

■ खोंता आ चिड़ै : दलित विमर्शक सफल उपन्यास / *सोनू कुमार झा* 23

■ गुलोक भाषा-शैली / *डॉ. अरुण कुमार सिंह* 25

■ औनायल जिनगीक धरोहर / *मुन्ना जी* 29

हम किएक लिखैत छी

■ सामाजिक सरोकार लेल लिखैत छी / *सुशांत झा 'अवलोकित'* 30

नाटक

■ पाठक ओ दर्शककें सम्मोहित करैत 'सोन कछुआ' / *डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा* 31

निबंध संग्रह

■ परीक्षोपयोगी आ जानकारीपूर्ण संग्रह / *रौशन झा* 33

कविता संग्रह

■ समग्रताक परिचय : इजोतक बाट / *डॉ. विनय कुमार चौधरी* 35

■ सत्ता आ प्रेमक चुनौती: दु:स्वप्न वा दिवास्वप्न / *विनीत उत्पल* 37

■ मुक्त कंठसं बहराइत अविरल जीवन रसक कविता: अविरल-अविराम / *सत्यनारायण प्रसाद यादव* 39

■ भूमंडलीकरणक असाधारण शब्द चित्र / *पंचानन मिश्र* 43

■ प्रेम-अनुराग सं सिक्त काव्यधारा / *रोमिशा झा* 46

■ बेटीक जीवन पर केन्द्रित काव्य / *शंकर 'मधुपांश'* 47

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

- पूर्व आ पश्चिम तं फराक थिक जीवनक यथार्थ / *विनीत उत्पल* 49

व्यक्ति विशेष

- बनैत-बिगड़ैत देश आ सुकान्त सोमक कविता / *तारानंद वियोगी* 52

बीहनि कथा

- बीहनि कथामे मीलक पाथर / *मुन्ना जी* 57

कथा संग्रह

- हृदय ओ मस्तिष्ककें आन्दोलित करैत कथा-संग्रह / *डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा* 58
- माटि-पानी संबंधक जीवंत कथा / *शुभेन्दु शेखर* 61
- 'हम छिएह तोरा संग...' ई घोषणा नहि क्रांति थिक / *वैद्यनाथ झा* 64

बाल साहित्य

- ज्ञान संग मनोरंजनक गुलदस्ता / *अमित मिश्र* 66

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 7

𑒠𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒏𑓂𑒭𑒞

######

𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒴 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒏𑓂𑒭𑒞 ,
𑒣𑒩𑒧 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒰𑒥𑒟𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱।
𑒠𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰 𑒠𑒩𑓂𑒦 𑒁𑒧𑒩 𑒫𑒩 𑒏𑒩𑒞𑒰,
𑒫𑒩𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒨𑒼𑒢𑒱𑒏𑓂𑒭𑒞 𑒦𑒩𑒞𑒰॥
𑒇𑒑𑓂𑒫𑒹𑒠 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒰𑒖𑒟𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒠𑒖𑒢,
𑒂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒼𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒫𑒩𑓂𑒔𑒮𑒲।
𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒔𑒢,
𑒫𑒩𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒠𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒏𑓂𑒭𑒞 𑒮𑒢
𑒖𑒲𑒫𑒢॥
𑒧𑒝𑓂𑒛𑒢 𑒁𑒨𑒰𑒔𑒱 𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲 𑒦𑒫𑒢,
𑒖𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒠𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒏𑓂𑒭𑒞 𑒞𑒰𑒧𑓂𑒩𑒰 𑒠𑒡𑒱𑒔𑒢𑓂𑒠𑒢।
𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱𑒞𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒞𑒖𑒢,
𑒁𑒬𑓂𑒩𑒳𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒮𑒖𑒪 𑒏𑒩𑒳𑒝 𑒏𑓂𑒩𑒢𑓂𑒠𑒢॥

मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि मैथिलजन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास।

एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक प्रत्येक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत।

सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत।

लिप्यातंरण क' अपन प्रविष्टि teerbhuktimaithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय (20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001) पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता (क्रमांक-5 केर विजेता)

प्रदीप कुमार, सहायक अनुभाग अधिकारी ग्रामीण विकास विभाग, सामान्य प्रशासन, कमरा सं. 38ए, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001, ईमेल: pradeepk739@gmail.com, मो. 9717983376

संपादकीय

आंग्ल नववर्षक शुभकामना। नव वर्ष आबैक अर्थ ई होयत अछि जे बीतल वर्ष मे की छूटल की बढ़ल, ओकरा गुनब आ नव वर्षमे ओहि अनुसार कार्य योजना बना आओर उत्साह सं काज करब। मैथिली शोधक दिशा मे वर्ष 2019 बड़ महत्वपूर्ण रहल। अखिल भारतीय मिथिला संघक शोधपत्रिका 'तीरभुक्ति' के एही वर्ष आईएसएसएन भेटल आ आब ई पत्रिका पूर्ण रूप सं शोध पत्रिका भ' गेल आ ब्लाइंड पीयर रिव्यू सेहो। पिछला बरख जाहि तरहें 'तीरभुक्ति' के मांग आ पाठकक सहयोग भेटल अछि, ओहि सं तीरभुक्तिक सम्पादकीय टीम आर उत्साह सं काज क' रहल अछि, जे पाठक, लेखक आ विज्ञापनदाता सभक सहयोग भेटैत रहय आ समय पर पत्रिकाक प्रकाशन हुए। नव वर्षक पहिलुक अंक सेहो समीक्षा अंक अछि आ पहिलुक अंकक जेना प्रशंसा भेटल आ समीक्षकक सहयोग भेटल, हम सभक आभारी छी।

समीक्षा पर आधारित तीरभुक्तिक दू अंकक संपादन करैत ई ज्ञान भेल जे एही भाषा मे समीक्षा सहित आलोचना आ समालोचना नहि भ' रहल अछि। रचनाकार केर अपन तकलीफ अछि, पाठकक अपन आ आलोचकक अपन। किछु साहित्यकार अपन संबंधक आधार पर किनको सं अपन कृति के समीक्षा करबा लेत छथि ते कियो ओकरा छपयबाक जुगाड़ सेहो। साहित्य अकादमी सं पुरस्कृत विख्यात लेखक विभूति आनंद ताहि सं क्षुब्ध भ' के मैथिली समीक्षा लेल लिखने छलाह, 'तोरा बियाह मे हम नटुआ, हमरा बियाह मे तों नटुआ'। ताहि पर बंशीधर मिश्र लिखलथि, 'हमर सुनरी की तों सुनरा, गामक लोक बनरी-बनरा'। बाबा बैद्यनाथ झा के कहब छल, 'चर्चित बनअ लेल एखन किछु लोकक इएह जीवन सूत्र बनल अछि, जे एहि लूरिमे माहिर अछि वएह पैघ विद्वान आ बड़का साहित्यकार कहबैछ।' तखन उपाय की? एक बेर सोचबाक चाही।

मैथिली भाषा एतेक पुरान भेला के बादो एकर सहित्य मे आलोचना, समालोचना आ समीक्षा विधाक विकास नहि भ' सकल, एकर जिम्मेदार के? आइ साहित्य संरचना मे जतेक रचनात्मकता आ अनुभव के आवश्यकता होयत अछि, ओहि सं बेसी योग्यता तमाम मैथिली साहित्यकार के अछि, तकर बादो समीक्षा विधा कोनो सुखद स्थान नहि बना सकल अछि। एखन कविता खूब लिखल जा रहल अछि आ कवि सभ पुरस्कृत सेहो। मुदा कथा, उपन्यास, व्यंग्यक संग समीक्षा देखि के निराशा होयत अछि, जे एकर स्थिति कहिया बदलत। आजुक युवा मे मंच पर जेना आबय के धड़फड़ी अछि आ हथपकड़ा ब्राह्मणक नौत (कार्यक्रम शुरू भेला के बाद कोनो कविकें देखहिकें कविता पढ़हि के लेल मंच पर बजाओल जायत अछि) जेना मंच पर कवि कविता पढैत अछि आ दक्षिणा पाबैत अछि। एही स्थिति मे समीक्षाक स्तर की आ कोना होयत, सोचल जा सकैत अछि।

समीक्षा अंकक श्रृंखला मे 'तीरभुक्ति' के ई दोसर अंक अछि। पहिलुक अंक मे ओही पोथी सभक समीक्षा आयल छल जाकर प्रकाशन दू-तीन वर्षक भीतर भेल छल मुदा दोसर अंक मे ओहनो पोथी सभक समीक्षा भेटत जे पुरान अछि आ पढ़ल जा रहल अछि। दुनू अंक मे पचास सं बेसी पोथी के समीक्षा प्रकाशित भेल जाहि मे शोध प्रबंध, यात्रा वृतांत, ग्रामगाथा, उपन्यास, कथा संग्रह, महाकाव्य, संस्मरण, कविता संग्रह, बाल साहित्य, निबंध संग्रह, व्यंग्य सहित तमाम विधा के पोथी छल। हमर सभक प्रयास छल जे कम-सं-कम सौ सं बेसी पोथी के सिर्फ समीक्षा टा नहि हो वरन आलोचना आ समालोचना सेहो हो, मुदा लागैत अछि ओ सपना दिवास्वप्न रहि गेल। दू टा समीक्षा अंक के प्रकाशनमे बड़ रास अनुभव भेल, जेना साहित्य अकादेमी सं पुरस्कृत साहित्यकार आ 'मिथिला दर्शन' के प्रधान संपादक प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' सलाह देलनि जे पैघ आ स्थापित साहित्यकारक समीक्षा कोनो नवतुरिया वा पहिलुक बेर प्रकाशित होय बला लेखक सं कराओल जेबाक चाही। एही सं नवतुरिया सभ के प्रोत्साहन भेटत। तहिना वरिष्ठ साहित्यकार आ 'भारती मंडन' के संपादक केदार कानन के विचार छलनि जे पैघ-पैघ साहित्यकार सं समीक्षा करेबाक चाही, एही सं नव लोक सीखि सकत जे समीक्षा कोना होयबाक चाही। मुदा साहित्य आ साहित्यसृजन कोनो फार्मूला पर नहि चलैत अछि, ताहि सं सुनलहूं सभके, मुदा गुनलहूं समीक्षा करय बला समीक्षकके। यैह कारण अछि जे तीरभुक्ति के दुनू अंक मे नव आ पुरान, वरिष्ठ आ कनिष्ठ कतेक रास समीक्षक अपन समीक्षाक संग उपस्थित भेलाह।

समीक्षा अंक निकलबाक कम चुनौती नहि छल। प्रो. ललितेश मिश्र के मोताबिक आइ धरि मैथिली साहित्यक इतिहास मे कोनो पत्रिका समीक्षा अंक नहि निकालने अछि, ई काज 'तीरभुक्ति' पहिलुक बेर क' रहल अछि, आ नव इतिहास बनि रहल अछि। तीरभुक्तिक प्रयास अछि जे मैथिली मे शोध हुए आ नव-नव विधा आ विषय पर काज हुए वा जे काज भेल अछि आ भ' रहल अछि, ओ पाठकक आगू आबय। ओना समीक्षा अंकक लेल कतेक रास लोग अपन लिखल समीक्षा पहिने फेसबुक पर पोस्ट केलाह तकर बाद तीरभुक्ति के पठौलनि। एही मे सम्पादकीय विभाग लग ई परेशानी भेल जे ओ कतय-कतय ताकि के सुनिश्चित करय, जे कोनो समीक्षा कत्तो प्रकाशित नहि भेल अछि। आब लोक चाहैत अछि जे एक क्षण मे लिखी आ दोसर क्षण ओ प्रकाशित भ' जाय आ तेसर क्षण पाठकक प्रतिक्रिया सेहो भेट जाय।

ई सत्य अछि जे आजुक युग सोशल मीडिया के अछि आ लोक मे धैर्यक सीमा खत्म भ' गेल अछि आ मानसिकता बनि गेल अछि जे हुनकर रचना तुरंत सोशल मीडिया पर प्रकाशित भ' जाय आ लोकक लाइक्स, कमेंट्स आ शेयर देखि हुनका गम आ खुशी होयत अछि। मुदा, फेसबुकक आबोहवा एकटा डिप्रेशन सेहो आनैत अछि आ ओकरा 'फेसबुक डिप्रेशन' के नाम सं जानल जायत अछि आ सामाजिक मनोविज्ञान मे एकरा बीमारी मानल जायत अछि। पश्चिम के मनोवैज्ञानिक सी. आर. ब्लीज, जे, बारकोव, वान डोर्सेलाएर आदि एही विषय पर बड़ रास काज क' रहल अछि। हुनकर खोज अछि जे ओ लोक बेसी डिप्रेशन मे रहैत अछि जिनकर ऑनलाइन बेसी मित्र छथि, ओ बड़ रास समय ऑनलाइन रहैत छथि, ओ आन लोकक अपडेट लगातार पढ़ैत छथि, आ हुनका सभके आकर्षक स्त्री सभक तस्वीर बेसी आकर्षित करैत छनि।

तीरभुक्ति के एही अंक मे केदार कानन, लक्ष्मण झा सागर, डॉ. महेंद्र, डॉ. अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज', शिवशंकर श्रीनिवास, डॉ. अरुण कुमार सिंह, मुन्नाजी, डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा, सोनू कुमार झा, रौशन झा, विनीत उत्पल, सत्यनारायण प्रसाद यादव, पंचानन मिश्र, रोमिशा झा, शंकर 'मधुपांश', तारानंद वियोगी, शुभेन्दु शेखर, बैद्यनाथ झा, अमित मिश्र आदि के लिखल समीक्षा पढ़ल जा सकैत अछि आ देखल जा सकैत अछि जे ओ सभ आलेख, आलोचना, समालोचना आ समीक्षाक परिधि मे कतय बैसैत अछि। दू अंक मे सीमा सं बेसी पन्ना देबाक बादो कतेक रास पोथी के समीक्षा प्रकाशित नहि भ' सकल, एकर खेद अछि। मैथिली के युवा कथाकार अभिलाषाक पोथी 'पह', कमल मोहन चून्नुजीक पोथी 'निनाद', विभूति आनंदक कविता संग्रह 'पहाड़ आ अन्य कविता', कथाकार अशोक के 'डैडीगाम', श्याम दरिहरे के 'बड़की काकी हॉट मेल डॉट कॉम', अमित मिश्रक 'अंशु बनि पसैर जायब', मनीष अरविन्दक 'शिखर पर जिजीविषा', अरुणाभ सौरभक 'तें किछु आर', प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' क' 'जहलक डायरी' सन पोथीक समीक्षा प्रकाशित नहि भ' सकल। एकर पाछां कारण ई जे किछु लोक गछलक जे हम पोथी के समीक्षा क' देब मुदा छह मास सं बेसी भेला के बादो कोनो सुगबुगाहट नहि देखा पड़ल। बेर-बेर तगादा केला के बादो 'आइ देब-काल्हि देब' मे समय बिता देलाह। जाहि कारण सं किछु नीक पोथी सभक समीक्षा पढ़बा सं तीरभुक्तिक पाठक वंचित रहि गेल।

ईहो अंक मे समीक्षा सामग्री एतेक भ' गेल जे घोषणा के बादो कोनो नियमित कॉलम प्रकाशित नहि क' सकलहूं। आगामी अंक सं नियमित रहत। 'तीरभुक्ति' के ई अंक केहन लागल, जरूर बतायब।

– विनीत उत्पल

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी केर अधीन कर मे छूट योग्य रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	**अखिल भारतीय मिथिला संघ** (**Akhil Bhartiya Mithila Sangh**)
खाता संख्या	:	**11084229861**
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	**110002087**
बैंक	:	**स्टेट बैंक ऑफ इंडिया**
शाखा	:	**पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली**

प्रार्थनामे नत भेल एक आख्यान

✍ **केदार कानन**

अनेकानेक शुभेच्छु आ श्रेष्ठजनक प्रेरणा-प्रोत्साहन पाबि लेखक एहि औपन्यासिक संस्मरणकें लिखलनि अछि। कोना एकटा छोट सन इजोतक रेख कोनो लेखकक मौन कें तोड़ि दैत अछि, मोनमे कोना कल्पनाशीलता बाओग क' दैत अछि, तकर एक प्रत्यक्ष उदाहरण थिक कुमार मनीष अरविन्दक नव कृति 'मिच्छामी दुक्कड़म।'

लेखक अत्यन्त संवेदनशील होइत अछि। कोन घटना, कोन प्रसंग, कोन बात ओकरा मानसमे हौंड़'। लगतै, तकर कोन ठेकान। एहि पोथीक सृजनमे मनीष कें कतेक-कतेक प्रसंग कें थकियाब' पड़लनि, मोनक एकान्त गह्वरमे सैंतल कतेक रास तीन-मीठ स्मृति कें सोझां आनय पड़लनि, से जखन पाठक एहि पोथी मे धंसताह, तखने पता लागि सकैत अछि।

मनीषक जीवन मे उथल-पुथल रहलनि अछि। हुनक भीतरक जिजीविषा निश्चितरूपें प्रणम्य थिक। हमरा लगैत अछि जे हुनक भीतरक रचनाकारे हुनक पुनर्सृजन कयलक अछि, से आओर जे हो, ई मैथिली साहित्य लेल सुखदायी थिक। हुनक रचनात्मक लगाओ दिनानुदिन बढ़ैत रहनि, पल्लवित-पुष्पित होइत रहनि, तकर कामना के नहि करत।

थोड़ेक हम अपन एहि लेखनक विषयमे सेहो कहय चाहैत छी। मनीषक एहि पोथी पर हम थम्हि-थम्हिक', छोट-छोट टुकड़ीमे लिखने छी। तत्काल एहिमे सम्बद्धता आ तारतम्यता ताकब व्यर्थ थिक।

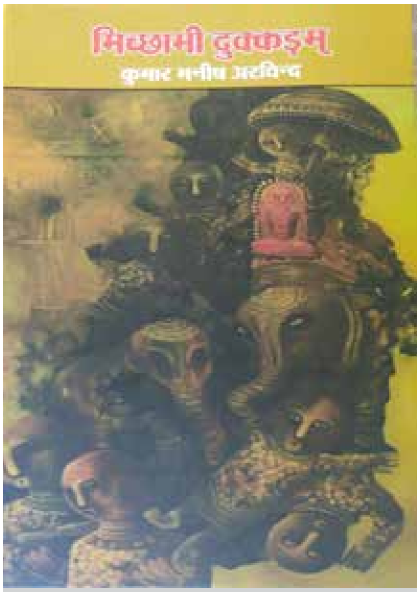

मिच्छामी दुक्कड़म

रचनाकार	:	कुमार मनीष अरविन्द
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 300
पृष्ठ	:	361
विधा	:	संस्मरण

ओना, कोनो पोथी पर त्वरित टिप्पणी देबासं परहेज करबाक चाही। ध्यान देबाक थिक जे कोनो लेखककें बर्खक बर्ख एकटा पोथी तैयार करबामे लगैत छैक। बर्खक बर्ख लेखक ओहि पात्र, ओहि कथ्य, ओहि चरित्र, ओहि मानसिकता, ओहि लेखकीय द्वंद्व आ परिवेशमे जीबैत रहैत अछि, ओझरायल रहैत अछि। ओहि ओझरौट आ लेखकक ओहि मानसिकताकें बिनु बुझने टिप्पणी करब थोड़ेक खतरनाक, थोड़ेक असंगत मानल जयबाक चाही। पाठकक अपन अनुभवक आ पाठकीयताक आंचमे पाकि गेला उत्तर ई थोड़ेक सहज आ समीचीन भ' सकैत अछि।

एहि पोथीक पाण्डुलिपि बहुत दिन धरि हमरा लग रहल। कोनो नव वस्तुक प्रति, कोनो नव सृजनक प्रति जे स्वाभाविक उत्सुकता होइत छैक, से हमरा एहि पाण्डुलिपि संग बनल रहल। तत्कालीन व्यस्ततासं हम जखन-जखन निचेन होइ, तखन-तखन एकरा पढ़ैत रही। एकर शीर्षकक प्रसंग हमरा दुनू गोटेमे खूबे गप होइत रहल। गप तं एतय धरि भेल छल, जे हम मनीषक मेदिनीनगर जाइ आ एक सप्ताह ओतय रहि एहि पोथीकें सुनी आ गुनी। मुदा से संभव नहि भ' सकल। एक पर एक शीर्षक हमरा सभक मोनमे उचरय, ओहि पर दूरभाषिक घमर्थन होइ आ फेर एक दिन ओ कहलनि जे एकर फाइनल शीर्षक भेल- 'मिच्छामी दुक्कड़म।' मैथिली लेल एहि नामक पोथी उटपटांग लगैत अछि। जावत एकरा विश्लेषित नहि कयल जाय, तावत मैथिल मानसक कोमल तंतुकें बड़ रोड़ाह लगतैक। मुदा, परिभाषित-विश्लेषित कयलाक बाद विश्वक प्रत्येक जीवकें, जे शांतिप्रिय आ विवेकशील हैत, तकरा ई शीर्षक कटाइन नहि लगतैक। कारण मनुक्खक प्रेम, शांति, दया, क्षमा आ सामाजिक सौहार्द ओ सद्भावनाक कामना करैत रहैत अछि।

केदार कानन मैथिलीक चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक छथि। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति : राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन : संकल्प, भारती मंडन (पत्रिका)।
संपर्क : किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल, बिहार, पिन-852131
मो. 9471062706, ईमेल : kedarkanan@gmail.com

छोट-छोट खंडमे अनेक बात दिमाग मे घुमैत अछि। हमर सभक भारतीय मन गणेश आ हाथीमे साम्य तकैत अछि। तें हाथीक प्रति भक्ति आ भय दुनू एक संग मनक आंगन मे नर्तन करैत रहैत अछि। ओना तं जंगलमे अनेक जीव-जन्तु अछि। सभक संग एहन भाव भरिसक नहि अबैत अछि। सिंह पर सवार भगवती, मोर पर कार्तिक, उल्लू पर लक्ष्मी, शेषनाग पर विष्णु, बसहा पर महादेव, मूस पर गणेश आदिक ध्यान सेहो अबैत अछि। मुदा हाथी आ गणेशक साम्य किछु आन प्रकारक लगैत रहैत अछि। आ से अप्पन सन। हमसभ कतहु यात्रा पर बहराइत छी तं कुलक गोसाउंनिक अतिरिक्त ककर स्मरण करैत छी। तहिना कोनो शुभ काज करैत छी तं सर्वप्रथम जाहि देवताक स्मरण करैत छी, से गणेश होइत छथि।

मनीषक एहि पोथीमे भक्ति आ भय दुनू देखार दैत अछि।

एहन एहन टुकड़ीमे अनेक बात दिमागमे अबैत अछि। जन, जंगल, जमीनक सघन चित्र-खंड एहि किताबमे पसरल अछि। यात्रा, किछु करबाक बेचैनी, नोकरी आ तकर सीमा आ खतरा, जीवनक भय, दुश्चिन्ता, आतंक आ तकरा बादक आत्मसंतोष एहि पोथी मे भेटैत अछि। से एहि पोथीक पंक्ति-पंक्तिमे अनेक मोनलग्गू वातावरण भेटत। एक एहन वातावरण, जे पढ़बाक अभ्यासी कें ओकर सपनाक संसारमे ल' जाइत अछि आ झारखंडक सुरम्य स्थलादिक विचरण सेहो करबैत अछि। झारखंडक जीवन आ जनजातीय संस्कृतिक विशद आ व्यापक वर्णन एहि पोथी मे उपलब्ध अछि। एकरा अतिरिक्त आदिवासी जीवनक सामूहिकता, ओकर आन्दोलनी प्रवृत्ति, ओकर तिक्ख तेवर आ विद्रोहक भाव सेहो देखार दैत अछि। एकर सभक सजीव चित्रण कुशलताक संग मनीष क' सकलाह अछि। स्थानीय बोली-वाणीक बहुत प्रयोग एहि पोथीकें जीवन्त आ विश्वसनीय बनबैत अछि। बीच-बीचमे किछु कविताक छटा अह्लादकारी थिक। हमरा लगैए जे एहन भिन्न आस्वादक पोथी मैथिलीमे तत्काल नहि अछि जा एकर सोझ कारण थिक जे मनीष वन विभागक अधिकारी छथि आ वन-पहाड़-झरना, आदिवासी, ओकर जीवन-शैली, ओकर संस्कृति हिनक जीवनक, अर्थात् लेखकीय जीवनक अंग बनल छनि।

हमरा सभक भीतर बहुत रास चीज अन्तश्चेतनामे, मोनक सूचीभेद्य अन्हारमे, कोनो गुफा-गह्वर मे नुकायल पड़ल रहैत अछि। ई बहराइत अछि परिस्थितिवश। कोनो विशेष घटना, कोनो विशेष क्षण, कोनो विशेष धारणाक घात-प्रतिघातक कारणे भीतरसं बहराइत अछि ओ तत्व। कखनो क्रोध, कखनो घृणा, कखनो चिन्ता, कखनो पश्चाताप, कखनो प्रसन्नता, कखनो हंसी, कखनो दया, कखनो करुणा आ एहने अनेकानेक तत्व, जकर तखन आवश्यकता होइत छैक। तखन मनुक्खक रूप-छवि बदलि जाइत छैक। सभ किछु बदलि जाइत छैक। ई अद्भुत सृष्टि थिक, मनुक्खक अंतरक सृष्टि आ भरिसक मनुक्खक अतिरिक्त कोनो जीवमे एहन स्फुरण, एहन स्राव, एहन अभिव्यक्ति नहि होइत छैक, जकरा सुनल, गूनल, बूझल जाइत हो। से एहि पोथी कें जखन संपूर्णतामे अहां पढ़ि लेब तं अहांकें लागत जे एहि पोथीक सम्पूर्णताक संग एकटा मेंही, बड्ड मेंही करुणा, आतंक, भय, दया आ क्षमाक सूत अहांकें बान्हि रहल अछि। धीरे-धीरे अहां एहि सूतक कसावमे आबि रहल छी, तेहन सन प्रतीत होइत अछि।

एहि पोथीमे ओना तं पात्रक भरमार अछि, किछु तं कार्यालयक अधिकारी आ कर्मी, पुलिसकर्मी, हित-परिचित, माफियाक सरगना, किछु पारिवारिक सदस्य, 'सम्पर्क'क सहयात्री लेखक लोकनि, आमजन मुदा एहि सभक अतिरिक्त मुखर्जी दादा, जैन साहेब, मिस कैथी, मित्तल, तूफानी भगत कें नहि बिसरल जा सकैत अछि। आ तप्पा पहाड़कें तं किन्नहु नहि...।

जे क्यो मनीषक 'शिखर पर जिजीविषा' पढ़ने छथि, हुनकालोकनि कें कतोक ठाम ई लगतनि जे ओ 'मिच्छामी दुक्कड़म' मे सेहो ओहि पोथीकें पढ़ि रहल छथि। मुदा ई वर्तमानक घटनाकें अतीतक घटनासं जोड़बाक क्रममे एना सायास कयल गेलैक अछि। ई लेखकीय विवशता जे रहल हो मुदा एकरा लेल दोसरो विकल्प पर सोचल जयबाक आवश्यकता भ' सकैत छल। मुदा एहि क्रममे श्रृंखला आ सम्बद्धता बनल रहैत अछि। कतहु टूटल सन, किछु उखड़ल सन अथवा असंबद्ध नहि लगैत अछि। ई लेखकीय कौशलक चमत्कार सन लगैत अछि। जे क्यो पाठक मात्र एही पोथी कें पढ़ताह, तकरा एहन कोनो बोध नहि हेतनि। मुदा जे पाठक हुनक पहिलो पोथी पढ़ने छथि, हुनका एहि पोथीमे पुनरुक्ति वा पुनरावृत्तिक दोष देखार पड़तनि।

एहि पोथीमे ओना तं पात्रक भरमार अछि, किछु तं कार्यालयक अधिकारी आ कर्मी, पुलिसकर्मी, हित-परिचित, माफियाक सरगना, किछु पारिवारिक सदस्य, 'सम्पर्क'क सहयात्री लेखक लोकनि, आमजन मुदा एहि सभक अतिरिक्त मुखर्जी दादा, जैन साहेब, मिस कैथी, मित्तल, तूफानी भगत कें नहि बिसरल जा सकैत अछि। आ तप्पा पहाड़कें तं किन्नहु नहि...। मनीष अपन एहि पोथी मे भाषाक स्तर पर सहज छथि। हुनक भाषाक प्रवाह प्रांजल छनि। हुनका जे कहबाक छनि से जो सहजतासं कहि जाइत छथि। नीक लगैत अछि जे मनीषमे जिजीविषा बहुत छनि। धैर्य बहुत छनि। निष्ठा आ समर्पण सेहो।

एहि पोथीक अंतिम अंश संवेदनशील आ मार्मिक अछि। कतहु पाठकक मोन कें बेचैन करयबला... एहन त्रासद आ मर्मान्तक पीड़ाकें शब्दे टा उघि सकैत अछि, तकर दृष्टान्त एहि पोथी मे व्यक्त भेल अछि। एक तं ओहि तप्पा पहाड़ पर

चबूतरा, मुइल वा मारल गेल हाथीक स्मृति मे लगैत गणेश मेला... एम्हर लेखकक भीतरमे वैकल्यताक त्रासद अनुभव, क्षमा लेल झुकल माथ, बन्न भेल आंखि आ हृदय मे हाहाकारक रौरव... मिच्छामी दुक्कड़म... आ अंततः मुन्नीक चलि जायब, जीवनक सांसकें तोड़ि मुक्त भ' जायब, जेना पाठकक भीतर किछु होंड़' लगैत अछि, किछु तेहने सन...।

एहि पोथीमे वन विभागक छापामारी, भूमाफिया आ वनमाफिया सभक विरुद्ध सघन अभियानक अनेक दृश्य अछि। लेखक स्वयं एहिमे सम्मिलित छथि आ अनेक छापेमारी आ अभियानक हिस्सा बनल छथि। एहन अभियानमे जान जयबाक खतरा सेहो बनल रहैत छैक। मुदा लेखककें साहस बनल रहैत छनि आ एहन तरहक साहसिक अभियान सभमे शामिल भेल मनीषक लेखक आ वन विभागक अधिकारीक कर्तव्यपरायणता सेहो नीक लगैत अछि। एहि पोथीक पाठसं ज्ञात होइत अछि जे प्रकृतिकें नष्ट करबाक आ लूटपाट मचयबाक, आतंक पसारबामे कतेक तरहक लोक लागल रहैत अछि। जीवन-जगतक शांति भंग करबाक, प्रकृतिकें ओध-बाध उठयबाक अभियानमे लागल जनसंख्या बहुत बेसी अछि, जकरा पाइ कमयबाक छैक आ पाइ कमयबा लेल ओ कोनो सीमा धरि जा सकैत अछि। लेखक एहि प्रकारक अनेक चुनौती स्वीकार करैत छथि आ लगभग सभ बाधा कें पार करैत छथि।

एहि पोथीमे ओ अनेक डायरीक अंश सभक उद्धरण दैत छथि, जाहिमे अनेक एहन घटना, एहन अनेक नव-नव आख्यानक वर्णन अछि, जे रोमांचित करैत अछि। नक्सली द्वारा मुठभेड़ मे घायल भेल सिपाहीकें बचयबाक, रामसेलीक ग्रामीण द्वारा विरोधमे ठाढ़ होयबाक आ तकरा संग-संग विभागक वादाखिलाफी सभक चर्चा सेहो भेटैत अछि जे एक संग अनेक प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। मनीष बहुत मनोयोग सं एहि पोथीकें एक सूत्र मे बान्हबाक प्रयास कयलनि अछि जे कतहुसं पाठक कें बोर नहि करैत अछि अपितु अपन भाषा आ शब्दजालमे ओझरौने रहैत अछि। ■

संपादकीय नीति

- 'तीरभुक्ति' प्रत्येक तेसर मासक अंतिम सप्ताहमे प्रकाशित होइछ।
- तीरभुक्तिमे मुख्यतः शोध आलेख प्रकाशित प्रकाशित होइत अछि। संगहि किछु विशिष्ट कॉलम सेहो प्रकाशित होइत अछि।
- तीरभुक्ति केर प्रत्येक अंक एक विशेष थीम पर केंद्रित होइत अछि। एकर सूचना पत्रिकामे आ समाजिक माध्यम सबमे देल जाइछ। लेखकगण सं निवेदन जे थीमहि केर संगत विषय पर शोध आलेख पठाबी। थीम सं भिन्न आलेख यथायोग्य समय अयला पर प्रकाशित होयत।
- तीरभुक्ति Blind Peer Review पद्धति केर शोध पत्रिका अछि। सम्पादक मण्डल आ समीक्षक केर सहमति केर बादहि आलेख प्रकाशित कयल जाइछ।
- प्रत्येक शोध आलेखमे सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख आवश्यक अछि। एहि लेल APA 6जी Edition सन्दर्भ शैलीक प्रयोग कयल जाए।
- शोध आलेखक आरंभमे शोध सारांश (अधिकतम 100 शब्द) आ अंतमे शोध निष्कर्ष लिखब अनिवार्य अछि। सम्पूर्ण आलेख 2000-2500 शब्दक सीमामे हेबाक चाही।
- **हम किएक लिखैत छी** कॉलम आत्माभिव्यक्ति केर कॉलम अछि। एहि कॉलममे युवा रचनाकार लोकनिकें प्राथमिकता देल जाइछ।
- तीरभुक्ति पूर्णतः मैथिली पत्रिका अछि। आन भाषामे लिखल आलेख एतय स्वीकार नहि होइत अछि। लेखक स्वयं एकर मैथिली अनुवाद करा पठा सकैत छथि।
- प्रत्येक आलेखक संग लेखकक उद्घोषणा अनिवार्य अछि, जाहिमे लेख मौलिक आ अप्रकाशित होयबाक सूचना होय। संगहि आलेख कतहु आओर विचाराधीन नहि होय।
- फेसबुक वा सोशल मीडियामे कतहु आन ठाम प्रकाशित आलेख सेहो स्वीकार नहि होयत। लेखकलोकनि सं आग्रह जे एहन आलेख पठाबी।
- कोनो तरहक तथ्यात्मक त्रुटिक लेल लेखक स्वयं उत्तरदायी हेताह। उद्घोषणाक स्वरूप सम्पादकीय टीम स प्राप्त कयल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति त्रैमासिक पत्रिका अछि। ताहिसं आलेख प्राप्तिक बाद प्रकाशन धरि 3 सं 6 मासक समय लागि सकैत अछि। एहि अवधिमे आलेख अन्यत्र कतहु प्रकाशनार्थध विचारार्थ नहि पठाओल जाए। यदि एहन बेगरता होय त सम्पादक कें सूचित क आलेख वापिस लेल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति मे प्रकाशनार्थ सभटा रचना teerbhuktimaithili @gmail.com पर पठाओल जाए। रचना कृतिदेव 010 अथवा वाकमैन चाणक्या फॉन्ट में 14 फॉन्ट साइज़ में टाइप हेबाक चाही। आलेख एमएस वर्ड आ पीडीएफ दुनु रूपमे पठाओल जाए।
- प्रकाशित भेलाक बाद पत्रिका लेखक लोकनि आ नियमित सदस्य लोकनिकें डाक सं पठाओल जाइछ। सदस्यता विवरण सभ अंक मे प्रकाशित होइत अछि।
- जे नियमित सदस्य नहि छथि, ओ पत्रिका प्राप्ति लेल तीरभुक्ति कार्यालयमे अथवा पत्रिकामे प्रकाशित प्राप्ति स्थल सब पर सम्पर्क क सकैत छथि। ■

ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 3

मोन मे हौरैत मिथिला विभूति लोकनिक आख्यान!

✍ लक्ष्मण झा 'सागर'

हम आ भीमबाबूक पोथीक समीक्षा। एतेक भरिगर काज हमरा सं कोना पार लागत? खैर, पोथी पर बाद मे, पहिने किछु भीमबाबूक मादे भ' जाय। अपन कोनो पूर्व आलेख मे हम भीमबाबू कें मैथिलीक धीरू भाइ अंबानीक संज्ञा देने रहियनि। से कोनो हम हुनकर उपकार नहि केने छियनि। ई यथार्थ थीक। धीरू भाइ पहिने अरब देश मे कोनो तेलक रिफाइनरी मे मजदूरी करैत छलाह। ओत' काज करैत आंखि खुजलनि। स्वदेश आबि के मुम्बइ मे पैकारी करय लगलाह। पूंजी जमा केलनि आ तकर बाद पाछू उनटि कें नहि देखलनि। भीमबाबू रांची मे पेट्रोल पंप पर काज धेलनि। पटना आबि 'मिथिला मिहिर' मे योगदान देलनि। पटने मे डॉ. भीमनाथ झा बनलाह। दरभंगा मे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे प्रवेश केलनि आ तकरा बाद ओ मैथिलीक सब उमेरक साहित्यकारक 'भीमभाइ' बनि गेलाह। ई एकटा दृष्टांत मात्र थीक जे एकटा निम्नमध्यवर्गीय परिवारक युवा अपन सरल-सहज स्वभाव, धीर-गंभीर मुद्रा आ तीक्ष्ण बुद्धिक बल पर राग सं मैथिली साहित्यक शीर्ष व्यक्ति बनि गेलाह। आन गोटे हुनका भले ही 'भीम भाइ' कहैत छनि मुदा हमरा लेल ओ 'भीम बाबू' छथि किएक तं ओ बड़

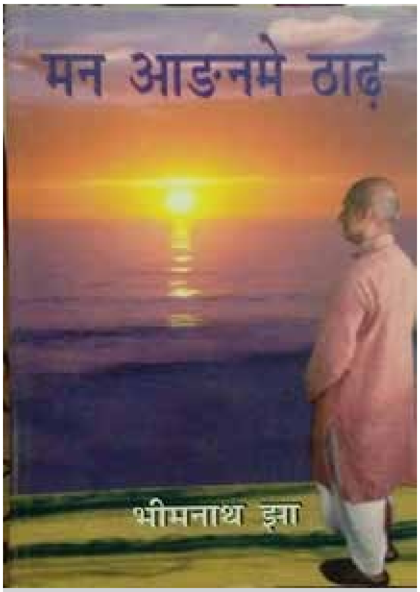

मन आङ्गन मे ठाढ़

रचनाकार	:	डॉ. भीमनाथ झा
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2016 (पुनर्मुद्रण)
मूल्य	:	₹ 500
पृष्ठ	:	320
विधा	:	संस्मरण

वरिष्ठ छथि से मात्र उमेरे टा मे नहि, विद्वता मे सेहो। विभूति आनंद हुनका पर एकटा पोथी (भीम भाइ सं भीम बाबू धरि) निकालबाक घोषणा केने रहथि मुदा तकर 'अपडेट' हमरा नहि बुझल अछि। हमरा जनैत भीमबाबू एकटा सिद्धहस्त निबंधकार छथि। ओना हुनक कविता लेखन सेहो बेहद अछि (पढ़ू हुनक 'कविताधन')। ओ डायरी सेहो लिखने छथि। एना कहि सकैत छी जे सुकान्त सोम जहन हिन्दुस्तानक संपादक रहथि मुजफ्फरपुर मे तं हुनका सं डायरी लिखबौलनि (टावर चौक सं) जे मैथिली मे स्तंभक रूप मे 'हिन्दुस्तान' मे छपल छल आ भीमबाबू समस्त मिथिलांचल मे जानल गेलाह एकटा यशस्वी साहित्यकारक रूप मे। 'मिथिला मिहिर' मे हुनक लिखल संपादकीय सेहो पोथी रूप मे आबि गेल अछि, जे एकटा मानक संपादकीय रूप मे चर्चित भेल। नवतुरिया संपादक लोकनि कें ओ संग्रह अवश्य पढ़बाक चाही। पोथी सभक जे ओ भूमिका लिखने छथि से पोथीक गरिमा बढ़ा देने अछि। हम हुनकर लिखल 'कथा' किंवा 'नाटक' नहि पढ़ने छी आ हमरा जनैत से ओ लिखनो नहि छथि। ओ मैथिली साहित्यक एकटा 'प्रथम पुरुष' छथि, जे मैथिलीक प्रकाशित सभ पोथी, पत्रिका आ स्मारिका पढ़ैत आबि रहल छथि। ततबे नहि ओ प्रति वर्ष प्रकाशित रचना आ रचनाकारक सूची जारी करैत छथि जे पढ़बा मे मनलग्गू होइत अछि।

जेना कि कहलहुं जे ओ मूलत: निबंधकार छथि आ 'विविधा' नामक

लेखक वरिष्ठ मैथिल अभियानी छथि। मिथिला-मैथिली अभियानक अगुआ बाबू साहेब चौधरीक अनन्य संगी रहलाह। हुनक संगे 1964 सं 1983 धरि काज करैत रहलाह। कोलकाता आ गुवाहाटी दुनू ठाम हिनक सक्रियता चर्चित अछि। मैथिलीमे हिनक अनेकानेक कथा, कविता, निबंध आ रिपोर्ताज प्रमुख पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित छनि। अ.भा.मि.सं. द्वारा बाबू साहेब चौधरी सम्मान 2018 सं सम्मानित।

संपर्क *: 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट, 94 एवेन्यू साउथ, संतोषपुर, कोलकाता-700075*

मो. *9903879117*

निबंधेक पोथी पर 1992 ई. मे हुनका साहित्य अकादमीक मूल पुरस्कार भेटल छनि। हुनक सम्पूर्ण कृतिक आकलन क' हुनका 'प्रबोध साहित्य सम्मान' सेहो भेटल छनि। एहि बात कें एना कही जे भीमबाबू कोनो पुरस्कारक भुखल नहि छथि अपितु पुरस्कार आ सम्मान हुनकर भुखल अछि। साहित्यकार तं बहुत गोटे छी। ओहो छथि मुदा, भिन्न बात ई थीक जे ओ एकटा भद्रलोक छथि। दस उपकारी छथि। विवादास्पद नहि छथि। कृतज्ञ एहेन जे विवेच्य पोथी 'मन आङन मे ठाढ़'क प्रकाशनक सबटा दारोमदार केदार कानन पर छोड़ि देने रहथि। 'मन आङन मे ठाढ़' एकटा संस्मरणात्मक कृति थीक भीमबाबूक, जकर पहिल प्रकाशन 2000 ई. मे भेल छल। उक्त पोथीक दोसर संस्करण 2016 ई. मे आयल, जाहि मे किछु नव संस्मरण सभ सेहो शामिल कयल गेल अछि। 320 पृष्ठक ई किताब जतबे मोटगर ततबे मैथिली साहित्यक लेल एकटा अमूल्य दस्तावेज अछि, धरोहर अछि। अपन शुभाशंसा मे मायाबाबू (मायानन्द मिश्र) हमरा मोनक बात लिखने छथि- ''भीमनाथ जीक हाथ मे कलम नहि, 'पारस' होइत अछि-छूताह कि सोना! भीमबाबूक संबंध मे यैह कहि कें शेष करब जे जं ओ मैथिली सं इतर कोनो आन भाषाक साहित्यकार रहितथि तं अपन प्रतिभा आ कृतिक बल पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' आ 'पद्मश्री' सं अलंकृत भेल रहितथि।

'मिथिला मिहिर' मे गेने भीमबाबू कें आर जे फायदा भेल होनि हमरा जनैत हुनका लेल ई एकटा महत्वपूर्ण उपलब्धि भेलनि जे मैथिलीक वरेण्य साहित्यकार सभसं हुनक संपर्क बढ़लनि। हुनका लोकनि सं संबद्ध प्रगाढ़ होइत गेलनि। हुनका लोकनि सं भेल पत्राचार (जे एहि पोथी मे छपल अछि) मैथिली साहित्यक तत्कालीन गतिविधिक एकटा साक्ष्य बनि पड़ल अछि। एहि पोथी मे कविवर सीताराम झा सं आरंभ होइत सत्यानंद पाठक धरि 35 गोट मिथिलाक विभूति लोकनिक व्यक्तित्व आ कृतित्वक सांगोपांग वर्जन भेल अछि, जे मैथिलीक वर्तमान आ परवर्तीकालीन साहित्यकार, अध्यापक, शोधार्थी छात्र आ मिथिलाक समाज लेल पठनीय, संग्रहणीय आ अनुकरणीय अछि। मैथिली मे एहि तरहक पोथीक प्रणयन एकमेव भीमबाबू टा क' सकैत छलाह आ से ओ क' कें मैथिलीक लेल एकटा बड़का उपकार केलनि अछि।

''अछि सलाइ मे आगि बड़त कि बिना रगरने

पायब निज अधिकार कतहु कि बिना झगड़ने।''

एहि पोथी मे कविवर सीताराम झा सं आरंभ होइत सत्यानंद पाठक धरि 35 गोट मिथिलाक विभूति लोकनिक व्यक्तित्व आ कृतित्वक सांगोपांग वर्जन भेल अछि, जे मैथिलीक वर्तमान आ परवर्तीकालीन साहित्यकार, अध्यापक, शोधार्थी छात्र आ मिथिलाक समाज लेल पठनीय, संग्रहणीय आ अनुकरणीय अछि।

उपरोक्त पांतीक प्रणेता कविवर सीताराम झाक दर्शन कोना आ कोन रूप मे लेखक के बनारस मे भेल छनि आ हुनका सं कतेक प्रभावित भेलाह, तकर विस्तृत वर्णन मेल अछि (पृ. 16) आ कविवरक देहांत भेलाक बाद जे स्मृति-चित्र (पृ. 33) लेखक देखौलनि अछि से अत्यंत मर्मांतक आ कयोट सं भरल अछि। पढितहिं बनय।

मिथिलाक महापुरुष जे सभ गोटे मैथिलीक दधीचि बनल छथि, ताहि मे अप्रतिम नाम अछि बाबू भोलालाल दासक। लेखक हिनका लेल अपन संस्मरण दू टा शीर्षक मे बहुत दृढ़ता सं रखने छथि-शक्ति साधना साहसक मूर्ति (पृ. 44) आ भोलाबाबूक स्मृतिरक्षार्थ (पृ. 46) जे क्रमशः मिथिला मिहिर, पटना, 5-6-1966 आ कर्णगोष्ठी, धनबादक स्मारिका मे 1995 ई. मे छपल अछि।

मैथिली आन्दोलनक अंतिम पीढ़ी शशिनाथ चौधरीक सम्पूर्ण व्याख्या लेखक तेना केने छथि जे आजुक आन्दोलनी लोकनिक लेल पठनीय आ अनुकरणीय अछि। ईहो रचना मिथिला मिहिरक 10-8-1980 क अंक मे प्रकाशित भेल अछि।

मिथिलाक ललना, युवक आ सर्वहारा वर्गक कंठ मे जाहि महाकवि मधुपजीक गीत बसल अछि, ताहि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' जी कें लेखक कविचूड़ामणि सं संबोधित कयलनि अछि आ हुनक अस्सी जन्मतिथि पर एकटा सारस्वत आलेख लिखलनि अछि जे 'हालचाल', पटनाक अक्टूबर 1986 बला अंक मे छपल अछि। मैथिली आन्दोलनी कमलेश झाक उद्योग सं 'अमर कीर्ति कवि तोर' जे कलकत्ता सं प्रकाशित भेल छल, ताहि ग्रंथक विमोचन समारोह मे (21-12-1988) पढ़ल गेल 'मधुप-स्मृति' आलेख सेहो लेखक एहि पोथी मे देने छथि। (पृ. 56)

मैथिली संघर्ष महाकाव्यक नामक, अपन भाग्यरेख स्वयं लिखनिहार किरणजी आ के बताह कवि-? जे क्रमशः पृ. 63, 66 आ 60 मे वर्णित भेल अछि, काञ्चीनाथ झा 'किरण' जीक सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्वक दस्तावेज अछि। एहि आलेख कें पढ़ला उपरान्त लेखकक दृष्टिसम्पन्नता जानल जा सकैत अछि।

कोनो जमाना मे मिथिलाक ड्योढ़ी सभ नामी छल। ताही ड्योढ़ी मे छल मधेपुरक ड्योढ़ी। ड्योढ़ी सभ मे ठाठ बाटक जिनगी छल मुदा लक्ष्मीपति सिंह कोना ओ जिनगी कें त्यागि पत्रकारिता मे लागि गेलाह, तकर उत्तम वर्णन लेखक केलनि अछि-बाबूसाहेब आ बाबू लक्ष्मीपति सिंह नामक दुनू आलेख मे जे क्रमशः मिथिला मिहिर (18-3-79) आ आरंभ-(1983) मे प्रकाशित भेल छल।

हास्य रसक अवतार हरिमोहन झा कें के नहि जनैत अछि। लेखक हुनका ककरो सं बेसी लग सं जनैत छथि। तें ने 'जीवन-यात्रा'क नामक पथिक (पृ. 93) आ हरिमोहन बाबूक अंतिम क्षणक साक्ष्य (पृ. 100) दुनूं आलेख मे हुनक सम्पूर्ण जीवन-वृतांत दरसौलनि अछि जे क्रमश: फरवरी 1986 आ रचना, दरभंगा (1994) मे छपल अछि। एकर अतिरिक्त हरिमोहन बाबूक हिन्दीक प्रति जे उपेक्षा भाव छलनि से हुनक एक-दू कविता मे आयल अछि। (पृ. 102, 106)

कुलानंद नंदन पर लेखकक आलेख अछि जाहि सं हुनका जानल जाए सकैत अछि। ई आलेख मिथिला मिहिरक (13.

मैथिली साहित्यक नव कविताक पुरोधा बाबा माने वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सेहो लेखकक मन आङन मे ठाढ़े टा नहि छथिन लेखक हुनका उपराग दैत छथिन, अनुरोध करैत छथिन, हुनक हीरक जयंतीक अवसर पर आलेख लिखैत छथिन आ हुनक देहावसान पर स्मृति शेष लिखैत छथिन।

6.1980) बला अंक मे छपल अछि। (पृ. 106)

एहि पोथी मे प्रो. तंत्रनाथ झा पर लिखल गेल अछि जे कोसी-कुसुम, सहरसा, (मई-जून 1984) अंक मे छपल अछि। (पृ. 111)

मैथिली साहित्यक नव कविताक पुरोधा बाबा माने वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सेहो लेखकक मन आङन मे ठाढ़े टा नहि छथिन लेखक हुनका उपराग दैत छथिन, अनुरोध करैत छथिन, हुनक हीरक जयंतीक अवसर पर आलेख लिखैत छथिन आ हुनक देहावसान पर स्मृति शेष लिखैत छथिन। (पृ. 114 सं 125) ई सबटा आलेख चिनगी, दरभंगा (सितंबर 1986), कर्णामृत (अप्रैल-जून 95) आ भारती मंडन (1999) मे सेहो छपल अछि।

"बेसि कण्ठ पर क्यो बरजोटी
स्वर नहि हाबि सकै अछि
मूंग दरड़ि सदिखन छाती पर
मुंह नहि जाबि सकै अछि
लेब अपन अधिकार आब हम
अपन महालक पानी
माङि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ-जन-वाणी" (पृ. 138)

उपरोक्त कविता-खंडक रचयिता रामचंद्र प्रसाद सिंह आ मैथिली मे आरसी प्रसाद सिंहक नाम सं प्रख्यात भेलाह तिनका प्रसंगे लेखक दू टा आलेख- आरसी बाबू/आइ आरसी बाबू नहि छथि, मुदा दुनू आलेख ततेक भावपूर्ण ढंगे लिखलनि अछि जे पढ़िते बनय।

एवम् क्रमे एहि पोथी (पोथा कहब बेसी उपयुक्त हैत) मे भीमबाबू, सुभद्र झा (स्मृति मे सुभद्र बाबू), जयकान्त मिश्र (स्मृतिक किछु झलकी), योगानन्द झा (विहुंसैत आ नोसि लैत), बाबू साहेब चौधरी (बाबू साहेब चौधरी, जिज्ञासा, स्मरण एक अविस्मरणीय आन्दोलनीक), राघवाचार्य शास्त्री (वीर कवि), मणिपद्म (कौसरक कमल, मणिपद्मजी, वाणीक उपासक), सुधांशु 'शेखर' चौधरी (सम्पादकजी, हमर 'मिहिर' जीवन), विन्देश्वर (कवि विन्देश्वर), डॉ. बी. झा (डॉ. बी. झा), शैलेन्द्र मोहन झा (आब के भेटत?), जयधारी सिंह (प्रभाकर साहेब, सरकार), राजकमल चौधरी (राजकमल आ नवकविताक समीक्षा-समस्या), ललित (क्षणभंगुरता सं अमरत्व दिस, ललित, चौदह अप्रैल चल गेल, मुदा...), मायानन्द मिश्र (आयो ओ स्वर गूंजैत रहत), रमानन्द रेणु (रेणुजीक बात मानैत), धूमकेतु (भोलेबाबू), राजमोहन झा (ओ पतक्खा आइ उधिया गेल, हमरा लोकनिक भाइ साहेब), अणिमा सिंह (मैथिलीक महिमा-गरिमा अणिमाजी), राजेश्वर झा (एक छड़ी बिजलीक), रमाकान्त मिश्र (प्रो. रमाकान्त मिश्र), प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासजी), महाप्रकाश (अलबेला छलाह महाप्रकाश), फाजलुर रहमान हाशमी (हाशमी के स्मरण करैत), सत्यानंद पाठक (गाम करै हौ सोर रे पंछी) धरि पर एकदम ईमानदारी सं ललितगर भाषा मे अपन भेंटक, पत्राचारक आ गपसपक बात सभ बहुत बेबाकी सं लिखलनि अछि। भीमबाबूक गद्य-शैली रोचक, लिखबाक छटा बेजोड़, कहबाक ढंग मनोरम आ प्रस्तुतीकरण लाजवाब होइत अछि, तें जं एहि पोथी कें पढ़ब

भीमबाबूक गद्य-शैली रोचक, लिखबाक छटा बेजोड़, कहबाक ढंग मनोरम आ प्रस्तुतीकरण लाजवाब होइत अछि, तें जं एहि पोथी कें पढ़ब आरंभ करब तं बिनु शेष केने रहल नहि जाएत। हमरा संगे यैह बात भेल अछि। एतावता 'मन आङन मे ठाढ़' भीमबाबूक सर्वोत्तम कृति अछि। कोनो सभ्य समाज अपन विभूतिक गाथा कें जनबाक लेल व्याकुल रहैत अछि।

आरंभ करब तं बिनु शेष केने रहल नहि जाएत। हमरा संगे यैह बात भेल अछि।

एतावता 'मन आङन मे ठाढ़' भीमबाबूक सर्वोत्तम कृति अछि। कोनो सभ्य समाज अपन विभूतिक गाथा कें जनबाक लेल व्याकुल रहैत अछि। मैथिल समाज कें भीमबाबू से 'वस्तु' उपलब्ध कराय कें सत्ते बड़ पैघ काज केलनि अछि। हमरा विचारें एहि पोथीकें ऑनलाईन मंच सभ (गूगल, किंडल आदि) पर उपलब्ध कराओल जाय। ई भेलासं हमर भावी संतति सभ लेल बड़ उपयोगी होइत। ■

जनमनक नायक : परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ

✍ **डॉ. महेन्द्र**

जिनकर रचना गाबि गाबि कें
जग मजधारसं पार करी।
एखनहुं राखल कुटी सुशोभित
खड़म खाट ओ हाथ छड़ी।।
जन कल्याण समाजक हित मे,
जिनक साधना योग सफल।
एहम महात्मन लक्ष्मीनाथ के,
सुनहुचरित शुभ अछि निर्मल।।

ई काव्यखण्ड थिक अरविन्द 'नीरज' विरचित शांत रसात्मक महाकाव्य परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ महाकाव्यक जकर पहिल संस्करण 2014 ई. मे प्रकाशित भेल। आलोच्य महाकाव्य 15 सर्ग मे विभाजित बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईंक समग्र जीवनक घटना-उपघटनाकें काव्यात्मक साक्षी अछि। जे महाकाव्यक पहिल शर्त वा लक्षणक पूर्ति करैत अछि।

ई तं रूढ़ अछि जे संसारक सभ साहित्यक प्रारंभिक रूप अछि 'कविता'। मैथिली साहित्यमे किछु चिन्तक एहिसं सहमत नहि अछि। लोकनि वर्णरत्नाकरहिसं एहि साहित्यक आरंभ मानैत छथि जे गद्य रचना थिक। मुदा इतिहासकार काल विभाजनक क्रममे वर्णरत्नाकर सं पूर्व बौद्ध गान ओ दोहो, चर्चाचर्य विनिश्चय, डाकक कथन आदि कतेक रचना कंठमे सुरक्षित अरिभखित प्रमाणक रूपमे उपलब्ध अछिजे पूर्णतः कविता थिक। एत' एहि तथ्यकें उजागर करबाक हमर उद्देश्य नहि अछि। हमरा तं एत' मैथिली काव्य परम्परा आ महाकाव्य पर विचार करबाक अछि।

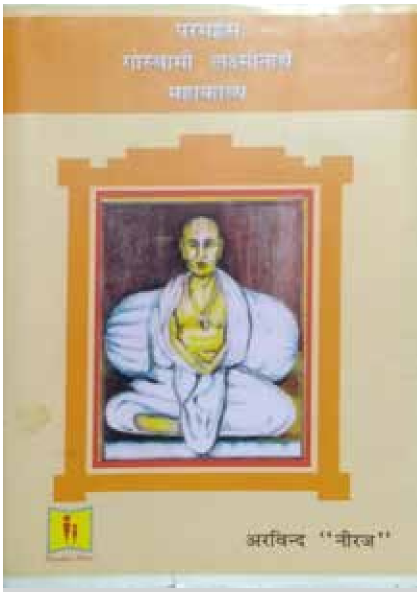

परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ महाकाव्य

रचनाकार	:	अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'
प्रकाशक	:	रीडर प्रेस, नई दिल्ली
वर्ष	:	2014
मूल्य	:	₹ 495
पृष्ठ	:	191
विधा	:	महाकाव्य

इहो सत्य अछि जे कविताकें प्रबल वेगसं प्रवाहित कयनिहार विद्यापतियें भेलाह। मुदा मन बोधसं पूर्व एहन कोनो साक्ष्य नहि अछि जे (18म शती) मुक्तकक अतिरिक्त खण्डकाव्य अथवा महाकाव्यक रचना नहि भेल हो। तें मनबोध हिक कृष्णजन्मकें कतिपय इतिहासकार लोकनि मैथिलीक प्रथम प्रबंध काव्य घोषित कयलनि। यैह कृष्णजन्म थिक जकर रचनाक पश्चात प्रबंधकाव्यक रचनाक प्रेरणा कवि लोकनिकें भेटलनि। कवीश्वर चन्दाझाक मिथिलाभाषा रामायण मैथिली महाकाव्यक मुकुट भेल आ तकर वाद लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण', मुंशी रघुनंदनदासक 'सुभद्राहरण' महाकाव्य रचल गेल।

महाकाव्यक रचना महाकाव्यक हेतु निर्धारित लक्षणक अनुरूपे हेबाक कतोक प्रमाण अछि। प्राच्य आ पाश्चात्य आचार्य लोकनिक द्वारा ई लक्षण निर्धारित कैल गेल अछि जे एखनहुं धरि मान्य अछि। भारतीय साहित्य शास्त्र मे महाकाव्यक लक्षणक विस्तारसं चर्चा भेल अछि जे सर्वप्रथम अग्निपुराण मे संप्राप्त होइत। एहिमे महाकाव्यक मादे जे लक्षण कहल गेल अछि से थिक : सर्ग विभाजन, मंगलाचरण (संस्कृत हो तं नीक अन्यथा आनो भाषा मुदा ओकर स्वरूपमे परिवर्तन नहि हो), एकर इतिवृति इतिहासक कथासं उद्भूत हो अथवा सभ्य समाज मे प्रचलित हो, मंत्रणा, दूत प्रेषण, युद्ध आदिल विस्तार नहि हो, शम्बरी, अतिजगती, अतिशकंबरी, मिष्ठुप, प्रविपताग्र, वक्त्रादि, आदि सुंदर-सुंदर छन्द समन्वित हो आ सर्गान्तमे छन्द परिवर्तन तथा सर्ग अति संक्षिप्त नहि हो। महाकाव्य मे एहन

डॉ. महेंद्र भूपेंद्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालयक सहरसा स्थित पी जी सेंटर केर मैथिली विभागक विभागाध्यक्ष पद सं सेवानिवृत्त भेल छथि। प्रकाशन : शैलेन्द्र मोहन झा, राजेश्वर झा (मोनोग्राफ), साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली। संपादन ओ सह-संपादन : राजकमल जयंती प्रसंग (निबंध संकलन), संकल्प, मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी (कविता संग्रह), सह-रसा (मैथिलीक हस्तलिखित फोल्डर पत्र)।

संपर्क : *मिशन कम्पाउंड, पूरब बाजार सहरसा-852201,* ***मो.*** *9431657543,* ***ईमेल :*** *drmahendra2k@gmail.com*

पद्धतिक प्रयोग होमक चाही जाहि कारणें सृज्जनक अनादर नहि हो। प्रकृति चित्रण अत्यंत साकांक्षतासं हो। एकर कथानक समस्त वृत्ति, समस्तरीति ओ रसूस युक्त हिबाक विषय अछि। एहि सभ लक्षणक अनुरूप जे काव्य लिखला जाइछ से गद्यकाव्य कहबैत अछि। ओना कमोबेस प्राच्य आ पाश्चात्य साहित्यक आचार्य लोकनि एहि लक्षणक अनुरूपे अपन विचार राखि महाकाव्यक लक्षण के निर्धारित कयने छथि। एहिमे दण्डी, रूद्रेश, हेमचन्द्र, विश्वनाथ, भोजदेव, आदि प्रमुख छथि। ओना एत ई कहब अत्यंत प्रासंगिक हैत जे विश्वनाथ झा द्वारा कहल गेल महाकाव्यक परिभाषा सभ आचार्य लोकनिसं स्पष्ट ओ पारदर्शी अछि। आचार्य विश्वनाथ अग्निपुराण ओ दण्डक परिभाषा कें विशेष रूप सं वैज्ञानिक मानि अपन मत स्थिर कयलनि जे एखनहुं लोकप्रिय अछि। मैथिलीक एहि अनुशासनक अन्तर्गत अधिकांश महाकाव्य अबैत अछि जकर संवर्द्धन मध्यावधि होइत अछि।

संवेदना तं आधुनिक परिवेश मे लिखला गेला शास्त्र-पुराण आ समाज सं ग्रहण कैल अनेकानेक नायक चरितक भेल जाहिये युगक प्रासंगिकताक संग-संग आधुनिक योगबोध कें मानक रूप मे स्वीकारि महाकाव्यक रचना कयलनि अछि। एहिमे दीनानाथ पाठक बन्धुक चाणक्य, मार्कण्डेय प्रवासी विरचित आख्यायिनी, लक्ष्मण झाक गंगा, शांतिदूत आ अरविन्द नीरजक परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ महाकाव्यकें स्मरण कयल जा सकैत अछि।

ओना आचार्य लोकनिक द्वारा देल गेल परिभाषा जन्य लक्षणक जे जटिलता अछि ताहिसं बहार हेबाक छटपटाति अधिकांश काव्य मे देखल जा सकैत अछि। कतोक रचनाकार आचार्य लोकनिक द्वारा निर्धारित बंधन के शिथिल करैत महाकाव्यक रचना कयलनि अछि जे एहिमे दीनानाथ पाठक बन्धुक 'चाणक्य' कें बानगीक रूपमे राखल जा सकैत अछि। मुदा समीक्षक लोकनि तीव्र बुद्धिये कयल गेल समीक्षा चाणक्य कें पूर्णतः सफल महाकाव्यक कोटि मे राखि देने छथि जे संतोषजनक गद्य छि।

महाकाव्यक रचना एखन आर बेसी कठिन आ श्रमसाध्य भ' गेल अछि। प्राचीन कालहिसं प्रचलित ओ निर्धारित लक्षण, एहि विधाक मादे बेर-बेर कोनो ने कोनो असहजता ठाढ़ क' दैत अछि। ई असहजता, बदलैत परिवेश मे व्यस्ततम जीवनशैली एकटा मूल कारण बनि सकैत अछि। मुदा परिवेश ओ परिस्थिति कतबो बदलओ, जीवनमे कतबो भागम-भागक स्थिति बनओ, साहित्यिक सामग्रीकें पाठकके केतबो अभाव भ' गेल हो साहित्यक कोनो विधाक रचना कम वा बेसी भ' सकैत अछि- एकदम सं सन्न नहि भ' सकैत अछि। महाकाव्य एहि परिस्थितक दास बनल कोनो दुर्बल आकारमे नहि अपितु पूर्णतः सशक्त रूपमे पाठकक सोझां अपन महत् उद्देश्यकें ल' क' अबैत रहल अछि।

एही क्रममे श्री अरविन्द आलोच्य महाकाव्य परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथ अपन पूरा ताम-झामक संग मैथिलीक पाठकक सोझां समुपस्थित अछि।

परमहंसक समय भारतीय राजनीति अत्यंत संक्रमणक स्थितिमे छल। चारू दिस पसरल मुगल सत्ताक वर्चस्व प्रायः धोखरि रहल छल आ ओकर दुर्बल होइत खांचकें कब्जेबाक लेल छोट-छोट रियासत कलसा रहल छलै। एही संक्रमण काल आ चारू भर पसरल आसन्न अराजकताक स्थिति मे ईस्ट इंडिया कंपनी व्यावसायिकताक बहन्ने कोनो कोनो षड्यंत्रक तानी मरनी बुनि आगू बढ़बाक प्रयत्न क' रहल छल। फलतः अपन प्रयत्नक अनुकूलहि प्रायः 1765 ई. धरि भारतक ललाट पर स्वार्थपूर्ण षड्यंत्रक दुआरे स्थायित्वक हस्ताक्षर करब आरंभ क' देलक। परिणामतः भारत नागनाथक (मुगल सल्तनतक) पाशसं छूटि सांपनाथक (अंग्रेजक) बन्हनमे छटपटाहटिक अतिरिक्त आर किछु नहि पाबि सकल। एही कालखण्ड मे परमहंस लक्ष्मीनाथ तत्कालीन भागलपुर, पछाति सहरसा आ तत्पश्चात् सुपौल जिलाक परसरमा गामक एकगोट संस्कारी गृहस्थ परिवारमे 1788 ई. मे देह धारण कयलनि।

पनरह सर्ग मे विभाजित ई महाकाव्यक प्रारूप परमहंसक जीवनक समग्रताकें काव्यमय भाषामे नीरजक प्रस्तुति अत्यंत विलक्षण अछि। एहिमे क्रमशः शिशुरूप, बालविलास, किशोर काया, तरुणरंग, गुरुग्राम, परिवार, समाज, युवा उत्साह, तीर्थाटन, पशुपति दर्शन, योग गुरुकखोज, गुरुक कृपा, साधना सर्ग, परिब्राजक परिभ्रमण, परिचय विशेष आ उपदेश अशेष।

महाकाव्यकार प्रस्तुकक आरंभहिमे गोस्वामी जीक प्रांत संपूर्ण श्रद्धा आ अपन आध्यात्किक लगावके प्रदर्शित करैत हुनका महिमा मंडित करबाक सयत्न प्रयास कयने छथि। उद्देश्य अछि-

जिनकर रचना गावि-गाबि कें
जग मुक्तदारसं पारकरी
एखनहुं राखल कुटी सुशोभित
खडम खट ओ हाथ छड़ी
जन कल्याण समाजक हित मे,
जिनका साधना योग सफल
एहन महात्मन लक्ष्मीनाथ के,
सुनहु चरित शुभ अछि निर्मल

नीरजक महाकाव्यक आरंभ गोस्वामी लक्ष्मीनाथक शिशुस्वरूप सं होइत अछि आ महाकाव्यक पहिल लक्षणक अनुरूप कवि मां शारदा ओ प्रथम देव गणपतिक स्मरणक' अपन निर्वाध रूपसं काव्यसम्पन्न करबाक आशीर्वादक कामना करैत छथि जे मंगलाचरणक रूप मे स्वीकृत भ' जाइछ-

वर्ण रूप जय सगुन शारदा
शब्द सरूप निर्गुण आभास
रस भाव अरू छन्द रूप
हे देवी परवहु मनक आश
विघ्न राज हे विघ्न शमन करू

दमन करू मनकेर कुविचार
महनीय पुरुष के वर्जन हित
नित खोलि दिय' निज शब्दागार

गोस्वामी लक्ष्मीना एहि महाकाव्यक नायक छथि जे ने राजा छथि, ने देवता छथि आने इतिहासक कोनो विराट ओ वैभवशाली व्यक्तित्वे छथि। ई छथि सम्पूर्ण रूपसं समाजमे पचनिहार एहन साधक जे अपन साधनाक शक्ति सं मानव जीवन ओ सामाजिक समरता कें सुरक्षित रखबामे अपन जीवनक समग्र ऊर्जाक आहूति द' देने छथि।

शान्त रसक प्रतीक गोस्वामीक धाय ने कतहु उग्र अछि आ ने कतहु तीख। अपन युवावस्थहिसं समाजक सम्मुख वहि स्त्रीक समाजक लेल संकल्प मे उन्मुख कयल गेलाह-

युवा लछन भवितहि रहि गेला,
खुशी गाम घर लोक समाज।
सकल युवा सिर मौर मानि निय
जनहित करथि समाजक काज।।

चित्रणक चातुर्य नीरज जीक हिनक बाल लीलाक वर्णन मे भेटैछ जे तुलसी-सूरक चमत्कारि उपस्थापनकें स्मरण दिया दैछ। एहि मनोहर चित्रणसं मोन भरि जाइत अछि-

लघु पदमे, लघु पनही लागल,
पनही मे पुनि झुमकी लागल।
झुनकी केर झुन झुन बोल सबदि,
जुटि बालक वृन्द झुमय लागल।

मानल जाइत नीरज जीक ई कृति भने महाकाव्यक लक्षणादिसं गतानल नहि हो मुदा आधुनिक युग मे पल पल परिवर्तित होइत देशकाल पात्रक अनुरूप एहि कृतित्वक गतान अधिकांशत: महाकाव्यक लक्षणक अनुसारे कहल जाइ सकैत अछि। पुरान पंथी रचनाकार भने एहिमे अभाव कें सोझां राखि कवि पर कतिपय आरोप लगाबथु मुदा आधुनिक युगक समाजक साक्ष्य एकरा आओर प्राणवन्त करबाक हेतु प्रतिबद्ध लगैत अछि। एहि महाकाव्यक चरित्र अत्याधुनिक छथि। हिनक एक एकटा वचन समाज सापेक्ष आ मानवीय संवेदनासं ओतप्रोत अछि।

ओना समीक्षक जे समीक्षा करथु मुदा एहि वैभव पूर्ण कृति कें स्वयं कवि नीरज साधिकार महाकाव्य कहि संबोधित कयने छथि। एकर अर्थ थिक एहिमे सर्ग विधान, सर्गक अन्तमे छन्द परिवर्तन सत्रक प्रारंभ मंगलकामना, प्रकृति चित्रणक संग महिमा मंडित चरित्रक प्रतिपादन नीक स्तरक भेल अछि। शांत रसात्मक महाकाव्य मे अलंकारक छटा सेह ठाम ठाम भेटैत चल जाइत अछि जे काव्यकलाकें ज्योतितु क' दैछ। सभसं विशिष्ट बात जे एहि महाकाव्यक अछि, ओ थिक प्रसादगुणसं प्रसन्न भाषा जे पाठक आ श्रोताकें आकर्षित करैछ। एहि काव्यामृतक मादे कवि नीरज लिखैत छथि:

काव्यामृत जिनकर जनहित मे,
जग हित जिनकर योग।
तिनकहि कृपासं पूर्ण भेल अछि,
महाकाव्य संयोग।।

गोस्वामी लक्ष्मीनाथक जीवन दर्शनकें चार पांति मे कवि जेना उकेरलनि ओ निश्चित रूपेण पठनीय थिक-

कहलनि लक्ष्मीनाथ सकल कें,
के सर्वा कर सदिखन ज्ञान।
ईश अंश ई जीव अमर थिक
पंच तत्व ई देह प्रमाण।।

परमहंसक साधित साधनाक अतिरिक्त ऋद्धिसिद्धि सेहो प्राप्त भेलनि जाहिसं हिनका कविमे लोककें ईशत्वक बोध सेहो भेलनि-

अणिमा महिमा गरिमा लघिमा,
प्राप्ति प्रकाम्यकें सुगम बनौलनि।
पड़ल प्रयोजन जखन संत कें,
वेशित ईशत्वक गुण प्रकटौलनि।।

हिनक भक्त समूह कोनहु एक वर्गक नहि अपित समाजक सभ श्रेणीक लोक भेलाह। हिनका सोझां मे गरीब-अमीर, हिन्दू-मुसलमान वा क्रिश्चयन, ऊंच-नीक कोनो भेद नहि छल। तें बाबा सबतरि सौहार्दक मूल मे बैसल समाजकें अनुप्राणित कयलनि आ समाजक सभ वर्गसं आदर पौलनि।

तें कवि नीरज हिनक वाह्य ओ अन्त:साक्ष्यकें समन्वित क लिखलनि-

लक्ष्मीनाथ केर जीवन जल सन,
जगत पुरैनिक पात।
करैत समाजक काज उचित नित,
नहि ककरो आघात।

प्राय: सभ युग मे युवा समाज, राष्ट्र ओ राष्ट्रीय चेतनाके क्रमिक विकास मे अग्रणी मानल जाइत रहल अछि। कवि लक्ष्मीनाथ समाजक सम वर्गक आदरणीय रहितो युवजन मनकें सामाजिक संरचनाक मूल बुझि अपन कर्तव्य पथ पर बढ़ैत रहलाह-

युवा लछन अवितहि रमि गेला,
खुशी गाम घर लोक समाज।
सकल युवा सिर मौर मानि निज,
जन हित करथि समाजक काज।

एहि महाकाव्यक मादे श्री चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' लिखलनि- 'एहि काव्यक नायक परम्पराक एक ज्योतिर्मान नक्षत्र थिका, किन्तु महाकाव्यक एकटा विधान छैक ढांचा छैक ओ फ्रेम मे फिट करबाक हेतु नियम सभक पालन करब बेसी श्रम साध्य छैक। यद्यपि ओहि नियम सभमे कहल विधान किछु नहियो रहैत बहुत किछु छैक। रसो छैक, अलंकारो छैक, प्राकृतिक छवि छटाक संग अष्टांग योग ज्योतिष शास्त्र विभिन्न संस्कारादिक सांगे पांग वर्णन छैक।'

ओना नीरजक ई महाकाव्यक पारम्परिक लक्षणादिक अनुपालन मे भने पाण्डित्यक गूढ़नाक समक्ष नहि ठाढ़ हो मुदा जाहि ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के चरित्र बना एकर तानी भरनी बुनने छथि ओ आधुनिक युगक प्रासंगिताक संग अपन स्थापना मे सर्वथा सफल भेल अछि।

हम नीरज जीके बधाई दैत छियनि जो अहिना काव्यक माध्यमे जनजीवनक जननायकक चरित्रक रंगक अपन काव्यक्षमताक अनुरूप उकेरथि जे समाजक हितार्थ हो। ■

महाकाव्य एवं महाकाव्य मे शकुंतला

✍ अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'

काव्यकें व्यापक अर्थमे साहित्यक पर्यायवाची मानल गेल अछि। आ तें काव्यक अर्थक अन्तर्गत गद्य-पद्य-उपन्यास, नाटक, समस्त कें साहित्यक अंग कहल गेल अछि, अर्थात् ओ सभटा काव्य थीक। अनेको एहि तरहे भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान अपन तर्क दैत काव्यकें परिभाषित केने छथि। अंतिम परिभाषा आचार्य जगन्नाथक छन्हि यथा-

"रमणीयर्थ प्रतिपादक: काव्यम्"

अर्थात् जे रचना अलौकिक आनन्दक अनुभूति करेबाक क्षमता रखैत अछि ओ सभटा काव्य थीक। एहि अन्तर्गत काव्यक दूटा भेद कहल गेल अछि, एकटा थीक श्रव्य आ दोसर थीक दृश्य। दृश्य काव्य कें देखि आ सुनिकें आनन्द उठाओल जाइत अछि, तं दोसर दिशि श्रव्य कालकें मात्र सुनिकें आनन्दक अनुभूति कयल जाइत अछि। दृश्य काव्यक सेहो दूटा भेद मानल गेल अछि यथा- रूपक आ उपरूपक, श्रव्य काव्य केर तीनटा भेद अछि प्रथम गद्य काव्य, दोसर पद्य काव्य तेसर चम्पूकाव्य। चम्पू गद्य-पद्य दुनूक मिश्रण थिक। गद्यक अन्तर्गत कथा, कहानी, उपन्यास आदि अबैत अछि। पद्यक अन्तर्गत छन्दबद्ध आ मुक्त छन्द अबैत अछि। जाहि मे गीत काव्य, नाट्य गीत स्फुट पद आदि अबैत अछि। पद्य काव्य मे प्रधानतया प्रबंध काव्य होइत अछि जाहि मे महाकाव्य आ खण्डकाव्य एकर भेद थिक। खण्ड काव्यमे कोनो

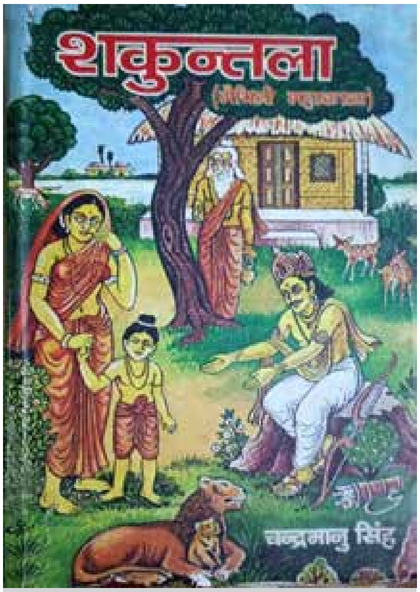

शकुंतला

रचनाकार	:	चंद्रभान सिंह
प्रकाशक	:	मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग
वर्ष	:	2002
मूल्य	:	₹ 251
पृष्ठ	:	519
विधा	:	महाकाव्य

महान् देवतुल्य व्यक्तित्वक जीवन चरित्रक कोनोटा एक अंग केर चित्रण सर्ग अर्थात् अध्याय मे बाटल रहैत अछि। एहि मे सात सर्ग सं उपर प्राय: नहि होइत अछि।

महाकाव्य : महाकाव्यक लक्षण पर अनेको विद्वान अपन-अपन विचारानुसार परिभाषा प्रस्तुत केलैन जेना आचार्य दण्डी काव्यादर्श मे, आचार्य भामहक काव्यालंकार मे तं आचार्य विश्वनाथ अपन ग्रंथ साहित्य दर्पण मे। जाहिमे साहित्य दर्पणक लक्षण अधिकांश समालोचक कें कयलन्हि साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ लिखै छथि-

सर्गवन्धो महाकाव्य तत्रैको नायक: सुर:
सद्वंश: क्षत्रियोवापि धीरो दात्तगुणन्वित:।
श्रृंगार-वीर शान्तानामेकाङ्की रस दृष्यते,
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नाम कस्येतरस्थवां-
नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।।

एहि विवरणक अनुसारें महाकाव्य सर्ग बन्ध रचना थीक जाहि मे विभिन्न वृतान्त विस्तृत रूप मे होइत अछि। विविध छन्द जेना-शक्वरी, अतिशक्वरी, जगती, अनि जगती, विष्टुप आदि छन्दक प्रयोग हों नगर, वन, पर्वत, सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, आश्रम, उपवन, जलक्रीड़ा मधुपान आदिक वर्णन सं युक्त हो। संगहि महाकाव्य मे कोनो महान पुरुषक कृति गान आठसं लऽकें तीस सर्ग धरि प्रस्तुत हो। एकर नायक धीर, वीर हो। महाकाव्यक कोनो एक रस अंगी रस हो अन्यान रस अंग रस केर रूप मे हो। श्रृंगार, वीर, शान्त एहि तीनू रस मे सं कोनो एक रस प्रधान रस केर रूप मे हो आर सभ रस केर समावेश प्रसंगानुसार हो। महाकाव्यक कथा वस्तु ऐतिहासिक अथवा जगत प्रसिद्ध हो एक सर्गक वर्णन कोनो एके छन्द मे हो मुदा सर्गान्त मे छन्दक परिवर्तन हो प्राकृतिक वर्णन केर संग मानवीय प्रवृत्ति जेना संयोग, वियोग,

अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' आर.एम. कॉलेज, सहरसाक मैथिली विभागमे कार्यरत व्याख्याता छथि। विविध साहित्यिक सांस्कृतिक मंच सं जुरल साहित्य जगतमे अरविंद नीरज कें नाम सं ख्यात विविध पत्र-पत्रिकामे छपैत मैथिली मंचक जानल-मानल कवि छथि। हिनका द्वारा प्रणीत अनेको पोथी प्रकाशित आ प्रकाशनाधीन छन्हि। हिनक 'परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं महाकाव्य' बहुत चर्चित भेल।

संपर्क : *हटिया गाछी, मानस नगर, वार्ड नं.-32, सहरसा-852201, मो. 9771006810*

युद्ध, विवाह, जे मानवीय परिस्थिति बनैत अछि तकर वर्णन हो, महाकाव्यक नामकरण प्रमुख पात्र वा प्रधान घटनाक अनुसारे हो सर्गक जौं नामकरण हो तं प्रस्तुत सर्गक विषयानुसार हो। प्रारंभ मे मंगलाचरण तं अन्त में आशीर्वचन हो। यद्यपि अग्निपुराणादि मे महाकाव्यक संदर्भ मे जतेक कहल गेल अछि तकर सम्पूर्ण पूर्ति सभ ठाम नहियो भेटैत अछि। युगक अनुकूल एहि ठाम किछु ने किछु संक्षिप्तीकरण भेल अछि। ओना परिभाषाक परिधि मे जो महाकाव्य रहत तं ओ मे ठाम देखल जाओत महाकाव्यक कल्पनाक कमनीयता, अभियंत्रना, शक्ति, शब्दक विलक्षण विन्यास। छन्दक विलक्षणता, मनोवैज्ञानिक वर्णन क्षेत्रीय व्यवहारक वर्णन सभ्यता, संस्कृतिक उत्कर्षताक, नीतिक सरस वर्णन, तत्कालीन नव शैलीक निवेश, प्रसाद गुणक सम्पन्नता उक्तिक विस्तार नहि छोट-छोट होयबाक चाही प्रधान पात्रक उपेक्षा नहि, अपेक्षा होयवाक चाही।

आब ई जानबाक अछि ई जे आलोच्य महाकाव्य 'शकुन्तला' नामसं प्रस्तुत अछि जकर लेखक 'चन्द्रभानुसिंह' छथि ओ महाकाव्योचित परिभाषाक अन्तर्गत कोन प्रकारे रचल पचल अछि?

पुराणादि मे वर्णित कथाक आधार पात्र छथि देवराज इन्द्रक अप्सरा मेनकाक तनया शकुन्तला, जिनक तेज सं हिनक जन्म भेल छन्हि ओ छथि ऋषि विश्वामित्र। स्वर्ग सं अवदित धरती पर विश्वामित्रक तपस्याक भंग क' मेनका अपन प्रेम पाश मे आबद्ध कयलनि जकर प्रतिफल नवजात कें जन्म द' धरती परक अरण्य मे छोरि कलंक सं बचबाक लेल पुन: देवलोक चलि जाइत छथि। एम्हर नवजातक अरण्यरोदन जखन ऋषि कण्व एवं ऋषि पत्नी गोतमीक कान धरि पहुचैत अछि तं ओहि शिशु लग पहुंच बनप्राणीक संग अजस्र पक्षि सं घेरल एहि कन्या कें उठा कण्व कन्या के अपन आश्रम मे आवि लालन-पानल मे लागि जाइत छथि, नामकरण शिशुक होइत अछि शकुंतला 'सकुन' पक्षी के कहल गेल अछि आ अनेको शकुन्त अर्थात् पक्षी एहि शिशुक रक्षा केने छल तें एहि शिशुक नाम पड़ल शकुंतला, एहि कथा कें कालीदास सेहो 'अभिज्ञान शाकुंतलम' नाम सं नाटक लिखि अपन साहित्यकलाक सुंदर उदाहरण द' साहित्य जगत कें गौरवान्वित केने छथि।

महाकवि चन्द्रभानुसिंह एहि शकुन्तलाक चारित्रिक उत्कर्षता पर अपन महाकाव्यक रचना केने छथि। कथा वस्तु एवं पात्रक दृष्टिमे तं महाकाव्य उचिते, महाकाव्योचित नायक कोनो धीर, वीर, गंभीर, उद्दात्त, शान्त सुपरिचित परानादिक चरित्र पात्र देव वा देवतुल्य लोक हो जिनक चारित्रिकतासं समाजकें नीक संदेश भेटैत हो। तं शकुंतला पुराणक पात्र तं छथिमे संगहि एक महान नायिका छथि जकर विच्छेदक छोह मानवेटा पर नहि पशु पक्षीक संग प्रकृति पर सेहो परैत अछि। नौ सर्ग मे विभाजित एहि महाकाव्य मे अनेको सर्ग-उपसर्ग अछि जकरा अन्तर्गत अनेको विषम वस्तुक, स्थिति परिस्थितिक सांगोपांग वर्णन भेल अछि।

आमुख आलोक सं प्रथम सर्ग प्रारम्भ होइत अछि जकरा अन्तर्गत देव वंदना, आत्मनिवेदन, केने छथि वंदनाक पाती देखल जाऊ-

अवियौ सगणपति राज हंसिनी पीठ वादे देश मे
सरला तकै अछि बाट अनुखन विपति विपनल भेसमे

'गुरु गौरव' केर अन्तर्गत शिक्षकक गुण, कार्य सिद्धि कामना वर्णन अछि तं खगोल शीर्षक मे कण्व ऋषिक आश्रम, ब्रह्माण्डक विराट दर्शन अछि 'त्यजाराधन' एहि मे इन्दुक सभा मेनकाक आवाहन अछि ते 'समाधि सम्मोहन' मे बाराह क्षेत्र तपस्यारत विश्वामित्र, मेनकाक अवतरण आ छठम शीर्षक अछि 'शकुन्तलोदय', एहि ठाम - ब्रह्म मुहूर्त मे कण्व ऋषि कें शकुन्तलाक प्राप्ति एवं पालन पोषण के वर्णन अपन बाल्यकाल सं केने छथि। एहि तरहे प्रथम सर्ग केर अन्तर्गत छौ गोट उपसर्ग मे बांटि कथा विस्तार कहि केने छथि।

दोसर सर्गक नाम अछि 'नगर प्रबंध'। एहि मे आठ गोट शीर्षक बाटि रखने छथि यथा - नगर प्रबंध एहि मे राज्यधानीपर्व, हस्तिनापुर, पुरवंश कथा, अभिषेकक तैयारी, अद्यमाविर्भाव। ई एक नव पात्रक काल्पनिक चित्रण केने छथि। तेसर विश्ववेदना अभियान, राज्याभिषेक चारिम अछि तं पाचम बीक प्रशासन प्रबंध छठम हस्तिनापुर ग्रीष्म में एहिठा ऋतु वर्णन करगर गेल अछि-

सांझ प्रात ऊषा निसि दुपहर के ककरा सं ऊपर।
सब स्वागत हित मोम बनल अछि मसमक जोगें फरहर।।

सातम अछि 'विश्व संघ संचालन' एतय सीमा पर शत्रुक उपस्थिक वर्णन भेल अछि। आठम थीक- 'सीमन्त संचयन' एहि मे वनवासीक सहयोग सं सैन्य संगठन शत्रु-शंखक दमनक वर्णन अछि। नवम् शीर्षक अछि 'हस्तिनापुर' एहि तरहे दोसर सर्ग मे नवम प्रकारक शीर्षक पर प्रसंग विस्तार केने छथि कनि।

तेसर सर्ग मे तो तीनटा शीर्षक अछि: प्रथम नव तुरियाक संग माढव दोसर- देवर्षिक नगर विचरण एहि ठाम वनपात्रा, हस्तिनापुरक ऐतिहासिक परिचय देल गेल अछि। तेसर अछि, तीर्थारोहण एहि मे मालिन वन एवं तीर्थयात्रा प्रयाग काशी एवं तिरहुतक वर्णन भेल अछि - जाहि मे मिथिलांचलक अनेको राग अथवा छन्द मे कवि अपन काव्य कलाक परिचय देने छथि, सोहर, बटगबनी, तिरहुत आदि रागक संग छन्द मे दोहा चौपाई मे पांति प्रस्तुत केने छथि। एहि ठाम एकहि सर्ग मे अनेको छन्द अथवा राग कें समावेश कवि केने छथि।

चारिम सर्ग कें सेहो तीनटा शीर्षक बांटने छथि यथा: 'प्रथम', 'सौंदर्यवोधन

(शेष पृष्ठ 34 पर)

उपन्यास विधामे मीलक पाथरः 'पृथ्वीपुत्र'

✍ **शिवशंकर श्रीनिवास**

ललितक 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास 1964 मे मिथिला मिहिर मे धारावाहिक क्रममे प्रकाशित भेल। पुनः अगिले साल 1965 मे पोथीक रूप मे सेहो आयल। कृषकक जीवन ओ ओकर संघर्षक कथा कहैत उक्त उपन्यास बहुत चर्चित ओ प्रशंसित भेल।

एहि उपन्याससं पहिने मात्र धीरेन्द्रक उपन्यास 'भोरूकवा 1964' मे मिथिला मिहिर मे कृषकक जीवन ओ कृषि संघर्ष के कहैत प्रकाशित भेल छल, किन्तु पोथी रूप मे ओहो 1965 मे आयल।

ललित एहि उपन्यास लिखबासं पहिने कथाकार रूपमे यशस्वी भ' चुकल छलाह। हिनक कथा वस्तुतः मैथिली कथा कें समकालीन स्वर दैत नवचेतनाक दुआरि खोललक। प्रसिद्ध कथाकार मायानन्द मिश्र अपन कथा-संग्रह 'चन्द्रबिन्दुक भूमिकामे कहैत छथि जे ओ आधुनिक कथा लिखब ललितेसं सिखलनि। आचार्य रमानाथ झा पृथ्वी पुत्रक भूमिकामे लिखैत छथि- ''मैथिलीमे कथा-साहित्यक विकासमे हिनक योगदान इतिहासकार लिखताह परन्तु हमरा सन-सन बहुतो व्यक्ति छथि जे हिनके कथा पढ़ि-पढ़ि मैथिली-कथा-साहित्यक प्रति रुचि उत्पन्न कयल अछि।''[1]

हिनक कथामे श्रमिक जीवनक सुख-दुख ओ संघर्ष संग जे सामाजिक चेतना आयलए ओ निश्चित रूपसं, मैथिली कथा के नव बात प्रदान कयलक। नव परिचिति देलक, हिनक महत्वपूर्ण कथा सभमे मिथिलाक गाम ओ कस्बाक विभिन्न परिवेश तं आएल किन्तु खेत मे काज करैत जीवन ओ खेतिहरक पीड़ा ओ संघर्षक बात नहि आयलए आ से आयल हिनक एही उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' मे।

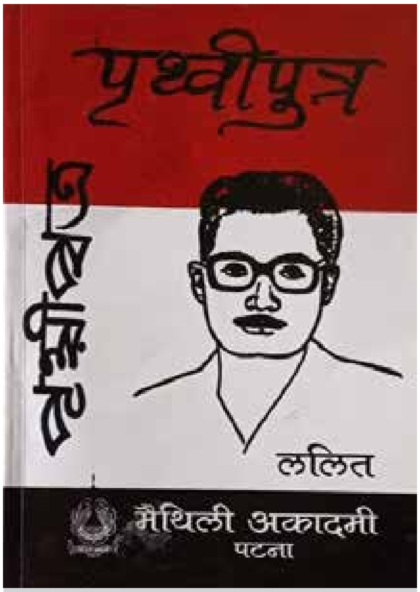

पृथ्वीपुत्र

रचनाकार	:	ललितेश ललित
प्रकाशक	:	विद्यापति प्रकाशन (1965), प्रथम संस्करण
	:	मैथिली अकादमी (पुनर्मुद्रण, 1984) चतुर्थ संस्करण: 2012
मूल्य	:	₹ 50
पृष्ठ	:	102
विधा	:	उपन्यास

स्वतंत्रताक सत्रह-अठारह वर्षक बाद लिखल ई उपन्यास देखबैत अछि, जे स्वतंत्र भारतक एहि देश मे जे एखनहुं कृषि प्रधान देश थिक, ओकर कृषकक की हाल अछि? आ से ललित द्वारा कहल ओ किसानी जीवनक संघर्ष आइ सेहो बहुत रास चिंतन करबाक सामग्री छोड़ि जाइत अछि। जाहि पर विचारब आवश्यक छैक।

ललितक प्रसिद्ध कथा 'रमजानी' मे आयलए जे ओ एक्का घोड़ा बेचि रिक्शा लेब' चाहैए। अपन बेटा के पढ़ब' चाहैए ओ ईहो बोध करैए जे ओ ने हिन्दू थिक ने मुसलमान। श्रमिकक ई दृष्टिकोण भारत मे औद्योगिक क्षेत्रक विकास ओ मानवीय जीवनक मूल्य बोध सं उत्पन्न भेलए। औद्योगिक क्षेत्रक विकाससं तात्पर्य जे भारत मे जखन उद्योग के आगू बढ़ेबाक लेल विभिन्न क्षेत्र मे कल-कारखाना खुजल तं ओहि संग यातायातक सुविधा हेतु रेलमार्ग के सेहो बढ़ाओल गेल, विभिन्न रेलवे-स्टेशन बनल। ठाम-ठाम बस-मोटर सेहो आब' लागल। रिक्शा सेहो आयले। ई सभ आयलक बाद लोक ई अनुभव कयलक जे मशीन सं बनल कोनो वस्तु अधिक सुविधाजनक वो अल्प परिश्रम बहुत काजक होइत छैक। जे काज पशुक

शिवशंकर श्रीनिवास मैथिलीक वरिष्ठ कथाकार आ आलोचक अछि। अनेक पोथी प्रकाशित छनि। विविध पत्र-पत्रिका मे नियमित प्रकाशित होइत छथि।

***संपर्क** : ग्राम+पोस्ट : लोहना, भाया : सरिसब पाही, जिला : मधुबनी-847424*

***मो.** 9470883301, **ईमेल** : sshivshankarjha@gmail.com*

सहायता सं होइत छलैक आ लोक हाथ सं करैत छल ओ धीरे-धीरे लोक छोड़ चाहलक। कल-कारखानामे श्रमिक जनक जाहि चेतनाक कारणे यूनियन बनलै आ वैह चेतना समाजमे सेहो पसरल। हमरा जनैत वैह चेतनाक स्वर थिक, रमजानीक सोचव जे ने ओ हिन्दू आ ने मुसलमान ओ 'मजूर' थिक। आब हमरा ई कहब अछि ओ चेतना की मिथिलाक भूमि पर प्रतिफलित भेल, एकर उत्तरमे मात्र नहि त' नहि कहल जा सकैए। किन्तु ओ मशीन मिथिलाक कृषि कार्य कें उन्नत शिखर पर नहि ल' गेल, कारण एहि ठामक लोक मशीनक सहायता ल' खेती उन्नति करय ताहि पर ध्यान नहि द' औद्योगिक जीवन दिस भाग' लागल। तकर कारण अछि खेती मे लागल लोकक विभिन्न पीड़ा। जब ई अनुभव कयलनि जे मात्र खेती कयलासं पेट नहि भरि एकै' आ मिथिलासं पलायन होब' लागल, जकर आई भयंकर रूप देखाइए।

रमजानीमे जे 'मजूर' होयबाक बोध भेल छलै ओ धीरे-धीरे नष्ट भ' गेल। ओ भावकें नष्ट करै मे राजनीतिक दलक बहुत पैघ भूमिका अछि। ओना आरो कारण ताकल जा सकैए, किंतु वोटक राजनीति जातीयता आ सम्प्रदायिकता के बेसी गाढ़ कयलक आ क' रहल अछि। पृथ्वीपुत्र मे सेहो देखैत छी जे पासवान सभके मुसहर लोकनि आ यादव लोकनि अपन-अपन लाभक बात सोचि संग नहि दैत छथि। बिजली आ कलपू प्रेम कें विवाहक रूप देबामे वैह जाति बाधक भेल जकर चर्चा आगू करब। कहबाक तात्पर्य ललित जेना रमजानी सन पात्र अपन कथामे सृजित कयलनि ओ पात्रक भाव आगू ने हिनक कथामे आ ने उपन्यासमे प्रतिफलित भ' सकल।

हिनक प्रसिद्ध उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' जाहि पर हमर विश्लेषण आरंभ भेल अछि ओ मिथिलाक पूर्ब भाग अर्थात् जिला पूर्णिया, मौजा-जितपुर, टोल-बबुरवन्ना क कथा थिक।

विलक्षण शैली मे लिखल ई उपन्यास तत्कालीन वर्तमानमे अतीत आ पुनः वर्तमान आबि कथा कहैत अछि। एहि उपन्यासक शिल्पकें वर्णननात्मक शिल्प कहल आइत अछि।

उपन्यासकार कथाक परिवेशक सुन्दर संक्षिप्त वर्णन करैत कहैत छथि। मुख्यतः कथा अछि दुसधटोली अर्थात विसेखी पासवानक परिवार संग ओकर छोटका बेटा सरूपाक आ समयक स्थितिक आ श्रमिक चेतनाक।

भारतमे जमीन्दारी उन्मूलनक बाद जमीनक सर्वे होब' लगलै तं कएकटा बात

पृथ्वीपुत्र मे सेहो देखैत छी जे पासवान सभके मुसहर लोकनि आ यादव लोकनि अपन-अपन लाभक बात सोचि संग नहि दैत छथि। बिजली आ कलपू प्रेम कें विवाहक रूप देबामे वैह जाति बाधक भेल जकर चर्चा आगू करब। कहबाक तात्पर्य ललित जेना रमजानी सन पात्र अपन कथामे सृजित कयलनि ओ पात्रक भाव आगू ने हिनक कथामे आ ने उपन्यासमे प्रतिफलित भ' सकल।

भेलै जे समाजक बीच उथल-पुथल मचा देलक कारण, जमीन्दारी सौंपलनि जाहि बदला हुनका लोकनिके जमीन्दारी बॉन्ड देल गेलानि। जकर जेना ओहि समय मे मूल्य लगाओल गेल ताहि अनुसार ओकर भुगतान ल' सकै छल जकरो समय आ अवधि निर्धारित छल, जे बादमे सरकार द्वारा निरस्त क' देल गेल। प्रत्येक जमीन्दारके हैसियत अनुसार जमीन रखबाक अधिकार सेहो भेटल छलनि। बाकी जे भूमि छल ओहिमे कएक तरहक भूमि छल जेना बकास्त (जाहि भूमि पर काश्त (कृषि) नहि होइत हो, जेकर मालिक केओ नहि छल), गैर मजरुआ, मजरुआ खास, श्मशान आदि विभिन्न तरहक जमीन जकर मालिक केओ नहि छलाह। एहन भूमिमे जे बकास्त छल आ ओकरा कोनो जमीन्दार अपन मानै छलाह आ श्रमिक जन घोर परिश्रमे ओहि भूमि के कृषि योग्य बनौने छलाह, ओहिये उपजल जजात मालिक के बांटि दैत छलथिन। कारण हुनका लोकनिकें ई ज्ञात नहि छलनि जे जमीन ककर छिये। मोटामोटी बकास्त जमीनक चारूकात जकर भूमि छलै ओकरे वकास्त भूमि ओकरे अधिकारमे रहैत छल। किन्तु ओ भूमि ओकर नहि छलै माने ककरो नहि छलै।

जखन जमीनक सर्वे आरंभ भेलै तं रहन भूमि सभ पर दखल ककर छैक से ध्यान देल गेलै। आ ओहि सर्वेकाल भेलै जे बहुतो गोटयक नाम जमीन खाता खुजञै। यदि कोनो अनकर दखल छलै आ तत्काल केओ बटाइ करै छल त' ओकरा नामे सिक्कमी आ जं ककरो दखल मे ओ जमीन अछि, ई बुझल गेलै त' पूरा भूमिक मालिकनामा खाता ओकरा नामे खुजि गेल। जाहि जगह पर एहन लोकक सभ बसल छल ओकरो वासगीतक खाता खुजि गेलै। ओहीक्रममे तीन बीघा खेत बिसेखी पासवानक नामसं खुजलै। ओना बिसेखी सर्वेवला हाकिम के कहने रहै जे हर-बरद मालिकक छियै ओ हरबाहि क' रहलए। किन्तु, हाकिमक दृष्टि ओकर बात के स्वीकार नहि क' ओकरे नामे खातो खोल देलकै। आ तहियासं बिसेखी ओ अन्य श्रमिक वर्ग चाहे ओ पासवान टोलक रहथु वा सदाय (मुसहर) टोलक ओहि भूमि सभ के अपन मान' लागल।

आ, एकर बाद शुरू भेल खेतिहर ओ जमीन्दारक बीच संघर्ष, ओही संघर्षक कथा उक्त उपन्यास कहैत अछि। ओहि संघर्षक बीच कतेको एहन बात अछि जे ध्यान आकृष्ट करैत आइओ कएकटा बात कहैत अछि। उक्त उपन्यास कहैत अछि जे जे किसान वा श्रमिक स्वयं खेती करैत छल ओकर की हाल रहै। मिथिलाक

जाहि भागक ई वर्णन अछि ओहि भागमे नगदी हेतु मुख्य रूपसं पटुआक खेती होइत छल। आरो जजात होइत छल किन्तु बहुत कठिनसं। कारण रहै जे कहियो ओइ द' क' कोशीक मुख्य धार बहैत छल, आब ओकरे छाड़नि परमान नामक धार बहैत अछि। ओही परमान धारक कछेड़ पर ओ गाम वा टोल सभ छल। एहिठामक भूमि खेती योग्य नहिं छलै कारण चारुकात कोसीक विनाशकारी वंध्या बालु पोखरि इनार तकके''[2] भरि देने रहै आ बांध तं सहजहिं बालुसं पाटल छल। बगुर ओ अन्य बलुआही जंगल सेहो भ' जाइत छलैक ओहेन खेतकें ओहि ठामक श्रमिकजन खेती योग्य भूमि बनौने छलाह। खेतीक उपज तं आधा खेतक मालिक बांटि लैत छलै आ तकर बादक उपजा मे जं पाट, आलू वा कोनो अन्य रहै छलै तं व्यापारी वर्गे तेना ओकर दाम खसा दै छलै जे खेतिहर लोकनिक धरडांर लागब' शुरू भ' जाइ छलनि आ हुनका लोकनि के कर्ज पर कर्ज भ' जाइत छलनि। एहना स्थितिमे ओ श्रमिक लोकनिक जीवन मालिक गुलाम जकां छल। उपन्यास मे आयलए जे ''मालिक सबमे जखन आपसी बांट होइक त' सम्पतिक संग जनो बांटल जाइ।''[3] ई सभ स्थिति सम्पूर्ण मिथिलामे छल। मिथिला मे कोनो किसान वा श्रमिक अपन आत्महत्या तं नहि कयलक, जेना आइ भारतक अन्य क्षेत्रमे किसान लोकनि, जखन कर्जसं दबि जाइ छथि तें करैत छथि किन्तु मिथिलाक किसान ओ श्रमिक धीरे-धीरे खेतीसं पलायन करय लागल तकर फल ई अछि जे आइ एहिठाम केओ खेत बटाइ पर लेब सेहो नहि स्वीकारि रहलए। धान वा गहूंम काटि आनक सेहो अनक अभाव मे कठिन भ' गेल अछि। से धीरे-धीरे घोर संकट दिस इशारा क' रहल'ए। एहि संकट कारण एहि उपन्यासमे भेटैए जे एहिठामक किसान श्रमिक के तं सचेत करिते अछि, सम्पूर्ण जनमानसक अपन कथासं सचेत करैत अछि।

उपन्यासकार अपन उपन्यासक कथामे ई देखौलनि जे कोना श्रमिक वर्गक लोक खेतीक अतिरिक्त अन्य धंधा करैत अछि। बिसेखी अपन परिस्थितिकें देखैत सोचैत अछि- ''कौखन जिबैत रहबा लेल लोक-लाज त्याग पड़ै छै लोक कें। आइ बिसेखी लोक-लाज सं डेरायल रहिते त' एहि पांच प्राणीक (विसेखी पति-पत्नी, दूटा बेटा आ एकटा बेटी) परवरिश भेल रहितै? किन्नहु नै। कोशीक बाढ़िसं मारल बांझ धरती कै चांछक प्रयास मे कहिआ ने अन्न आ दबाइक बिना मरि गेल रहितै ई सब। पहिने जिबैत रहब जरूरी छैक।

उपन्यासकार अपन उपन्यासक कथामे ई देखौलनि जे कोना श्रमिक वर्गक लोक खेतीक अतिरिक्त अन्य धंधा करैत अछि। बिसेखी अपन परिस्थितिकें देखैत सोचैत अछि- ''कौखन जिबैत रहबा लेल लोक-लाज त्याग पड़ै छै लोक कें। आइ बिसेखी लोक-लाज सं डेरायल रहिते त' एहि पांच प्राणीक (विसेखी पति-पत्नी, दूटा बेटा आ एकटा बेटी) परवरिश भेल रहितै? किन्नहु नै।

तखन पर-पंच आ कि लोक लाज।''[4] आब प्रश्न उठैत अछि जे जीबाक लेल बिसेखी की करै छल? एकर उत्तर उपन्यासमे सहजहिं भेटत जे ओ ओहि इलाकाक नामी चोर छल। ओकर अपन दल छलै। से जहिया ओहि भरल सभामे एस.पी. समक्ष अपन मोनक भाषामे चोरि नहि करबाक सपत खेलक आ तकर बाद फेर कहियो चोरि नहि कयलक जकर गर्व ओकर सम्पूर्ण परिवारकें रहैक। किन्तु प्रश्न उठैत अछि, की जीबाक लेल चोरि करब ठीक छै? एहि प्रश्नक संग हमरा प्रसिद्ध उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणुक लेल कयल गेल टिप्पणी। मोन पड़ैत अछि, ओ ई जे 'नक्षत्र मालाकार 1942 के क्रांतिक वीर योद्धा छलाह। जखन अकाल पड़लै ते सेठ-साहूकार ओ जमीन्दार सभ अन्न नुका रखलक ओ समय छलै अजादीक तुरंत बादक 1949 क। नक्षत्र बगावत करैत भुखायल लोकक टोली बना अन्न लूटि लैत छल। ओकरा पकड़ै लेल सरकार इनामक घोषणा कयलक। एकटा हिन्दी साप्ताहिक 'जनता'मे रेणु जी बिहारक अकाल पर रिपोर्ट लिखने छलाह। जाहिम ओ आलोचना कयने छलाह जे नक्षत्र अपन विरोधीक नाक-कान काटि लैत छैक। एहि लेख छपला बाद नक्षत्रक संवाद रेणु के भेटलनि- ''जाहि नाक-कान पर सुनहरा फ्रेमक चश्मा लगा क' लिखैत-पढ़ैत छैं ओकरा करै लेल राति मे जखन हम पहुंचलहुं ओहि काल तों लिखि रहल छलै। ओहि काल तोहर चेहरा फूल सन लागल। तोरा जे मन होइ लिख, हमरा मारि दे किन्तु एक बेर भूख सं तड़पैत लोक बीच आबि क' देख। सात दिनक भुखायल बच्चा के किछु खेलाक बाद ओहि ठाम हंसी देखमे त' जेल-फांसी-नरक सभ बिसरि जेबें तकर बाद रेणु 'मैला आंचल' लिखलनि।''[5] कहबा अर्थ बिसेखीक ई सोच एहि बात कें पुष्ट करैत अछि जे पहिने जीयब जरूरी छैक। हं, निकलुष भ' जीयब बेसी जरूरी छै, एहि बात कें आगू बढ़ेबाक लेल देखौलनि अछि जे जखन एकरा सभकें बास भरे लै-चास भेलनि तखन सरकार एकरा सभकें खोजलक आ चोरि बन्द क' देलक। ललित ई बात अपन उपन्यासक कथासं कहैत छथि जे जावत अहां ककरो सुपथ पथ पर नहि चला सकै छी जाबत ओकरा अहां ओहि योग्य स्थिति नहि द' सकबै। भुखायल जीवन हेतु नैतिकताक पाठ पढ़ायब खायल-पीअल लोक लेल सहज भ' सकैत छैक किन्तु भुखल जिनगीक लेल एहन सोचब कठिन छैक, अव्यावहारिक छैक।

उपन्यासमे खेती करैत जीवन-संघर्षके बहुत निरपेक्षताक संग देखाओल गेलए। भौतिक संसाधनक अभावमे जीवन जीबाक लेल संघर्ष करैत लोकमे भूखक महारोग रहितो ओकरा अपन बीचक प्रेम बचौने रहैत अछि। विसेखीके बेटा-बेटी प्रति ममता अपन परिवारक जीवन के बचेबाक चिन्ता देखबाक बुझबाक योग्य अछि।

विसेखीक बेटी बिजली अपन पति हीरालाल के छोड़ि कएक बेर चल अबैत अछि, कारण जे ओ कलपू मिसर (कल्पनाथ मिश्र) सं प्रेम करैत अछि। बिजली प्रेम करैए, ई पूरा टोलक लोक जनैए। एकटा दुसाधक बेटी एकटा विधुर ब्राह्मणसं प्रेम करैए ई बुझितो केओ वर्जनक नहि करैए। स्वयं विसेखी जेना बुझि गेल अछि जे बिजली कलपू बिना जीवि नहि सकैए, तें ओ ओकर ओना आयब जेना ओ स्वीकारि लैने अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि एतेक निश्छल मनसं प्रेम कयनिहार बिजली समाजक बीच स्पष्ट किएक नहि बाजि सकलि। उपन्यासमे ललित बिजलीकें एकटा प्रेममयी स्त्री तं बनौलनि, जकरा अपन भाइ आ बापक परिवारसं अद्‌भुत जुड़ाउ छलै, कलपू बिना ओ नहि रहि सकैत छलि, ककरो ओकरा परिवाहि नहि छलै, किन्तु ओकरा सम्पूर्ण समाजक समक्ष बजबाक साहस नहि द' सकलाह। हमरा जनैत समाजक समक्ष ओकर खुलिक' आयब ओ सामाजिक मर्यादा विरुद्ध बुझलनि। यैह कारण भेल जे ओ पंचक समक्ष सरुपा द्वारा हीरालालक विरुद्ध एहन अभियोग लगौलक जे असत्य छल। आ बिजलीके पंच हीरालालसं छुटकारा द' देलकैक। जाहि ललितक 'मुक्ति' कथाक नायिका प्रेम आ ऐश्वर्य के छोड़ि धर्मशालाक दरबान संग भागि गेल, ओ कोनो मर्यादाक परवाहि नहि कयलक ओ ललित बिजली सन स्त्री जकरा अपन माय-बाप भाइ आ सरसमाजक लाज नहि होइ छैक, ओ बिजली जे दिना दहिर कलपू मिसर रंग-रभस करै छलि ओ समाजक बीच हीरालाल पर मिथ्या आरोप किए लगौलक? खुलि क' किएक ने बाजलि? हमरा जनैत ललित एहन प्रेमकें सामाजिक मान्यता देबा मे डरेला। जखन कि यात्री के 'पारो'मे जतेक साहसक जरूरत छलनि ओतेक साहस ललित के प्रयोजनीय नहि छलनि, कारण पारो (1946) मे यात्री बिरजू आ ओकर बहिन (पिसिऔत)क बीच सहज पुरुष ओ स्त्रीक बीच मनेमन जे आकर्षण होइ छै, ओकरा ओ गुप्त नहि रखलनि। ओकरा स्पष्ट कयलनि संबंधक आवरणकें कने मात्र हटोलनि आ पुरानपंथी सोच खलबलाय, बहुतो टीका-

पहिने परिपाटी छल, खास क' नाटकमे जाहिमे कतेको एहन प्रसिद्ध संस्कृत नाटक सभ अछि, जाहिमे मूल कथासं अतिरिक्त गौण कथा रहैत छल, बादमे उपन्यासोमे ई देखल गेल जकरा मुख्यकथासे मतलब नहि रहैत छलैक, ओ कथा मात्र पाठककें अतिरिक्त मनोरंजन दैत छलैक, किन्तु कोनो कथा हो मनोरंजन तं पाठकके विचारक अनुकूल होइत अछि। युग चेता कथाकार ललितकें प्रायः एहि बात पर ध्यान नहि गेलनि।

टिप्पणी कयलक किन्तु बिजली आ कलपू बीच मात्र जाति छलैक, ओ जाति रूपी देवालके नहि ढाहि सकलाह, कहाय जे ढाहि सकितछि तं हमरा बुझने बिजलीक चरित्र सत्यक आलोक मे बेसी आलोकित भ' समाज के एकटा सहज मानवीय बाट देखाबय मे सहायक होइत। ओ बिजली जे मात्र कलपू संग प्रेम करै छलि। अन्य पुरुषक कामुक आंखि तक ओकरा बर्दास्त नहि छलैक। जखन कि सिपाही दुरजोधन सिंहक जबरदस्ती पर चिचिआयल आ असहाय भ' सरुपा के सोर पारलक त' सरुपा अपन बहिनक लाज बचेबाक लेल ओकर हत्या क' दैत छैक। ओ बिजली कलपूक प्रेम संग समाज बीच किए ने आबि पबैए? ओतिबे नाहि, बिजली अपन जीवन कलपू संग बीता लेल किन्तु वियाह नहि करत। किन्तु कल्पू मिसर अपने जाति के परवाह नहि क' जखन ओकरा सें बियाह करबाक प्रस्ताव दैत अछि। अपन दिवंगता पत्नी बला आभूषण पहिर' कहैत अछि त' ओ मना क' दैत आछि। ओ कहैत अछि- 'तों हमर सींथ छुबितह तहन हमर भाग हमर नहि। तो देवता छह हमर। मगर गहना पहिरबाक भाग नहि अछि हमरा, नहि अछि हमरा एहि जनम मे।' माने ओ ब्राह्मण जातिसें अपन सींथ नहि भरा सकत। ओ ताहि सं डरायत अछि।

कथाकार एवं समीक्षक अशोक कहैत छथि- 'एतेक निश्चयात्मक बुद्धि वाली एकनिष्ठ प्रेमिका साहसी आ उदात्त नायिका बिजली के आक्षेप हेबाक संज्ञान समाप्त नहि भ' पबैत। ब्राह्मणीक गहना पहिरत त' जरि जायत। नष्ट भ' जायत। किएक बिजलीक एहि यूटर्नक की कारण? वस्तुतः ई बिजलीक मूल्यबोध नहि, बिजलीक चरित्र गढ़'वला ललितक मूल्यबोध थिक।''[6] उपन्यास भूमिका मे आलोचक रमानाथ झा एकरा मर्यादानुकूल मानलनि। किन्तु ई सोच सामन्ती संचनाक समाजक थिक, आहिठाम मानवीय हित नहि वर्णवादी हित के महत्व देल जाइत अछि। एहि बातके आइ विचारल जायतं यैह स्पष्ट हैत जे ललित वर्णवादी व्यवस्था पर कोनो प्रहार सं बचलाह, ओ श्रमिककें अपन अधिकार लेल तें जागरूक कयलनि ओकरामे दृढ़ निश्चयताक बोध भरलनि किन्तु जातीयता बन्धन सं मुक्तिक मार्ग नहि देखा सकलाह।

आब ई प्रश्न उठैत अछि जे बिजली ओ कलपूक प्रेमक प्रसंगक कथाक की आवश्यकता छल? कारण किसानी जीवन आ संघर्षक बात जे एहि उपन्यासक मुख्य बात थिक ताहिमे बिजली ओ कलपूक प्रेमक प्रसंग कतहु सहायक नहि होइत

अछि। दोसर बात यदि उपन्यासकार ओहि दुनू विवाहकें मर्यादाक अनुकूल नहि बुझलनि तं कोनो स्त्री अपन पतिकें छोड़ि दोसर पुरुषसं प्रेम करैत अछि आ अन्तमे मिथ्या अभियोग लगा पतिकें छोड़ि दैत अछि, से की मर्यादापूर्ण बात भेल? प्राय: एहि पर ललित नहि सोचलनि। पहिने जमीन्दार लोकनि अपन पत्नीक रहितो दोसर स्त्री रखैल (धोरवी) रूपमे रखै छल आ समाज एहिबात कें बुझितो विरोध नहि क' पबैत छल आ ललित जेना ओहि बातके कायल करैत ओहिमे प्रेमक पुट द' देलनि।

पहिने परिपाटी छल, खास क' नाटकमे जाहिमे कतेको एहन प्रसिद्ध संस्कृत नाटक सभ अछि, जाहिमे मूल कथासं अतिरिक्त गौण कथा रहैत छल, बादमे उपन्यासोमे ई देखल गेल जकरा मुख्यकथासे मतलब नहि रहैत छलैक, ओ कथा मात्र पाठककें अतिरिक्त मनोरंजन दैत छलैक, किन्तु कोनो कथा हो मनोरंजन तं पाठकके विचारक अनुकूल होइत अछि। युग चेता कथाकार ललितकें प्राय: एहि बात पर ध्यान नहि गेलनि।

एहि उपन्यासमे विसेखीक पुतोहु आ गेनबा (विसेखी जेठ बेटा)क पत्नी बेनीक चरित्र अद्भुत अछि। ओ कम वजैए, हमेशा काज मे लागलि रहैत अछि। कखनो अपन ननदि संग परिहास करैए वा कोनो पारवारिक बेगरताक गप करैए। ओकर गतिविधि ओ स्वाभिमान सं ई देखाओल गेलए जे ओ अपन पति गेनुवासं त' एकनिष्ठ प्रेम करिते अछि, ओ ओहि सम्पूर्ण परिवारसं प्रेम करैए। जखन सिपाही दुरजोधन सिंह सं बिजलीक इज्जत बचेबाक लेल, क्रोधमे सरुपा ओकर हत्या के दैत छैक त' पुत्रक मोह विसेखीके तेना ग्रसित करैत छैक जे ओ ओकर हत्याक आरोप अपना पर ल लेत अछि आ ओकरा जेल भ' जाइ छै जाहिठाम ओ भयंकर रोगक चपेट मे आबि मरि जाइए। आगू भूमि संघर्ष मे गेनबा सेहो मारल जाइए। युवती बेनी अथाह करुणा सागर डूबियो क' ओहि घरक अनुकूल कार्य करैत जीवन जीबैत अछि, ओकरा अपन सासुरक घर ओकरा अपन घर बुझाइत छैक, ओकरा ओ कोना छोड़त। पति मृत्यु ओ बेटाक हत्यासं शोकाकुल ओ अपन सासु के कोना छोड़ि देत? एक विवेकपूर्ण संवेदनशील नारीक रूप मे ओकर चरित्र के उपन्यासकार गढ़लनि अछि। बेनीक बाप ओकरा ओहिठाम सं ल' आनि संबंध करब' चाहैए किन्तु बेनी अड़ि अछि, ओ नहि जाइए। सभ काज पूर्ववत करैत अछि, से पूरा साकांच भेलि जे कोनो बात ओकर सासु के अधलाह नहि लगैक। ओ अपना विषयमे नहि अपन परिवारक विषयमे सोचैए। उपन्यासकार ई देखौलनि अछि जे प्रेम मात्र कोनो व्यक्तिसं मात्र नहि होइ छै ओ स्थान, ओहि स्थानक लोक आ ओहि परिवेश सं सेहो होइत छैक। यैह कारण अछि जे बेनी अपन भविष्य लेल नहि सोचि ओहि परिवार लेल सोचैत अछि। एहि सोच संग ओकरा आर कोनो भाव मन मे नहि छै। सरुपाक प्रति प्रेम स्रोत त' तखन फुटै छै जखन बिजली ओकरा ओहि लेल प्रेरित करै छै आ सासुक मन सेहो छै जे ओ सरुपासं संबंधक' ओकर परिवार राखि लैक। एहि तरहें बेनीक चरित्र एकटा आदर्श नारीक रूप मे प्रस्तुत अछि, जे स्त्रीक सोचके पारिवारिक बनबैत अछि। सरुपा आ बेनीक प्रेमकें आगू जाहि तरहें सांकेतिक रूपमे बढ़ाओल गेल ए ओ अपूर्व अछि।

असलमे पृथ्वीपुत्र उपन्यास कृषक वर्गक जागरणक कथा थिक, जाहिमे ललित ओकर संघर्ष ओकर दुख ओ त्याग कें देखबैत ओकरामे अपन अधिकार प्रति जे जागरण होयबाक चाही ओ देखौलनि अछि। जमीन्दार संग लड़ाइ मे विसेखीक परिवारक बड़ क्षति होइत छैक किन्तु अन्त मे जीत होइत छैक।

वर्तमान समय मे खेती सं जुड़ल लोक खेती सं पलायन क' रहलए, जे भविष्य लेल बहुत चिन्तनीय अछि। ओकर कारण जे किसान अपन खेती कार्य सं नहि, अपन संघर्षक शक्ति सं सेहो पलायन क' रहल अछि, जत' ओकरा सुख भेटबाक आशा छै ओत' जारहलए, मुदा प्रश्न अछि खेति-विमुखता मनुक्ख के हेतु संकट नहि उत्पन्न करत? अन्न बिना मनुक्ख की खायत, कोना जीअत। प्लास्टिकक आटा आ चाउर मनुक्खके जीआक' राखि सकत?

हमरा जनैत पृथ्वीपुत्रक कृषकके जे कृषिक प्रति जुड़ाव छलै अपन स्थिति सं लड़बा शक्ति जे ललित अपन पात्रके प्रदान कयलनि ओकर फेर की आवश्यकता नहि छैक? एहना स्थिति मे मैथिली मे कृषि आधारित कोनो रचनाक महत्व, खास क' क' ओहि रचनाक महत्व, आर बढ़ि जायत जे पलायन सं लड़बाक हिम्मत भरबा मे आगू आओत। जाहिमे पृथ्वीपुत्र क महत्व स्वत: सिद्ध अछि। ■

पृथ्वीपुत्रक कृषकके जे कृषिक प्रति जुड़ाव छलै अपन स्थिति सं लड़बा शक्ति जे ललित अपन पात्रके प्रदान कयलनि ओकर फेर की आवश्यकता नहि छैक? एहना स्थिति मे मैथिली मे कृषि आधारित कोनो रचनाक महत्व, खास क' क' ओहि रचनाक महत्व, आर बढ़ि जायत जे पलायन सं लड़बाक हिम्मत भरबा मे आगू आओत। जाहिमे पृथ्वीपुत्र क महत्व स्वत: सिद्ध अछि।

संदर्भ

1. रमानाथ झा, पृथ्वीपुत्रक भूमिका
2. पृथ्वीपुत्र
3. पृथ्वीपुत्र
4. पृथ्वीपुत्र
5. दैनिक जागरण: 22 अप्रैल, 2019 पृ.सं.-11
6. अशोक: मैथिली (पत्रिका) 2010: मैथिली साहित्य परिषद: विश्वविद्यालय मैथिली विभाग (ल.ना.मि. विश्वविद्यालय दरभंगा): 5, पृ. सं. 63

खोंता आ चिड़ै : दलित विमर्शक सफल उपन्यास

✍ **सोनू कुमार झा**

कहल जाइत अछि जे साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि। मुदा हमर मानब अछि जे साहित्य समाजक सापेक्ष होइत अछि। कारण जे दर्पणमे त' प्रतिबिम्ब उल्टा देखाइत अछि। आ साहित्य त' समाजक समानांतर चलैत अछि। प्रो. मायानंद मिश्रक उपन्यास खोंता आ चिड़ै एहि तरहक उपन्यास अछि। जाहिमे तत्कालीन समाजक सजीव, सचित्र, विशद वर्णन भेटैत अछि।

ओना त' प्रोफेसर मायानंद मिश्रक लेखनी साहित्यक सभ विधामे समान रूपसं चललनि। ई जेहने ससक्त कथाकार छथि तेहने मांजल कवि। जेहने समीक्षक छलाह, तेहने उपन्यासकार सेहो। आ तेहने गीतकार सेहो। कोनो कार्यक्रमक मंच पर हिनक उपस्थिति मात्र सं कार्यक्रमक सफलताक गारंटीक भ' जाइत छल। हिनक वाक्चातुर्यता, वाक्यविन्यास, शब्दक चयन जहिना मंचके जीवंत क' दैत छल। तहिना उपन्यासके सेहो सजीव बना दैत अछि। किएक त' 'उपन्यास जीवनक सूक्ष्म विवेचन उपस्थित करैत अछि अर्थात, जाहि विधामे जीवनक विविध पक्षकें विविध दृष्टिकोणसं देखि ओकर विस्तारके देखि बुझबाक चेष्टा कएल जाए से उपन्यास भेल।' प्रोफेसर मायानंद मिश्रक चारिगोट उपन्यास अछि - बिहाडि पात पाथर, खोंता आ चिड़ै, मंत्रपुत्र आ सूर्यास्त। चारु उपन्यास एक पर एक अछि। चारु उपन्यास काल पात्रक अनुसार युगक प्रतिनिधित्व करैत अछि। मुदा एहिठाम हम मात्र हुनक 'खोंता आ चिड़ै'क मादे गप्प करब।

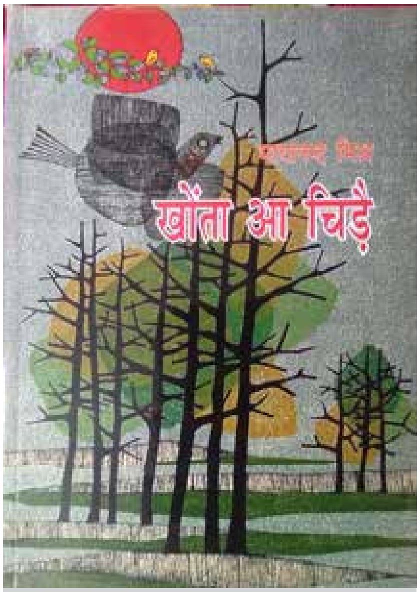

खोता आ चिड़ै

रचनाकार	:	मायानंद मिश्र
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक,
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	68
विधा	:	उपन्यास

'खोंता आ चिड़ै' सामाजिक उपन्यास अछि। जाहिमे 80-90 के दशक मे समाज मे भ' रहल परिवर्तनक बात कहल गेल अछि। नब्बे के दशक अबैत-अबैत समूचा देशमे एकटा क्रांतिकारी परिवर्तन जकां भेल। जकर असर मैथिल समाज पर सेहो पड़ल। तथाकथित महंथ सभक आसन डोल' लागल छल। आ मेहनत-मजदूरी केनिहार जे लोक छल, ओ अपना के चिन्ह' लागल छल। ओकरा अपन मेहनतक परिणामसं परिचय भ' रहल छलै। आ तकरे गप्प करैत अछि उपन्यास 'खोंता आ चिड़ै'।

'खोंता आ चिड़ै' प्रकाशनसं पूर्व जकर नाम 'नब घर उठे छल'। प्रायः मैथिलीक ई पहिल उपन्यास अछि, जाहिमे ब्राह्मणेतर समाजक नायक नायिका अछि। ई पहिल उपन्यास अछि जाहिमे धानुक समाजक प्रगतिशील विचारधाराक गप्प कएल गेल अछि।

'खोंता आ चिड़ै' उपन्यासक पात्र सभमे नायक सिरीलाल नायिका दुखनी गामक जमींदार कपिल बाबूक, मिसरी लाल, तुरंता, नकछेदी मड़र आदि। एहि उपन्यासक मुख्य कथा मे ढहैत सामंतवादीक कथा, विकसित होइत निम्नवर्गक सोचक कथा अछि। अदौसं उच्चवर्गक शोषणक त'रमे दबाएल कियोट-धनुकक सोच आब परिवर्तित भ' गेल अछि। सिरीलाल, तुरंता प्रभृति पात्र जे अपन अधिकारक हेतु संघर्ष करैत अछि, ओ सब आब भार उठयबासं मना क' देने अछि। ओ सब आब बुझि गेल अछि जे हमरे मेहनतिक ब'ल पर उच्चवर्गक गुजर चलैत छैक। ओकरा सभके आब बाभनक जमीन बटाई करबाक कोनो प्रयोजन नहि छैक। ओकरो सभके आब भूदान बला जमीन भेटतैक, मने सभके अपन जमीन हेतैक। ओहो सभ आब बुझि गेल अछि जे जखन मेहनते क' क' खाएब, त' कतहु करब। ओकरा सभक विकसित सोच निम्न वाक्यसं स्पष्ट भ' जाइत अछि। जखन कपिल

सोनू कुमार झा युवा कथाकार छथि। मायानंद मिश्रक उपन्यासक विश्लेषण आ मूल्यांकन पर ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय (दरभंगा) सं पीएचडी उपाधि प्राप्त कयलनि अछि।

***संपर्क** : हरिनगर, मधुबनी, **मो.** : 8877765673, 6202649608, **ईमेल** : sk.sonujha@gmail.com*

बाबू सिरिलालक बापके अनाज बांटि क' नै दैत छै - 'तखन की? गाममे की बाभने सभके एकटा जमीन छै? जखन बटैये करतै तखन अनके करतै'। ततबे नही ओकरो सभक आत्म सम्मान जागि गेल छै। ओहो सब आब अपनाके चिन्ह' लागल अछि। आ तें ओ कहैत अछि- 'भले सार सब बौआ क' मरता। छोटका के की, दू सांझ सहिये जायत। ओकरा सभकें त' मलगोबे चाही'। एहि बातसं स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ओकरा सभमे नव जागरण आबि गेल अछि। खास क' युवावर्ग ओहि परिपाटी के बदलि देब' चाहैत अछि, मोड़ि देब' चाहैत अछि ओहि बिहाड़िक दिशाके जाहिमे सब दिनसं ओकर घर-परिवार, इज्जति-आबरू उधियाइत रहल अछि। असलमे मायानंद मिश्र एहि उपन्यासक माध्यमसं ओहि वर्गक चित्रांकन करबा मे सफल भेल छथि, जकरा समाज द्वारा निम्न स्तर प्राप्त छैक।

ई उपन्यास जत' एक दिस ढहैत सामंतवादीक कथा कहैत अछि, ओतहि दोसर दिस एहि उपन्यासमे मूल कथाक समानांतर पटकथा सेहो चलैत अछि। जे विशुद्ध प्रेम कथा पर आधारित अछि। एहि उपन्यासक नायिका दुखनी जे यौवनक उत्ताल तरंग पर तरंगित भ' समुद्रक लहरि जेकां उफान पर छैक। आ ओकर पति एखन परिपक्व युवावस्था के प्राप्त नै क' सकल छै। जकरासं दुखनीक कामवासनाक पूर्ति होइतै। दुखनी कामवासनाक ओहि धाहमे जखन धधकैत रहैत अछि। तेहने समयमे ओकरा अपन नैहरे मे सिरीलालसं भेंट होइत छैक, जे की सिरिलालक नानागाम छैक।

एक दिन सिरीलाल नानागाममे नानाक संग ह'र जोतबाक लेल बाध जाइत अछि।

आइ सम्पूर्ण साहित्य जत' दलित विमर्शक बात क' रहल अछि। ओहिठाम 'खोंता आ चिड़ै' एकटा सफल उपन्यास अछि। कतहु सं उबाऊ नहि। एक बैसकीमे पढ़ाए बला उपन्यास। एहि उपन्यासक शब्द सब सेहो ठेठ मैथिलीक शब्द अछि।

दुखनी सेहो अपन बापक पनिपियाइ ल' क' अबैत अछि। ओतहि दुनूकें भेंट होइत छैक। दुनू पानि लाब' इनार पर जाइत अछि। इनारसं पानि भरबा काल रस्सी छोट परि जाइत अछि। तहन सिरीलाल दुखनीक आंचर बान्हि दैत अछि। डोल इनारमे नीचां खसितहि दुखनिक सम्पूर्ण शरीर उघार भ जाइत अछि। से देखितहि सिरिलालक सम्पूर्ण शरीर रोमांचित भ' जाइत छैक। आ ओतहि दुनूक बीच प्रेमक बिया छिड़िया जाइत छैक। दुनू एक दोसरसं नेह कर' लगैत अछि। दुखनीके अपन कामवासनाक तृप्ति हेतु सिरीलाल उपयुक्त बुझाइत छैक। तें ओ ओकरासं पहिने चोराक' भेंट करैत अछि। आ बादमे सिरीलालसं संबंध सेहो क'र' चाहैत अछि। सिरीलाल सेहो दुखनिसं बहुत प्रेम करैत अछि। जखन की ओकर बिधवा भौजी सेहो ओकरेसं संबंध क'र' चाहैत अछि। मुदा सिरीलाल त' दुखनीसं नेह करैत अछि। आ ओकरे संग संबंध सेहो क'र' चाहैत अछि। आ एक दिन धान कटैत काल योजना बनाक' दुखनी अपन नैहर चलि जाइत अछि। जत' सिरीलाल जेतै आ ओकरासं संबंध करतैक।

मुदा ई उपन्यास एक बेर फेर मोड़ लैत अछि। जत' दुखनीके विशुद्ध मैथिल ललनाक रूपमे चित्रित कएल गेल अछि। जे सब दु:ख सहितो अपन पतिके परमेश्वर बुझैत अछि। दुखनीक ह्रदय तखन विह्वल भ' जाइत छैक। कामवासनाक धाहमे जे ओकर देह जरि रहल छलैक। ओही धाहसं जेना ओकर मोन मोम जेकां तखन पिघलि जाइत छैक। जखन ओकर घरबला मिसरी लाल ओकर सिनेहक प्रतीक कनौसी ओकरा घुमब' अबैत छैक। दुखनी अपन निर्णय बदलि लैत अछि। आ ओ अपन घरबला मिसरीलालक संग आपस भ' जाइत अछि। एकटा चिड़ै चहकैत सांझ होइसं पहिनहि अपन खोंतामे घुरि अबैत अछि- 'मय! दुखनी बीचमे चिचिया उठलै। नै पढही गारि हम संबंध नै करबै, हम एखन चल जेबै- ई बौस' एलै अछि ने? चलौ हम एखने एकरा संग चल जेबै'। दुखनी घर जाइत अछि। अपन दोसर खंड नूआ ल' क' बहराइत अछि। आ मिसरीलालक डेन पकड़ि क' उठबैत बिहाड़ि जेकां बिदा भ' जाइत अछि। आ एतहि आबिक' उपन्यासक नाम 'खोंता आ चिड़ै' सार्थक भ' जाइत अछि।

आइ सम्पूर्ण साहित्य जत' दलित विमर्शक बात क' रहल अछि। ओहिठाम 'खोंता आ चिड़ै' एकटा सफल उपन्यास अछि। कतहु सं उबाऊ नहि। एक बैसकीमे पढ़ाए बला उपन्यास। एहि उपन्यासक शब्द सब सेहो ठेठ मैथिलीक शब्द अछि। एहि उपन्यासक माध्यमसं जाहि समाजके देखेबाक प्रयास कएल गेल अछि, से आइ फलीभूत भ' रहल अछि। आ यैह एहि उपन्यासक सार्थकता अछि। ■

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि।

- संपादक

गुलोक भाषा-शैली

✍ डॉ. अरुण कुमार सिंह

बिनु कोनो लागि-लपेटक एकटा बात कह' चाहब जे वैदिक आ लौकिकक फेरामे रहने बिनु जलखै, कलो आ बेरहट दिस जाइत मैथिली भाषाक स्वरूपकें अंगीकार करब बेस समीचीन बुझना जाइछ। ओनाहुं भाषा व्यक्तिगत सम्पत्ति नहि वरन् सामाजिक सम्पत्तिक रूपमे स्वीकार्य हैब बेस उपयुक्त। जुलाई-सितम्बर 2016 क 'घर-बाहर' मे 'संवदेनाक कथाक उपन्यास' नामक विचार मे डॉ. भीमनाथ झाजी लिखैत छथि- ''भाषाक पसार सेहो बढ़ल अछि एम्हर। पहिने साहित्यमे आलंकारिक भाषाक युग छल। पछाति ई अनुशासन शिथिल भेल तैयो जनसामान्यक भाषा आ साहित्यक भाषामे किछु दूरी राखल गेल। एहि शताब्दी मे, कहक चाही तकरा पाटि देल गेल अछि। आब जे जहिना बजैत अछि, तहिना लिखैत अछि आ सेहे साहित्य बनैत अछि। कथा आ उपन्यासमे तं अरबधि क' ई क्रिया आरंभ तं भेल पहिनहिं, किन्तु व्यापक भेल अछि एम्हर आबि।'' एहि संबंध मे एहि पंक्तिक लेखक 'विदेह' ई पत्रिकाक 107म अंक मे लिखैत छथि- ''भाषा अपन समाजक संप्रेषणक अन्यतम साधन थिक। एकर माध्यमसं वर्तमान एवं अतीतकें परखल जा' सकैछ, संगहि ओकर भूत एवं वर्तमानक पृष्ठभूमि पर भविष्य कें देखल जा सकैत अछि। भाषाकें भाषेक माध्यमसं बुझल जाइछ। हमसब एकर सही क्षमताकें नहि आंकि दिगभ्रमित भ' जाइत छी। अंतत: समाजकें बहुत रास चीज गमाकें एकर क्षतिक आकलन करए पड़ैत छैक, जेकि कोनो भाषाक विकासकें अवरुद्ध ओ गतिहीन बनबैछ।''

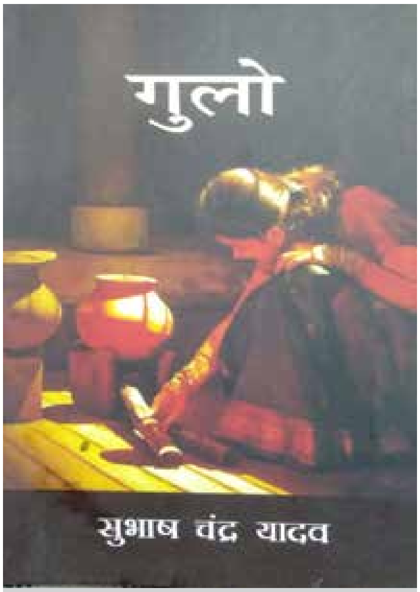

गुलो

रचनाकार	:	सुभाषचंद्र यादव
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2015
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	83
विधा	:	उपन्यास

भाषा अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम अछि। अभिव्यक्ति कोनो व्यक्तिक भाव-विचार, आशा- आकांक्षा आ इच्छाक होइत अछि। एहि तरहें शैलीक संबंध भाषेसं होइछ। जखन रचनामे भाषा शैली पर ध्यान केंद्रित कयल जाइत अछि तें ओकर अर्थ यैह होइत अछि जे रचनामे भाषा-प्रवाह केहन अछि? कोनो रचनाकारक शक्ति वा सामर्थ्य हुनक भाषा एवं शैलियेटा। मात्र होइत अछि, जे वैशिष्ट्यक संग अपन फराक पहिचान बनबैत अछि। एकरे ध्यान मे राखि हम अपन प्रस्तुत आलेखमे सुभाषचन्द्र यादवक 'गुलो' उपन्यासक भाषा-शैली पर विचार करब अर्थात् सुभाष बाबू अपन रचनाक माध्यमे समग्र मैथिली प्रेमीकें विचार करबाक लेल बाध्य कयलनि अछि।

जन-साधारणक साहित्य मिथिलाक बहुसंख्यक जन-मजदूर-खेतिहरक भाषामे लिखल जायब बेस अपेक्षित अछि। सम्पूर्ण मिथिलांचलक जन-साधारण लोकक भाषा मैथिली अछि। जन-मजदूर-खेतिहरक आशा, आकांक्षा, दुख-सुख कें अभिव्यक्ति देमयवला साहित्य जन-साधारणक साहित्य कहाबैत अछि आ ओ अपन जातीय स्वरूपकें अभिव्यक्त करैत अछि, कियैक तं भाषाक आधार जातीय होइत अछि। विजय बहादुर सिंह विरचित 'नागार्जुन का रचना-संसार' नामक पोथी मे भाषाक

डॉ. अरुण कुमार सिंह भारत सेवक समाज कॉलेज, सुपौल केर मैथिली विभाग मे सहायक प्राध्यापक आ विभागाध्यक्ष छथि। पूर्व मे भारती भाषा संस्थान, मैसूर के सेवा द चुकल छथि।
संपर्क : *ग्राम+पो.: अर्राहा, भाया: मठाही, थाना: घैलाढ़, जिला: मधेपुरा (बिहार) पिन-852121*
मो. *9470224944,* ***ईमेल:*** *maithilarun@gmail.com*

मादे नागार्जुन कहैत छथि- ''भाषा की तराश या बुनाबट के लिए इलाहाबाद की भाषा को हम प्रमाण मानते हैं। घुमंतू जीवन रहा, तो जगह-जगह के मुहाबरे भी लिए हैं। जो मजदूरों को सुनानी है, उसमे शब्दों की कसावट को ढीला कर दिया है।''

यैह ठामसं तं सुभाषक भाषा जातीयताक फराक परिचय बनबैत अछि। एहि लेल 'गुलो'क भाषा-स्वरूप जनपदीय विशेषतासं आप्लावित अछि। 1983 मे प्रकाशित 'घरदेखिया' आ 2009 मे प्रकाशित 'बनैत बिगड़ैत' (मैथिली कथा संग्रह)क भाषा मादे विद्वान लेखकसं हुनक मैसूर प्रवासक दौरान हमर जिज्ञासोपरांत ओ कहने कहने छलाह जे हुनक कथामे भाषाक पाछु जनपदीय माहौल रहैत अछि, जकरा हम धरतीक माहौल कहैत छी।

सुभाष अपन जातीय परिवेशमे जनपदीय ठेठ शब्द, बंगला शब्दक संग-संग अंग्रेजी शब्दक समयानुकूल प्रयोग कयलनि अछि। एहिसं हिनक उपन्यासक भाषा बोझिल आ ओझरायल नहि अछि। ठीक एकर उलटा आर स्वाभाविको गेल भ' अछि। हिनक उपन्यासक भाषा सहज आ सरल अछि। हिनक वाक्य प्राय: छोट-छोट होइत अछि। कथ्यक गंभीरताक कारणे हिनक उपन्यासमे भाषिक दांव-पेंच नै के बराबर अछि।

माटिक सुगंधसं बनायल आ गामक अस्मिता उपन्यासकारक प्रेरक तथ्य रहल अछि। ओही जनपदक जीवनी कार्यशीलताकें मात्र भाषेक माध्यमे जानब संभव होइत अछि। एहि दिशामे शमशेर सिंह नरूला विरचित 'हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का तुलनात्मक इतिहास' नामक पोथीक पृष्ठ संख्या 134क ई कथन ध्यातव्य अछि- ''भाषा स्वयं जीवन का स्वाभाविक फल है, चूंकि जीवन उसे उत्पन्न करता है अतएव नहीं उसका पालन पोषण भी करता है। किसी भाषा को उसे बोलने वाली जनता से अलग हटाकर स्वतंत्र और इंद्रियातीत समझना भूल है। उसकी जड़ें जन-जन की चेतना मे गहराई तक पहुंची रहती हैं। सत्य तो यह है कि भाषा कार्यरत जीवन और सक्रिय जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।''

एहि परिप्रेक्ष्यमे विद्यानिवास मिश्र - धर्मयुग 7-13 मई 1978क ई मत ध्यातव्य अछि, ''रचने की प्रक्रिया का बोध भाषा से उदित होता है। जिन्हें अपनी भाषा नहीं मिली वे ज्ञानात्मक परजीवी हैं। ओढ़े हुए यथार्थ पर निर्भर हैं और समाज की जटिलताओं को समझने मे असमर्थ हैं।''

सुभाष अपन जातीय परिवेशमे जनपदीय ठेठ शब्द, बंगला शब्दक संग-संग अंग्रेजी शब्दक समयानुकूल प्रयोग कयलनि अछि। एहिसं हिनक उपन्यासक भाषा बोझिल आ ओझरायल नहि अछि। ठीक एकर उलटा आर स्वाभाविको गेल भ' अछि। हिनक उपन्यासक भाषा सहज आ सरल अछि। हिनक वाक्य प्राय: छोट-छोट होइत अछि। कथ्यक गंभीरताक कारणे हिनक उपन्यासमे भाषिक दांव-पेंच नै के बराबर अछि।

केदार कानन 'गुलोक' उपन्यासक भूमिका 'आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा' मे उपन्यासक भाषा मादे लिखैत छथि जे- ''सुभाषक भाषा अभिजनक भाषाक सामानांतर एक एहन भाषा ठाढ़ भेल जे गरीब-गुरबा, अनपढ़-गमार, आ जनपदक सुच्चा-सुधंग लोकक भाषा थिक। एक एहन भाषा जाहिमे ओकर सुख-दुख, हर्ष-उल्लास, राग-विराग, कामना, गरीबी, आफत-विपत्ति व्यक्त होइत अछि। ई एक एहन मैथिली थिक जकरा बड़का-बड़का ठोप-चानन कथनिहार भाषाकें दूषित करब मानैत छथि। मुदा वास्तविकता एहि सं अलग अछि। मैथिलीक कथा सुभाषक माध्यमे पहिल बेर एहि भाषाक सुगंध ओ सुवासक स्पर्श सं परिचित भेल। यदा-कदा आनो कथाकारक भाषामे एहन बानगी देखल जाइत अछि, मुदा अपन समग्र आ विशिष्ट संदर्भ मे ई सुभाषेक कथा मे प्रकट भेल।

सुभाष स्वयं भाषाविद छथि। अनेक भाषाक जानकार छथि। बहुत गंभीरताक संग अनेक देशी-विदेशी भाषाक ज्ञान अर्जित कयलनि अछि। तें अपना रचना-संसार मे ओ भाषा संबंधी कोनो चूक नहि होब' दैत छथि। हुनका भीतर मिथिलाक सामान्य लोकक हृदय आ मन-मस्तिष्क मे धड़कैत भाषाक जे संसार निर्मित अछि, ओ अपन कथा-रचना मे तकरा व्यक्त करैत छथि।

सुभाष जाहि समाज मे अपन सम्पूर्ण जीवन बितौलनि अछि, जाहि समाजक सुख-दुख मे ओ सहभागी रहलाह अछि, ओहि बहुलांश समाजक जीह पर जे भाषा अठरैत-मठरैत रहल अछि, तकरा व्यक्त कथनिहार कथाकार सुभाष अपन भाषाक कारणे कोनो दर्प नहि पोसैत छथि। भाषा हुनक रचनामे सहज संस्कारक रूपमे व्यक्त होइत अछि।

हमरा ई मानबामे कोनो असौकर्य नहि अछि जे मैथिली साहित्य मे सुभाष पहिल बेर विराट फलक पर ओहि जनपदक भाषाक रूप-दर्शन करौलनि जे एखन धरि साहित्य प्रदेश लेल वर्जित आ निषिद्ध छल।''

एहि तरहें हम देखैत छी जे जनपदीय उपन्यास 'गुलो' मे भाषाक गढ़ण मुख्य रूपसं तीन रूपें परिलक्षित होइत अछि-

1. साहित्यक भाषा
2. सामान्य बोलचालक भाषा
3. जनपदीय भाषा।

एहि उपन्यास मध्य अनेको ठाम साहित्यक काव्यमयी भाषाक लक्षण शैलीक प्रयोग सेहो भेल अछि। जेना- ''हंसइ छै त' बुझाइ छै जेना फूल झड़ैत हो। फूलेसन उज्ज्वल हंसी। निश्छल निर्मल हंसी। इजोरिया जकां छिटकैत।'' पृ.सं. 21

उपरोक्त पांति मे सुभाष बाबू भाषाक जे रूप दर्शाओल अछि ओहिसं हुनक कवि व्यक्तित्वक परिचय सेहो होइत अछि।

संपूर्ण उपन्यास मध्य बहुत रास एहनो पांति अछि, जाहिसं तथाकथित साहित्यक भाषाक परिचय सेहो भेटैछ। यथा- सांझमे विदाई करबै त' गाड़ी अहां क' करय पड़त। पांच टा कुटुमो रहत, तकरो स्वागत-सत्कार करय पड़त। जं अइ ले तैयार छी त' कोनो बात नै।'' पृ.सं. 28

तथाकथित साहित्यक भाषा आ औपन्यासिक कलाक अनुरूप प्रकृतिक मनमोहक दृश्यक वर्णन ठाम-ठाम देखबामे अबैत अछि। यथा- ''आरि पर कएकटा आमक गाछ है। खूब मजरल छै। टिकला धरतै त' गाछियो के ओगरबाहि करय पड़तै।'' पृ. 31

''मलहदक चांप मे मखानक कमौनी। नौ बजे सए तीन बजे धरि भरि ठेंगहुन पानि मे ढूकि क' मखान महक भाकन, करमी, डोका आ घोंघा बीछ क' बाहर करय पड़इ छै।'' पृ. 40

''बेरूपहर जाइत काल मुंहे पर रौद लागे छै। गोसांइ डुमानी धरि कटनी चलै छै। जन सब काटल गहूम खेत मे पांतले छोड़ि क' चलि आबइ-ए।'' पृ. 40

जनपदीय भाषाक अतिरिक्त हुनक भाषामे तद्भव, उर्दू-फारसी, हिंदी, बंगलाक विशिष्ट शब्द, सहचर शब्दक संग-संग अंग्रेजी शब्दक बाहुल्य अछि।

एहने मिलल-जुलल बहुभाषा-भाषी शब्दक परिचय, जाहिमे जनपदीय भाषाक सर्वत्र प्रयोग भेल अछि अर्थात् जनपदीय शब्दक अतिरिक्त आन भाषाक शब्द जतय ताकय पड़ैत हो, ओहन उपन्यासक भाषाकें संपूर्ण रूपें जनपदीय भाषाक नामसं अभिहित करब बेस समीचिन बुझना जाइछ, कियैकतं उपन्यासकार स्वयं जनपदीय लोक छथि एवं क्षेत्र विशेषक भाषाकें साहित्यक मान्यता दियैबा लेल फांर कसि लेलनि अछि। तें 'गुलो' उपन्यास जनपदीय ठेंठ शब्दक रंगीन छटाक संग मनोहारी रूप लए प्रकट भेल अछि। जकरा मिथिलाक सर्वाधिक बाजयवलाक भाषा सेहो कहल जाय सकैत अछि, जे सहज स्वाभाविक अछि। एहन भाषाक प्रयोगसं तद्भाषी व्यक्तित्व आर बेसी निखरि गेल अछि।

'गुलो' उपन्यास जनपदीय ठेंठ शब्दक रंगीन छटाक संग मनोहारी रूप लए प्रकट भेल अछि। जकरा मिथिलाक सर्वाधिक बाजयवलाक भाषा सेहो कहल जाय सकैत अछि, जे सहज स्वाभाविक अछि। एहन भाषाक प्रयोगसं तद्भाषी व्यक्तित्व आर बेसी निखरि गेल अछि।

अंग्रेजी शब्दक प्रयोग

डूटी, डांस, एडभांस, मोबाइल, फिल्टर, ओभरलोड, डीलर, चार्जर, चार्ज, फिलिम, डाउनलोड, फोटो स्टेट, फोटो, कमिटी सेंटर, आइसक्रीम, मीटिंग, वाड कमिशनर आदि।

''फिलिम आ गाना डाउनलोड, करइ-ए। फोटो एसटेट करइ-ए। फोटो खींचइ-ए। ...एकटा लैपटॉप के इंटरनेट कनेक्शन छै। नेट पर सरफिंग/सरचिंग करैत-करैत ओकरा बहुत रास बीमारी आ इलाजक जानकारी भाए गेल छै।'' पृ. 35

उर्दू फारसी मिश्रित शब्दक प्रयोग

''ई सब हिन्नू हइ कि मुसलमान? आगो दइ हइ आ दफनो करइ हइ! या अल्लाह! तू देखलहु ना। एक बार गाड़ के ले गेलई। ...मरल इनसान का ऐसा बेइज्जती! अल्लाह हो अल्लाह!'' पं. 78

बंगला शब्दक प्रयोग

''मुनीलाल, हम कोहने नेही सोकता तुम चाकरी कोरो ना चाकरी छोड़ दो। तोमार मोरजी।'' पृ. 20

हिन्दीक प्रयोग :

हमर बाप जकां केकर बाप है। बड़का-बड़का एमपी मिनिस्टर के लाइन लगा दिया। कतेको आदमी के बाप मरा। एतेक गाड़ी-घोड़ा ककरो दुआर पर लगा? के बोला रे? कोन समाज हमरा लए की करता है? साला! हम अपना बाप का खाता है। अपना बाप का पीता है। दोसर के किए फाटता है।'' पृ. 81

विशिष्ट शब्दक प्रयोग

''ओकर परिवार मे सब चहक्कर छै। दू बेर भोर आ दू बेर सांझ चाहबे करी।'' पृ. 20

''यैह ओकर बपौती छियै। बाप-पुरखाक छोड़ल और कुइछ नै छै।'' पृ. 21

सहचर शब्दक प्रयोग

बाल-बच्चा, बड़का-बड़का, सखा-संतान, चरफर-चलाक, लोहा-लक्कड़, बाप-पुरखा, टुकुर-टुकुर, टहल-टिकोरा, बैठल-बैठल बात-कथा, दाब-दाब, पच-पच, अल्लू-तल्लू, लूलू-थूथू, टुकदुम-टुकदुम, नहियो-नहियो, पीऐत-पीऐत, खाना-पानी, गोट-गोट, बजैत-बजैत, दिन-देखार, गोट-गोट-

''गोट-गोट बराती क' मूड़ा भेटलै। दिन-देखार कनियां अपन घर नै जा सकइ-ए।'' पृ. 28

अपशब्दक प्रयोग

''साले देखबहक? एक्के ससपेन मे मुंह तोड़ि देबह।'' पृ. 18

''रे साला! तू मारलिही किए? लहरले चेला दियो चानि पर? साला, जेठ-छोट के एको पैसा विचार नै! कहैत रहलिए निमकीन मूस लए गेल हेतौ।

मगर ई सार बूझय तब ने।'' पृ. 23

''चुप रह। तुहू कोनो कम नै छै। ई त' हरामी छेबे करै।'' पृ. 24

''मादरचोद! तोरा कुछो बुझाइ छौ? कोय कुइछ कहि देलक कि दौड़ल ओइ पाछू।'' पृ. 48

जनपदीय ठेंठ शब्दक प्रयोग

बैठल, भीड़ि, अनसा, काम, रोटी, कठुआयल, कोय, आतरघ, अल्लू, धारी, मौस, जखैन, बेराम, बिलाउज, जरना, पोल्हाकए, गहिंको, चाह, झगड़पन, ओनय, सराती, बाभन, बियाह, बराती, काए, रेवाज, भगिना, लेलही, आनलिही, तबे, सिपौल, एनमेन, झगड़, तीरथ...

''ओकर माय चिचिआइ छै- 'माय गे माय! ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।'

'नै ओढ़ै छी। भरि के लेटा जेतै।'' पृ. 17

''कहलिही रहय जे भोरे दाए देबह। आब कहै छिही दस बजे! अच्छा जो दसो देख लै छिऔ।'' पृ. 18

''ओकरा पोल्हा क' राखइ-ए।

दारू पी क' जायत त' झगड़दन आ मारिपीट करत।

दारू पीनाइ होइ त' ओनय सए घूरिकए आबय...'' पृ. 27

''कपड़ा सिपौल मे कीन देबै।

एनमेन चानिए जकां लागै।'' पृ. 29

सुभाष अधिकांशतः सामान्य बोलचालक सर्वग्राह्य भाषाक प्रयोग कयलनि अछि। हुनक उपन्यास जनपदीय होयबाक कारणे किलष्टता दिस अग्रसरित नहि अछि। हुनक भाषा सोझ आ व्यावहारिक अछि, सामान्य बोलचालक।

''दुनू ननदि-भौजाइ एकदम भोरे चाह पी क' चलि दइए। संग मे एक बोतल पानि छै। कोसी चौक के दस-बारहटा और जनीजाति गहूम काटय जा रहल-ए।'' पृ. 40

''एक दिन कटनी काए घुरैत-घुरैत राति के आठ बाजि गेले। गुलो बजार गेल रहै। रिनियां क' बड़ जोर भूख लागि गेलै। बबा रहितिए त' एक-दू टका मांगि क' कुइछ खाय लइत। गुलो आ उमेशबा के दोकान आमने सामने छै। रिनियां देखलक उमेशबा के बेटी दोकान पर असकरे छै। लग गेल आ कहलकै- 'हेगे! कने पकौड़ी देने। बड़ भूख लागल-ए।'' पृ. 41

उपरोक्त गद्यांश मे कोनो शब्द एहन नहि अछि जे सर्वसाधारणकें बुझल नहि हो। एहि भाषामे तत्सम् वा साहित्यक शब्दाबली नहि अछि। साहित्यक कोटिसं हटिकए ई ओहन भाषा अछि, जाहिमे समाजक अंतिम पांति पर ठाढ़ लोकक मानसिकताकें ध्यानमे राखि गढ़ल गेल अछि। एतबे नहि, एहि उपन्यास मध्य भाषाक किलष्टता कतहु नहि आबि पाओल अछि। बातचीतक लेल ओहने सामान्य शब्दावलीक, वाक्यक प्रयोग भेल अछि, जाहिसं कोनो बात बुझबामे वा कथाक तारतम्य बुझबामे बेसी दिक्कत नहि होइछ। एहिमे शब्दक जटिलता सं भाषाकें ओझरायल नहि गेल अछि, वरन सरल आ व्यावहारिक भाषेक उपयोग कयल गेल अछि, जाहिसं कथन सहज आ स्वाभाविक बनि पड़ल अछि।

कोनो शब्द एहन नहि अछि जे सर्वसाधारणकें बुझल नहि हो। एहि भाषामे तत्सम् वा साहित्यक शब्दाबली नहि अछि। साहित्यक कोटिसं हटिकए ई ओहन भाषा अछि, जाहिमे समाजक अंतिम पांति पर ठाढ़ लोकक मानसिकताकें ध्यानमे राखि गढ़ल गेल अछि। एतबे नहि, एहि उपन्यास मध्य भाषाक किलष्टता कतहु नहि आबि पाओल अछि।

सुभाष जनपदीय जीवनकें लगसं देखलनि, परखलनि आ जानलनि अछि अर्थात् सम्पूर्ण रूपें जनपदीय जीवन जिलैनि अछि तें हिनक कथा संसार मे जनपदीय भाषाक प्रयोग बखूबी भेल अछि। उपरोक्त उदाहरण- प्रत्युदाहरण ामे प्रयुक्त पांति वा शब्दसभक माध्यमसं विषयक चित्रण मे जीवंतता आबि गेल अछि। एहन शब्दक प्रयोग सं भाषामे कतहुं अड़चन वा अरुचि पैदा नहि होइछ वरन जनपदीय शब्द आ ओहिसं निर्मित जनपदीय भाषाक प्रयोग सं ठेठ मैथिलीक ठाठ मैथिली साहित्य मध्य दृढ़ताक संग उपस्थिति दर्ज करैत विषयानुरूप बनल अछि।

निष्कर्ष रूपमे कहल जाए सकैत अछि जे सुभाषक भाषा सम्पदा समृद्ध आ समर्थ अछि। हुनक उपन्यास मे प्रयुक्त भाषामे भावना गंहीर रूपें आ अनुभूतिक गहनताक संग उपस्थित अछि। हुनक भाषा जनपदीय शब्दक प्रयोग संग-संग बंगला, उर्दू, हिन्दी आ अंग्रेजी शब्दक प्रयोगक कारणें बेस संवेदनीय आ सम्प्रेषणीय बनि पड़ल अछि। केदार काननक शब्द मे सुभाषचन्द्र यादवक असल पहचान यैह थिक। साधारण बगय-बानि वला लोक, साधारण जीवन जीबैत, जाहि भाषाक प्रयोग अपन घर-आंगन मे करैत अछि, अपन सुख-दुख मे करैत अछि, सुभाषक रचनामे वैह भाषा स्वतः स्फूर्त रूपें अबैत अछि। एहि लेल सुभाष कोनो प्रयास नहि करैत छथि, अपितु ई सहजताक संग अबैत अछि। यैह सहजता सुभाषक निजतो थिक आ विशिष्टता सेहो। पृ. 6

निष्कर्षतः सुभाष एकटा सशक्त समर्थ उपन्यासकार छथि जिनका भाषा पर गंहीर पकड़ छन्हि। हुनक भाषा मे ओ सभटा स्वरूप मौजूद अछि, जकर कोनो साहित्यकार कें आवश्यकता रहैत छन्हि। ■

औनायल जिनगीक धरोहर

✍ मुन्ना जी

उजहंत लोक, उपटंत परिवार सुन्न होइत डीह। अनगुजर होइत गाम। खड़-पातक बिलौनी आ रोजगार लेल लोकक छिछियौनी। फेर करोट लैत घर। बदलैत सिरखारीक गाय। खर-पात बला फूसक घर छहो छित। ढहल भीत। गाम मे पुरखा अब निमुधन भेल गिरहतक दास बनवा पर मजबूर, तें मजुरी करैत बीतल जीवन। जुआनी सं बुढ़ापा धरि मालिकक लतियौनी मे। नवका पीढ़ी कान्ह उठौलक। छोड़लक गाम धेलक शहर। अपन श्रम या जुआनीक भरपुर भोग। उपभोग क' रहेंए तनल। आब गामक सिरखारी फिर लै। अऊंठा हाथ दें बला पुरखाक नवका पीढ़ी पढ़ि-लिखि गेल सजग, कुलति बला। तें गाम मे भेल कोठा कोठा मे चिन्हलक कतिएल लोकक महत। गामो मे भेटलै सरकारी बुनियादी सुविधा। आब गामोक लोक आधुनिक तकनीकी, यंत्र आ बिजलीक प्रतापें पबैए हटका पटना, समाचार आ बदलावक स्वर। गाम त' गामे अछि मुदा शहरियल सन।

मैथिलीक बेशी रचनाकार बदलाव कें सुनैत छथि, मुदा गुनै नै छथि। अकानबाक ढोंग रचै छथि। परिणाम उनटा देखा पड़ैए। तकर मुख्य कारण जे मैथिलीक अधि संख्य रचनाकार अभिजात्य वर्ग सं संबंध रखने छथि। जत'क सोच संस्कृति शुरूहे सं बदलाव के पकड़ि के चलैत जा रहल छै। तें ओइ टोलक लोकक सोच गमैया सोचक ढंग शहरिये नै पश्चिमी संस्कार आ

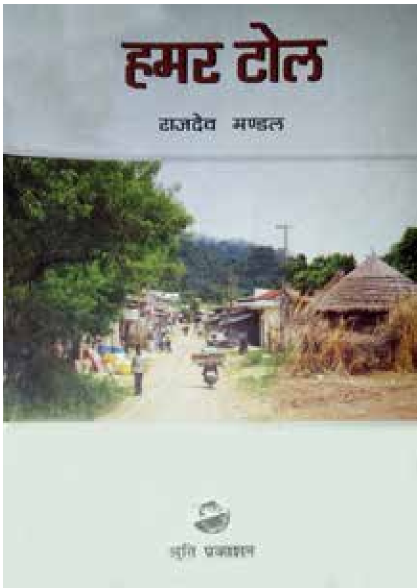

हमर टोल		
रचनाकार	:	रामदेव मंडल
प्रकाशक	:	श्रुति प्रकाशन, दिल्ली
वर्ष	:	2013
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	96
विधा	:	उपन्यास

सभ्यताक संग मिझझर भ' दोगला संस्कार (हाइब्रीड कल्चर) क प्रतीक बनि गेल। ओइ टोलक धियापुता त' छोड़ू प्रौढ़ो लोक सब सनातनी रहन-सहन के कतिया क' अपना कें अगुआ रखने ऐछ। तहन ई लेख जे अपन टोलक जाहि स्थिति परिस्थितिक सत्यता कें देखेबाक आ परखबाक सच्चा प्रयास करैत ऐछ से काबिले तारिफ अछि। किएक त' लेखकक ई टोल धनाढ्यक टोल हाइब्रीड संस्कार बला टोल सं भलहि कतिएल बेराएल हुअए मुदा मिथिलाक माटिक गंध, सुच्चा रहन-सहनक पर्याय बनि उघा रहल अछि।

भगते, डाइन-जोगिन, टोना-टापर अंधविश्वासक प्रतीकक रूप मे चिन्हित कएल जाइत अछि। जे पछुएल मानसिक चिन्तन के देखार करैए।

मुदा तहिया त' गाम घर मे दुसित लोकक विकल्पक रूप मे वेदक संग ओझा आयल छल। हेमनि मे एकर चलन कम भेल मुदा एखनो आंशिक रूपमे विद्यमान अछि। आदिवासी इलाका मे आइयो लोक झाड़फूंक आ टोना टापर पर निर्भर अछि। आर्थिक रूपें समृद्ध राज्य पंजाबक पिण्ड (गाम)क संग शहरो मे मध्यमवर्गीय आ पिछड़ल (जाति आ...) लोक बिमारियो भेल पर नजरि लगबाक शंका मे घेराएल रहैछ। आ ओझाइके मुख्य समाधानक खोज मानेए। ई स्थिति मात्र मिथिले नै वरन् देश भरि मे व्याप्त अछि।

हमर टोल मे सेहो धर्मडीहा वाली निसंतान रहलाक कारणे ढोंगी भगतक कुलस्त्रीक शिकार बनैत-बनैत बचैए। भारतीय समाज मे व्याप्त एहि तरहक अंधविश्वास नै जानि लोक के कहिया धरि गरोसने रहतै। धर्मडीहावालीक नि:संतान हेबाक मुख्य कारण की छै से जनबाक प्रयास कियो नै कए।

(शेष पृष्ठ 36 पर)

मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्ना जी मैथिली साहित्य सं स्नातक (प्रतिष्ठा) उत्तीर्ण छथि। मैथिली मे 400सं बेसी बीहनिकथा लेखन। कविता/हाइकु प्रकाशित। व्यवसाय : अभिकर्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम।

संपर्क : *मिथिला जनरल स्टोर्स, सूरज बिल्डर्स वाली गली, विनय नगर ददसिया रोड, सूर्या विहार-3, सेक्टर-91, फरीदाबाद, (हरियाणा) पिन कोड- 121003,* ***मो.*** *9540095340,* ***ईमेल :*** *manojkumarkarn71@gmail.com*

सामाजिक सरोकार लेल लिखैत छी

✍ सुशांत झा 'अवलोकित'

हम किएक लिखैत छी? प्रश्न बड्ड सुन्नर सन छैक आ ततबै आवश्यक सेहो कोनो लिखनाहर'क लेल। साहित्य लिखए सं बेसी पढ़बाक नाम थिकैक। गाम पर पढ़ए-लिखए बला वातावरण सभ दिन सं रहैक। बाबा हिन्दीक शिक्षक रहथि आ पिता अंग्रेजी शिक्षण सं जुड़ल। आ ताहि सभसं फराक कोनोहु नेनाक पहिल शिक्षक 'माय' छलीह ग्रेजुएट। नेनपने सं विभिन्न तरह केर पत्रिका, चित्रकथा आ कहानी पढ़बाक हिस्सक हमरा भीतर साहित्यक चेतनाक अलख जगेबाक काज ओहिना केलक जेना पैन आ रौदक संग पाबि बिज्जू गाछ होमय लगैत अछि।

दशम कक्षाक बाद गाम सं बहरेलौं आ साहित्य मात्र एकटा विषय बनि क' रहि गेल रहय हमरा लेल। सूचित करी जे हम विज्ञान के विद्यार्थी आ ताहू मे गणित के। हमरा इंजीनियर बनायब हम्मर पिताक स्वप्न रहैन्ह आ हमरा मे अवगति सेहो रहय त हम अभियंत्रण पढ़य लगलहुं। चुकी हम दक्षिणमे अभियंत्रण पढ़लहुं तैं अप्पन लोक कम भेटलाह। मित्र सब सेहो बेसी हिन्दी भाषी रहैथ। ओतय हम बेसी काल एकसरे रहैत रही आ ताबय लोक के मोबाइलक चसक नै लागल रहैक। एकाकीपन के दूर करबाक लेल हम साहित्यक पत्रिका आ उपन्यास गाम पंर सं उघि क' ल' जाय आ जखन समय भेटय पढ़ी।

गप्प 2010 के छैक हम अप्पन पहिल कविता हिन्दी मे लिखलहुं आ संगी सभ के सुनौलियैक त ओ सभ हम्मर बड्ड फझैत केलक। "इह इंजीनियर बनने आया है आ कविता लिखता है।" इ गप्प हमरा छू देलक जे आ इंजीनियर कविता सेहो लिख सकैत अछि से देखाबय खातिर हमरा लिखब शुरू केलहुं। किछु 2-3 टा हिन्दी कविता लिखलाक बाद हम्मर मातृभाषा प्रेम बहरेनाय शुरू भेल कविताक रूपमे जा धरि इंजीनियरिंगमे रही ने कियो सलाह देनिहार रहय आ ने कियो सुननाहर। जकरा कहियै सएह मखौल करय। मुदा माय सभदिन संग दैत रहल। पिताजी के त एखनहुं झरक उठि जाइत छनि सामाजिक परिस्थितिक कारने ओना ओहो हम्मर कविताक प्रसंशक छथि। आ हुनके दुआरे हम आय इ लिखए योग्य भेलहुं जे हम कियैक लिखैत छी। मैथिलीमे अप्पन पहिल कविता हम 'साहित्यांगन तत्वाधानमे' पढ़लहुं। आ तकर बाद हम्मर लेखनक उद्देश्य बदलल। हम नाम लेल लिखय लगलहुं। किछु दिन इहो केलहुं कविता लिखी फेसबुक लाइव आबि ओकरा पढ़ी। खूब वाहवाही भेटल। आब साहित्यक अध्ययन के स्रोत बढ़य लागल छल आ किछु लोकसभ सं भेंट-घांट सेहो होमय लागल। बहुत रास लोक सं प्रोत्साहन आ सिनेह भेटय लागल। हमहुं स्वयं के कवि बुझय लगलियैक...

समय बीतल... आर बेसी साहित्यक अध्ययन करय लगलहुं। ओना साहित्य त' अथाह सागर थिकैक तइयो किछु मोती हमरा हाथ लागल आ हम यथासम्भव अप्पन इंजीनियर बला जिनगी सं जखन पलखति भेटैत अछि सम्प्रतियो पढ़बाक यत्न मे लागल रहैत छी। साहित्यक अध्ययन आ गुणवंत लोकक संगतिमे रहि इ सिखलहुं जे खाली कवि होय लेल कविक सामाजिक दायित्वक निर्वहन आवश्यक छैक। कवि एकटा रचयिता होइ छैक जे निःप्राण शब्द कें अप्पन काव्य कौशल, सामाजिक चेतना, बुद्धि आर कतेको गुण सं गढ़ि अप्पन लेखनी सं ओकर प्राण प्रतिष्ठा करैत छथि। कविता बाजि उठैत, कविता क्रांति करैत अछि कविता सुसुप्तावस्था मे चलि गेल समाज के चरियबैत अछि। कविता गाम लिखैत अइछ। कविता एकटा वृत्ताकार अएना थिकैक जे कारी मुंह के कारी आ गोर के गोर देखबैत छै। आ ओहि अएनाक त्रिज्या आ परिधि निर्धारण करैत छथि कवि। कविता पढ़ब समयक दर्शन करबाक पर्याय थिकैक। खैर, जे से, एतेक ज्ञान भेटलाक बाद फेर हम्मर उद्देश्य बदलल आ हम सामाजिक सरोकार लेल लिखबाक प्रयास केनाइ शुरू केलहुं। आ सम्प्रतियो हम्मर लेखनक उद्देश्य यैह अछि। आगां भ सकैत अछि हम्मर उद्देश्य फेर बदलय। हम एखनहुं स्वयं कें मैथिली रूपी झमटगर गाछक पल्लोक टुस्सीए मानैत छी। हमरा एखन बड्ड पढबाक अछि। बहुत रास सिखबाक अछि। समय द गुणबाक अछि आ तखन जे समय बचत ओहिमे मिथिला लिखबाक अछि।

अन्तमे एतबै कहब,

"देसमे-बिदेसमे वा रहु अकाबोन में
निज मातृभाषा के सदति राखु मोन मे।" ■

लेखक डिजिटल कम्युनिकेशन मे एम.टेक छथि। मैथिली सासहित्य, विशेष क' कविताक प्रति अनुरक्ति छनि। विविध पत्र-पत्रिका आ ई-माध्यममे नियमित प्रकाशित।

संपर्क : *ग्राम+पो. : हरड़ी, जिला: मधुबनी, बिहार, पिन-847404*

मो. *9955006862,* ***ईमेल :*** sushantjha1992@gmail.com

पाठक ओ दर्शकक‍ें सम्मोहित करैत 'सोन कछुआ'

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा

जीवन झाक सुन्दर संयोगसं आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक श्रीगणेश भेल अछि। एत' आधुनिक मानबाक कारण विदित अछि जे ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक आदि विभिन्न तरहक परिवेश आ वस्तुसं फराक होइत नाटक तत्कालीन जीवन बोध आ जीवन सौन्दर्यसं अपनाकें जोड़लक। एहि नाटकसं ईहो स्वीकार कैल गेल जे नाटक दरबारमे राजाक प्रशस्तिपत्र पढ़बाक माध्यमे मात्र नहि थिक अपितु ई सामान्य जनक समस्या आ ओकर जीवन पद्धतिक वर्णन आ विस्तारक माध्यम सेहो बनि सकैत अछि।

जीवन झासं आरंभ भेल नाटक आइ ओहि मोड़ पर स्वयंकें ठाढ़ क' देलक अछि जे समस्याकें बिम्बात्मक रूपमे सेहो वर्णित करैत नाटककें आर रचनात्मक आ कलात्मक स्वरूप प्रदान करैत अछि। नाटक आब गंभीरता आ संवेदनाकें सूक्ष्म विवेचन धरि पहुंचि गेल अछि। सुधांशु शेखर चौधरी, महेन्द्र मलंगिया, गंगेश गुंजन, मंत्रेश्वर झा, अरविन्द अक्कू आदि अनेको नाटककार अपन नाटकक माध्यमसं जनसामान्यक विभिन्न पक्षक चित्र खिंचबामे सफल रहला। एकर अतिरिक्त अनेको आर नाटककारलोकनि भेला जे एहि अभियानक सफल अभियानी प्रमाणित भेला। नाटक जुआन होइत गेल, नाटक लोकक हृदयसं मस्तिष्क धरिक यात्रा तय केलक।

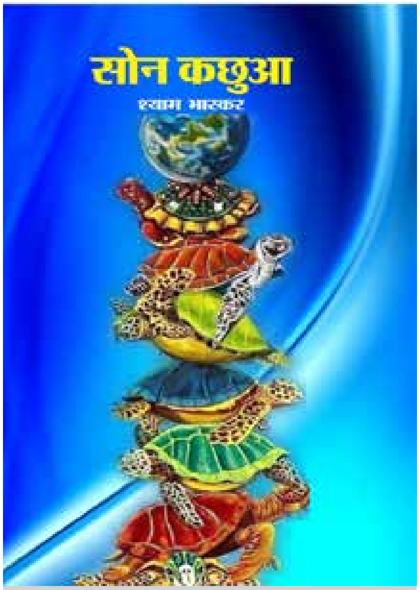

सोन कछुआ

रचनाकार	:	भास्कर श्याम
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	72
विधा	:	नाटक

एकटा बात आरो जे नाटक मात्र पोथीमे लिखल संवादक गुच्छ नहि अछि अपितु नाटक दू ठाम परीक्षित होइत अछि– पहिल लेखनमे आ दोसर मंचनमे। आवश्यक नहि जे दुनू ठाम एकर रेस्पांस एकहि सन भेटय। एकटा नीक नाटक मंचनक स्तर पर असफल भ' सकैत अछि आ एकटा खराप नाट्यालेख मंचनमे सफलता अर्जित क' सकैत अछि।

मुदा किछु नाटककार एहि दुनू परीक्षणमे अत्यधिक सफल रहला अछि जाहिमे उपर्युक्त नाट्य-लेखकक अतिरिक्त आनो बहुत रास नाम अछि। एहि कड़ीमे एकटा जगजियार नाम अछि– श्याम भास्कर।

श्याम भास्कर बहुमुखी प्रतिभाक धनी व्यक्ति छथि जे वृत्तिएं प्राध्यापक आ प्रवृत्तिएं कलाकार छथि। श्याम भास्कर एक संग साहित्य, रगं मंच ओ सिनेमामे अपन सार्थक भूमिकाक निर्वहन करैत छथि। मैथिलीक प्रति हिनक प्रेम एहि बातसं जगजाहिर अछि जे ई मैथिलीकें विस्तार देबाक लेल अपन टेलीफिल्म राजा सलहेस पर बनौलनि जाहिसं किछु जाति विशेषक द्वारा मैथिली पर कैल गेल आधिपत्यसं ई भाषा मुक्त भ' सकै आ मिथिलाक सभजनक भाषाक रूपमे एकर सम्मान होइ। श्याम भास्कर एहिलेल सेहो उल्लेखनीय जे पीरितिया आ फेर हेतै भोर सन मैथिली फिल्मक लेखन आ निर्देशन कैल आ विद्यापति सन उत्कृष्ट रेडियो धारावाहिकक लेखन कैल।

हिनक सद्यःप्रकाशित नाट्य पोथी 'सोन कछुआ' यद्यपि हिनक पहिल पोथी छनि मुदा एहि पोथीक पढ़ला-गुनलाक उपरान्त एहि निष्कर्ष पर सहजहिं पहुंचल

डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा दरभंगा स्थित सीएम साइंस कॉलेजमे सहायक प्राध्यापक छथि। प्रकाशन : 2007 मे लघुकथा संग्रह - 'अहींकें कहै छी' आ 2018 मे कविता संग्रह -'स्वप्नमे इन्द्रधनुष' प्रकाशित। मैथिली आ हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिका आ संग्रहमे अनेक रचना सभ प्रकाशित।

संपर्क : सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, सीएम साइंस कॉलेज, दरभंगा-846 004

मो. 9835684869, ईमेल : satyaprit69@gmail.com

जा सकैत अछि जे एहि पोथीक सृजनक पाछां लेखकक अथाह अनुभव आ अध्ययन रहल छनि। नाटकक समर्पणसं हिनक लेखकीय चमत्कार परिलक्षित होम' लगैत अछि। एहि पोथीकें लेखक ओहि रंगकर्मी आ निर्देशकलोकनिकें समर्पित करैत छथि जे प्रतिकूलसं प्रतिकूल परिस्थितिमे रंगकर्म करैत छथि। एहि पांतिमे लेखकक अपन व्यष्टिगत संघर्ष आ समष्टिगत संघर्षक व्यथा अभिव्यक्त केलनि अछि। रगं कर्म सहज कर्म नहि थिकै, ओहिलेल दीर्घ संघर्षक आवश्यकता होइछ आ एहि संघर्षमे कोनो रंगकर्मीकें अनेकानेक यातना सह' पड़ैत छनि। लेखक स्वयं एकर भुक्तभोगी छथि आ तें समर्पणक बहन्ने ओ अपन रंगकर्म करबाक जिद्दसं उपजल पीड़ाकें रेखांकित करैत छथि।

लेखकीयमे लेखक एकरा एकगोट व्यंग्य नाटक कहैत छथि। हास्य आ व्यंग्यमे घनिष्ठतम सम्बन्ध रहलैक अछि। मुदा व्यंग्यक समाजशास्त्रीय मूल्य होइछ आ व्यंग्य दीर्घजीवी सेहो होइछ। हिनक ई नाटक हास्यसं होइत व्यंग्य धरिक यात्रा करैत अछि। ताहूमे व्यंग्य तेहन जे सोझे मानसपटलकें झंकृत क' दैत अछि। एक-एक दृश्य अनेक तरहक खिस्सा कहैत अछि।

एहि नाटकक कथा मूलतः मिथिला मध्य पसरि गेल पानिक समस्या पर केन्द्रित अछि मुदा ई मात्र पानियेटाक कथा नहि कहैत अछि। पानिकें केन्द्र बना ई अनेकों समस्याकें सोझां अनैत अछि। ई नाटककारक नाट्य सौन्दर्य बोधे थिकैन जे पानिक समस्या उठा ओ समग्र समाजक मानसिक ओ सामाजिक एक्स-रे तैयार करैत छथि।

एहि नाटकक पहिल दृश्यमे पानिक समस्याकें उजागर कैल गेल अछि। मोटरक कनेक्शन जे पहिने शहर धरि सीमित छल तकर आगमन गामोमे भ' गेल अछि। गामक इनार उपेक्षित पड़ल अछि जकर सुधिबुधि लेनिहार कियो नहि रहल आ यैह कारण अछि जे इनारक पानि महकि रहल छै।

दोसर दृश्यमे सेहो सरजू आ गुदड़ी बाबाक माध्यमे पानियेक समस्या पर चर्चा कैल गेल अछि। एहि बीच इनारसं एकटा पदार्थ बहराइत अछि जकरा सभ सोना बुझि लैत अछि। तेसर दृश्यमे एहि सोना पर अपन हक जताब' साबिर मियां सेहो सम्मिलित भ' जाइत अछि। चारिम दृश्यमे सेहो यैह घटना सभ आगां बढ़ैत अछि। पांचम दृश्यसं घटना एकटा नव मोड़ लैत अछि आ हवलदार आ ओकर दूगोट सिपाहीक प्रवेश होइत अछि। तकर बाद एकटा नव अध्याय आरंभ होइत अछि जाहिमे हवलदारक षड्यंत्र शुरू भ' जाइत अछि। एकर बाद दृश्य बदलैत रहैत अछि मुदा समस्या ओहिना रहैत अछि। पानिक समस्याक संग सामाजिक विकृति, छल-प्रपंचक चक्र-कुचक्र चलैत रहैत अछि। आ नाटकमे ओहि सोना पेबाक लेल सभ अपस्यांत रहैत अछि जकर कोनो अस्तित्व नहि। ओत' अंतमे बुधना नामक

लेखक एकरा एकगोट व्यंग्य नाटक कहैत छथि। हास्य आ व्यंग्यमे घनिष्ठतम सम्बन्ध रहलैक अछि। मुदा व्यंग्यक समाजशास्त्रीय मूल्य होइछ आ व्यंग्य दीर्घजीवी सेहो होइछ। हिनक ई नाटक हास्यसं होइत व्यंग्य धरिक यात्रा करैत अछि। ताहूमे व्यंग्य तेहन जे सोझे मानसपटलकें झंकृत क' दैत अछि।

बुधियार बच्चा एहि रहस्य परसं पर्दा हटबैत अछि आ कहैत अछि जे वस्तुतः जकरा सभ सोना बुझैत अछि ओ सोन कछुआ अछि। एहिमे पुलिसक षड्यंत्र, नेताक मूर्खता आदिक कथा भेटैत अछि। नाटकमे कुल सोलह दृश्य अछि जे नाटककें पूर्णांकी नाटकक स्वरूप प्रदान करैत अछि।

ई त' भेल मोटामोटी कथा। आब यदि कथानकक स्तर पर देखी त' एकर कथा गस्सल अछि, कतौ कथाक तार ने त' ओझराइत अछि आ ने टूटैत अछि। संवादक स्तर पर एहि नाटकक संवाद पात्रानुकूल अछि। जे पात्र जेहन अछि ओ ओहने भाषाक प्रयोग करैत अछि। एकगोट मुस्लिम पात्र सेहो नाटकमे उपस्थित छथि जे मियंडी भाषाक प्रयोग करैत छथि। बांकी पात्र उच्चवर्गीय छथि आ बोलचालक प्रचलित भाषाक प्रयोग करैत छथि। संवाद संतुलित अछि जे नाटकक सफल प्रस्तुति लेल अनिवार्य होइछ। नाटकक संवाद ने त' अतिदीर्घ अछि आ ने बहुत छोट। रंगमंचीय कलाकारलोकनिक लेल एहि नाटकक संवाद रटब बेसी दुरूहगर काज नहि अछि। संवाद एक-दोसरसं कड़ी जकां बन्हायल अछि जे प्रस्तुतिसं लखक' संवाद रटबा धरिमे सहयोग करैत अछि।

नाटकक कृष्णपक्षक रूपमे मात्र किछु चीजक चर्च कैल जा सकैत अछि। एकर किछु दृश्य बस्र नम्हर भ' गेल अछि जकरा यदि लेखक चाहितथि त' छोट क' सकैत छला। बात कतौ-कतौ नमरायल सन प्रतीत होइत अछि जकरा यदि संक्षिप्त कैल जइतै त' दृश्य स्वयं छोट भ' जैतै। किछु संवादक सम्बन्ध मूल कथासं नहि छै। एकरो छोट कैल जा सकैत छलै।

मुदा एहि तरहक किछु लघु दोषक अछैतो ई नाटक मैथिली साहित्यक नाट्य संसार आ रंगमंचीय संसारक उपलब्धि मानल जायत। एतेक टटका विषय आ ओकर एतेक सुन्नर ट्रीटमेन्ट एकरा विशिष्ट बनबैत अछि। एकर कारण ई थिक जे श्याम भास्कर एहि नाटकक प्रकाशनक संग नाटककारक रूपमे नहि गांनल जेता अपितु ई नाटककार छथि, सिद्धहस्त नाटककार छथि से सम्पूर्ण मैथिली जगत जनैत अछि। तें हिनक एहि पोथीमे हिनक अनके बरखक तपस्या आ समर्पण झलकि उठैत अछि।

ई नाटक रंगमंचक लेल अपन उपयोगिता अनेक बेर प्रमाणित क' चुकल अछि। जखन ई पुस्तकाकार नहि भेल छल तखने एकरा अनेक राष्ट्रीय ओ अंतर्राष्ट्रीय मंच भेटि गेल छलै। अर्थात् ई परीक्षित भेल नाटक अछि।

एहि तरहें हमरालोकनि देखि सकैत छी जे एहि नाटकक प्रकाशन एहि बरखक नाट्य-साहित्यक एकगोट उपलब्धि मानल जायत। ई नवारम्भ प्रकाशनक एकगोट अनुपम उपहार थिक। ई नाटक पाठक ओ दर्शक दुनूकें समान रूपें रूचिगर लगतैनि। ■

परीक्षोपयोगी आ जानकारीपूर्ण संग्रह

✍ रौशन झा

'देखल जा सकैछ', पोथी के नामहि सं प्रतीत भ' जाइत अछि जे एहिमे आलोचनात्मक निबंध सबहक संग्रह हैत। वा फेर कोनो एहेन तरहक जानकारी देबा के प्रयास कयल गेल हैत जे कि लोक के ज्ञात रहला के बावजूद स्मृतिपटल सं हटि गेल हुअय आ देखला के बाद अनायास याद आबि जाय। निक्की प्रियदर्शिनी जे के ई प्रयास पोथी के माध्यम सं किछु हद तक सफल सेहो भेल अछि। ओना पोथी के कोनो एक विधा पर आंकब उचित नहि। नै त' एकरा सुच्चा निबंध संग्रह कहि सकैत छी आ नै आलोचना। बल्कि एकरा मैथिली साहित्य में एकटा नव प्रयोग कहि त' कोनो अतिश्योक्ति नै।

पोथी के विषय वस्तु के उन्नैस भाग मे बांटल गेल अछि। एहिमे आठ गोट निबंध व्यक्ति आधारित अछि, दू गोट लोक साहित्य पर, तीन गोट पुस्तक समीक्षा अछि त' छह गोट निबंध किछु साहित्यक, सांस्कृतिक आ सामाजिक समस्या सं संबंधित अछि। किछु निबंध समकालीन ज्वलंत विषय पर सेहो अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे निक्की पोथी के माध्यम सं हर तरह के देशकाल आ वातावरण के छूबा के प्रयास कयलनि अछि।

मिथिलांचलमे अनंतकाल सं चलि आबि रहल अछि जे कोनहु शुभ काज विद्यापति के गोसांउनिक गीत के बिना शुरू नहि कयल जाइत अछि। अहि

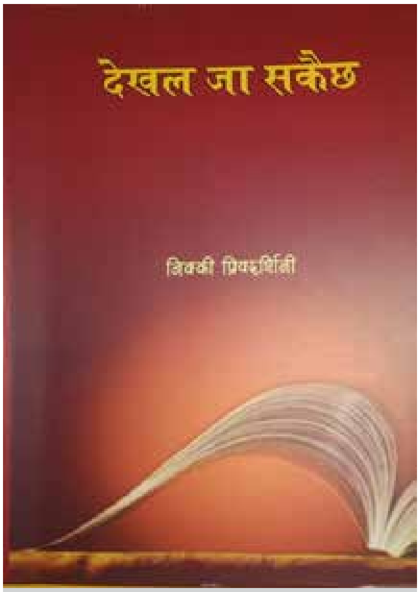

देखल जा सकैछ

रचनाकार	:	निक्की प्रियदर्शनी
प्रकाशक	:	विजया पब्लिकेशन, दिल्ली
वर्ष	:	2014
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	128
विधा	:	निबंध संग्रह

पोथीमे गोसांउनिक गीत त' नहि मुदा विद्यापति पर पहिल अध्याय राखि एकर शुरुआत कयल गेल अछि। 'विद्यापति: भाषाविद ओ इतिहासवेत्ता' शीर्षक सं लिखल गेल अध्यायमे बहुत कम शब्दमे विद्यापति के बारेमे बहुत बेसी जानकारी देबाक कोशिश कयल गेल अछि। लेखक बहुत कम शब्दमे विद्यापति के जीवनकाल आ हुनक रचनासंसार के बारेमे बुझेबामे सफल रहली अछि।

जखन बिहार आ झारखंड एक रहय तखनहु बहुत कम लेखक भेटता, जे मिथिला आ झारखंड के संस्कृति के चर्चा एकठाम करैत होथि। अहि पोथी के अगर सबसं पैघ सफलता कही त' यैह जे लेखक दुनू राज्यक सभ्यता आ संस्कृति के एक संग बुझेबाक कोशिश कयली अछि। 'मिथिला ओ झारखंडक सांस्कृतिक सामीप्य' विषय सं लिखल गेल अध्यायमे गंगा के दुनू राज्यक विभाजन रेखा मानि कए दुनू राज्यक विशेषताक वर्णन कयल गेल अछि। बहुत नीक जकां बुझायल गेल अछि जे झारखंड आ मिथिलामे केहन तरहक फर्क अछि। पोथीमे कहल गेल अछि जे झारखंड के धरती कें रत्नगर्भा कहल जाइत अछि किएक त' एहिठाम कोइला, लोहा, अबरख, बॉक्साइड, तांबा आदि खनिज भंडर पर्याप्त अछि, तहिना मिथिला के धरती के मैदानी इलाका अपन शस्य-श्यामला उर्वरा शक्तिक बलें कृषिकार्यक हेतु उपयुक्त भूमि अछि। जाहिठाम ऋतु अपन शृंगार सं पूरित कए धरती कें उपजाउ बनौलनि अछि। मिथिलामे कृषिकार्यमे पाबनि-तिहारक जहिना महत्व रहैत अछि तहिना झारखंडमे सेहो अछि। अहि अध्याय मे झारखंड के 'एरोक' नाम एकटा पाबनि के विशेष रूप

रौशन झा वरिष्ठ पत्रकार छथि। संप्रति नवभारत टाइम्स, दिल्लीमे वरिष्ठ खेल संवाददाता छथि। मैथिलीमे दूरदर्शन पटना सं प्रसारित धारावाहिक 'पाहुन' केर पटकथा लेखक रहलाह। हिनक अनूदित बहुत रास पोथी सेहो छपल अछि, जाहिमे तीन गोट पोथी भारत सरकारक प्रकाशन विभाग सं छपल अछि।

संपर्क *: 12/596, तीसरी मंजिल, वेस्ट गुरु अंगद नगर, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली-110092,* ***मो.*** *9350216092*

सं उल्लेख कयल गेल अछि।

मिथिला अपन लोककला आ चित्रकला के लेल विशेष रूप सं जानल जाइत अछि। पोथीमे एकटा अध्याय मुख्य रूप सं एहि पर आधारित अछि। एहि अध्यायमे लोककला आ चित्रकला सं त पाठक वर्ग के साक्षात्कार कराओले गेल अछि संगहि ओकर प्रसिद्ध कलाकार सबहक बारेमे सेहो जानकारी देल गेल अछि। एहि दिशामे काफी शोध कयल गेल अछि। एकर प्रमाण ई अछि जे किछु एहनो कलाकार सबहक जिक्र कयल गेल अछि जिनका बारेमे बहुतो गोटे के, खासक' युवा पीढ़ी के जानकारी नहि हैत। कहि सकैत छी जे एहि दिशामे पूरा ईमानदारी राखल गेल अछि।

पोथीमे मैथिल नारी के विशेष रूप सं ध्यान राखल गेल अछि। किछु अध्याय त' प्रमुख रूप सं हुनके पर आधारित अछि। जेना कि 21म शताब्दीक पहिल दशकमे महिला उपन्यासकारक योगदान, लिली रेक प्रमुख उपन्यासमे नारी विमर्श, समकालीन मैथिली साहित्यमे स्त्रीक नियति। एकरा अलावा बाकी अध्याय सबमे सेहो स्त्रीक चर्चा भेल अछि। ओना '21म शताब्दीक पहिल दशकमे महिला उपन्यासकारक योगदान' अध्याय के शीर्षक जेना दिग्भ्रमित करैत अछि। बुझा परैत अछि जेना कि पुरुष साहित्यकार सब एतय हावी भ' गेल छथि। अध्यायक के शुरुआती तीन पन्नामे त' कतहु महिला उपन्यासकारक जिक्र धरि नहि भेल अछि। ओना बादमे गंगा बाइ, श्रीमती श्यामा झा, गौरी मिश्र, जयंती देवी, श्रीमती गायत्री किरण, लिली रे, उषाकिरण खां आदि के चर्चा कयल गेल अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे एतय भूमिका के किछु कम क' महिला उपन्यासकार सबहक बारेमे किछु आर जानकारी देल जा सकैत छल।

पोथीमे गागरमे सागर भरबाक प्रयास कयल गेल अछि। ई पोथी जानकारी के भंडार अछि। जेना एकरा उन्नैस भागमे बांटल गेल अछि, तेना एकरा मे तारतम्यता के अभाव बुझा रहल अछि। जेना कि व्यक्ति आधारित निबंध के एकठाम, लोक साहित्य पर आधारित निबंध के एकठाम, पुस्तक समीक्षा आधारित विषय के एकठाम राखल जा सकैत छल। सबटा जेना छिरियाएल बुझा रहल अछि। अहि सं पाठक के सेहो आसानी रहितय। हुनका तारतम्य बैसाबय मे सुभिस्ता होइतनि। बहरहाल, जे भी होई, कम मेहनतमे मिथिला के अधिक सं अधिक जानकारी हासिल करबाक इच्छुक व्यक्ति के लेल ई बहुत उपयोगी साबित भ' सकैत अछि। संगहि ओहेन विद्यार्थी के लेल सेहो उपयोगी साबित भ' सकैत अछि जे परीक्षा के बीचमे भेटल समय मे पढ़ि कय अगिला दिन परीक्षा देबाक फिराक मे रहैत छथि। ■

(पृष्ठ 17 केर शेष)

महाकाव्य एवं महाकाव्य मे शकुंतला

पर्व', एहि ठाम, मालिन वन आ शकुन्तलाक दिनचर्या वर्णन अछि। दोसर थीक, 'सौंदर्य रोहन पर्व', एहि ठाम दुष्यन्तक लग्न विचार, आखेटक क्रममे 'धन्य' आश्रय वर्णन तं तेसर अछि, सौंदर्य अवगाहन, जाहि मे मालिन मिलन आ शकुन्तला आश्रम धरि दुष्यंतक पहुंच आदि अछि।

पांचम सर्गक अन्तर्गत अछि पांच गोट शीर्षक। यथाः स्वप्न यामिनी, पुनर्मिलन, नेह निमंत्रण, सखीक अंतिम हकार, गंधर्व परिणय, पुनः स्वप्न यामिनी जतय प्रथम रात्रि मिलन, प्रेमक विश्वास चिन्ह मुद्रिका समर्पण आदिक वर्णन भेल अछि।

छठम सर्ग मे शीर्षक चारि गोट अछि। यथाः मानवाधिकार पर्व। ई दू भाग मे प्रथम आ दोसर मे बाटल गेल अछि। प्रथम मानवाधिकार शीर्षक मे अधमक अंतर्द्वन्द्व आ हस्तिनापुरक त्याग वर्णन भेल आ तं दोसर ठाम द्विपद दर्शन, अद्यमक लग्न, आ हस्तिनापुरक पुनरागमन केर वर्णन अछि। तेसर शीर्षक अछि विद्या लग्न मे एव कण्व आश्रम मे दुर्वासा ऋषिक आगमन। शकुंतलाकें शाप एवं शापविमुक्तिक उपाय, शकुंतलाक विदाई आदि क' संग अंतिम शीर्षक अछि 'अंतर्मंथन' एहि ठाम मुद्रिका कें नदी मे खसब, शकुन्तलाक अपमान, परित्यक्त शकुंतलाक जीवन आदिक मार्मिक वर्णन भेल अछि।

सातम सर्गक अन्तर्गत तीनटा शीर्षक अछि। प्रथम, प्रवास कल्प, दोसर, संवेदना पर्व तं तेसर अछि, मरीचि आश्रम। प्रवास कल्प शीर्षक मे माछक शिकार, मुद्रिका अन्वेषण एवं राज्य सभाक वर्णन भेल अछि। दोसर समवेदना पर्व मे मुद्रिका भेटितहि शाप सं मुक्ति आ दुष्यन्त कें शोक मग्न भेनाय आदिक सुंदर चित्रण भेल अछि।

आठम सर्ग मे दूटा शीर्षक अछि। पुण्यालोक प्रथम तें दोसर शीर्षक अछि पुनर्मिलन। पुण्यालोक मे मारीचि वन, भरतक जन्म, लालन पालन तं पुनर्मिलन मे भरतक चमत्कार सं दुष्यन्तक प्रभावित भेनाय आ दुष्यन्त सं शकुन्तलाक मिलन केर सांगोपाङ वर्णनक प्रसंग वेदना सं परिपूर्ण भेल अछि।

अंतिम सर्ग नवम सर्ग अछि जाहि मे कवि संस्कृति संस्कार नाम सं शीर्षक देने छथि। जतय जन-हिताय, मूलोपदेश, आशीष चेतना कें वर्णित करवा मे कवि विलक्षणता देखौने छथि।

सहज मैथिली शब्द आ मिथिलाक व्यवहार मे समग्र महाकाव्यक प्रसंग कें राखि कवि वर्णन अपन सुंदर सहज भाववृत्ति मे महाकाव्य कें लिखने छथि। ततय महाकाव्योक्ति छन्द आ कि आर किछु ने किछु त्रुटि परिलक्षित सेहो होइत अछि। ओना महाकाव्यक भंडार के कवि अपन एहि कृंति सं भरवा मे जे योगदान केने छथि तकरा लेल मैथिली महाकाव्य जगत गौरवान्वित भेल अछि। ■

समग्रताक परिचय : इजोतक बाट

✍ डॉ. विनय कुमार चौधरी

श्रीमती सुस्मिता पाठक जे अनेकानेक पुरस्कार सं प्रतिष्ठित छथि, केर सद्य: 2019 मे प्रकाशित पोथी 'इजोतक बाट' देखल-पढ़ल। जीवनक विविध आयाम कें स्पर्श आ अनुशीलन करैत सइसठ कविताक संग्रह थिक ई पोथी। रचित कविता प्रयोगवादी थिक वा प्रत्यक्षवादी, अनुभवजन्य थिक वा भावजन्य, उन्मुक्त थिक वा छंदमुक्त... तत्काल कहब कठिन। दसम सदीक दार्शनिक आ रहस्यदर्शी अभिनवगुप्त अपन स्तुतिकाव्य- 'देहस्थदेवता चक्रस्तोत्रम्' मे एहन काव्य समुच्चय कें कायानिहित देवताक समय सापेक्ष अभिव्यक्ति मानैत छथि। तात्पर्य ई जे जाहि कालमे जे देवता शरीरमे प्रविष्ट होइत छथि, कविताक प्रस्फुटन तेहने होइत अछि। यैह कारण थिक जे अपना ओहिठाम अक्षर आ शब्दकें चेतन ब्रह्म कहल गेल अछि।

'इजोतक बाट'क भाव-प्रयोग स्कन्दगुप्तक शिलालेख मे भेटैत अछि- विधिवत प्रबुद्ध मन वाले ज्ञानीजन...

और ऊपर, नीचे आगे-पीछे ओर छोर बूझ नहीं पाते हैं- तात्पर्य ई जे जं इजोतक बाट भेटैत रहय, सूझैत रहय तं अंतहीन यात्रा सुगम भ' जाइत अछि। सूर्यकें कालचक्रक नायक एही कारणे मानल गेल छनि आ सूर्योदय सं पूर्व अरुणोदयक आभाक रहस्य सेहो यैह थिक। एहि पोथीक कवितामे कतहु भावोदय, कतहु अरुणोदय आ कतहु सूर्योदय सं फलीभूत 'बाट'क बोध होइत अछि। हमरा जनैत पोथीक समग्र कविताक अभिव्यक्ति पोथीक शीर्षकमे सन्निहित अछि।

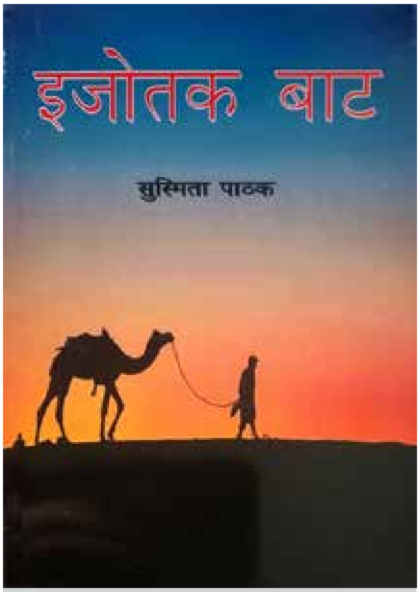

इजोतक बाट

रचनाकार	:	सुस्मिता पाठक
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	96
विधा	:	कविता संग्रह

वर्तमान मे काव्यकृतिक दू टा आधार मानल गेल अछि, पहिल जे मानव जीवन संत्रासयुक्त अछि अर्थात् अनुशीलन, संघर्ष, मूल्य क्षरण, विघटन, अविश्वास, अनिष्ठा आ अतिरेक युगधर्म थिक। दोसर, आगां-पाछां किछु नहि वर्तमाने मे सभटा भोग करू आ खूब योग करू...। काव्यकृतिक पहिल दृष्टि मे समसामयिकता (युगबोध), युगीन वास्तविकता आ संभावनाक दर्शन, यथार्थ दृष्टि, वैयक्तिकता, सौंदर्य बोध, नूतन मूल्यक निर्मिति, अस्तित्व चेतना आदिक समावेश होइत छैक अर्थात् एहिमे प्रेयता समाविष्ट होइछ; जखन कि दोसर दृष्टिमे भोग आ प्रेयता मात्रक समुच्चय होइत छैक। 'इजोतक बाट' मे दुनू दृष्टिक समावेश कएल गेल अछि।

प्रथम बेर वर्ष 1930 ई. मे ग्रियर्सन सेहो अपन पत्रिका 'न्यू वर्स' मे एहने मंतव्य प्रकट केने छलाह। तात्पर्य ई जे कविता जं सामाजिक चेतनाकें स्वरूप देबामे सक्षम हो, काल-परिचय करा सकए आ आधुनिक यांत्रिकतासं पिसाइत प्राणीक यथार्थ-चित्रणक' सकए तं ओ भेल कविता। 'इजोतक बाट' एहि तुला पर बिनु बटखरे ठाढ़ देखाइत अछि। एहिं संदर्भ मे संस्कृत काव्यशास्त्रक पुरोधा कुंतक, राजशेखर आ भोज सेहो स्पष्ट कयने छथि जे जं काव्य शब्द आ अर्थक सहभाव पर दर्शित होइत हो तं काव्यक सार्थकता मानल जयबाक चाही- यैह भेल बिनु बटखरे ठाढ़। अक्षर-समूहक ध्वनि भेल अभिव्यक्ति, अभिव्यक्तिक स्फोटसं बिम्ब आ बिम्बसं अर्थ आ तदन्तरे बाट-इजोतक बाट।

मुदा बीच दुपहरियामे
किरणक एक पातर सब धार
नहि जानि कोन बाटे
आबि रहल अछि
हमरा खिड़कीमे सत्ते
बन्न नहि होइत अछि इजोतक बाट

(पृ. 13)

डॉ. विनय कुमार चौधरी सहरसा स्थित राजेन्द्र महाविद्यालय समाजशास्त्र विभाग मे प्राध्यापक पद सं सेवानिवृत्त छथि। दरभंगा जिला स्थित पिंडारूच गामक निवासी छथि। समाजशास्त्र विषयक हिनक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि।
संपर्क : श्रीकृष्ण कुटी, पंचवटी, सहरसा-852201, मो. : 9835878200

यैह भेल ध्वनि, बिम्ब, अर्थ, बाट। कवयित्री पहिले कवितामे काव्यक बाट प्रशस्त देने छथि।

समयक ओहि तेज प्रवाहसं
तैं तं बनि गेल स्वयं आब ओहि
कबाड़क हिस्सा (पृ. 17)
ताधरि करब चित्कार
जाधरि निकलि नहि आबय कंठसं
कोनो सुरविहीन राग (पृ. 18)
आपने बनओत अपन बाट
...सार्थक हेतैक एकर जीवन (पृ. 25)

क्षणवादी कविताक विशेषता होइछ जे ओहिमे आक्रोश, विद्रोह, विक्षोभ, ओझरायल किरणक रेख बिम्बित होइत रहैत अछि, से स्पष्टे लक्षित होइत अछि उल्लेखमे–

अथाह सुखक इच्छा दबौने
भीड़क संग मनबैत रहलहुं उत्सव
(पृ. 32)
कहैत छथि बचल अछि बहुत रास चीज
खतम नहि भेल अछि बात, कविताक
(पृ. 33)

कवितामे जं वैयक्तिकताक विस्तार हो आ परिस्थितिकें पराभूत करबाक चेतना नि:सृज होइत हो तं कविताकें मुखर आ प्रखर मानल जयबाक विधान अछि– एहूठाम वैह परिदृश्य सामने ठाढ बाट ताकि रहल अछि–

रसहीन जीवन
एहिना बस जाइ सम्हरि (पृ. 36)
हमर ध्वनि हमरे ठांहसं
बतिआइत अछि चुप्पे चाप
अवहेला करैत निरंतर हमर (पृ. 47)
हमहीं ही एकहि दृष्टिमे
नापि लेने छी हजार माइलक दूरी
(पृ. 54)

संघर्ष आ संभावनाक दृश्य एकहि संग उपस्थित भ' जाइत अछि वर्णित काव्यांशमे। ई भेल जिनगीक बाट, इजोतक बाट। श्रीमती पाठकक कविता समग्रतामे व्यक्तिक जीवन परिचय प्रस्तुत करैत अछि। ■

(पृष्ठ 29 केर शेष)

औनायल जिनगीक धरोहर

जमेसराक नामरदी की धर्मडीहावालीक शारीरिक कमी। मुदा भारत के पितृसतात्मक समाज मौगी के बांझिन वा आन लांछन लगा कुत्सित जिनगी गुदस्त करबाक मजबूर करैए।

पुरान लोक के बिसरल भगते आ ओकर वास्तविक स्वरूप मोन पाड़ल जाइए। नवलोक के भारतीय समाजक अंधविश्वासक अढ़ मे भगत सब द्वारा कोन प्रक्रिया अपनाएल जाइ छल तकर सद्य: चित्रण देखने छथि। भगत सब बीमारी भगेबा सं बेशी भोगबाक प्रयासक एकरा माध्यम ठाढ़ करै छल। टोना-टापरक प्रक्रिये लोक के डरा-ध मका अपना वश मे क' कुल-शील भंग करैत रहल। आ लोक मुर्खतावश ओकरा समाज सुधारक मानि पूजैत रहल। ते ने धर्मडीहावाली जंगसरा लेल बांझिनक संज्ञा पौलक आ जगेसर के ध रमडीहावाली नामरदक नाम द' काहोर किच्चा करैत रहल। ई मानवीय स्वभाव छै जे दाम्पत्य जीवनक मध्य कटाक्ष होइत रहल तं पति-पत्नीक मध्य सामंजस्य असोकर्ज बुझू। आ तकरा संबंधी, पड़ोसी मौलवी-मुक्तार ओझा धामि द्वारा मजाक, भोगबाक सफल असफल प्रयासक चर्चा होइत रहल अछि।

लेखक एहि माध्यमे ई सत्य सोझां आनि जनेबाक प्रयास केलनि जे ई सब घटना अशिक्षा आ अर्थाभाव मे ओझरएल लोक कें बेशी प्रभावित करैए। अंध विश्वास अज्ञान वा अशिक्षित समाज मध्य बेसी टांग पसारैए। ते ने अजय जहन 'शहर सं उच्च शिक्षा पाबि गाम अबैए त' गामक सिरखारी मलिन लगै छै। ओ गामक सिरखारी बदल चाहैए। बदलावक संकल्प लैए। गाम भरिक धियापुता के गाछ तर पढ़ेबाक लेल जुटान क' शिक्षित करबाक प्रयस करैए। मुदा दू गोटक बीच भेल झगड़ा झांटी मे नोकसान केकरा भेल से कियो बुझनिहार नै दोषी भेल ... लेखक ऐ ठाम टोलबैया के अजान हेवाक ओकर परिणाम के नीक जकां परिलक्षित केलनि अछि। उपरोक्त समस्या मात्र ओही टोल पर नै छै। ओ टोल त' एकटा प्रतीक मात्र अछि। समस्या टोलक टोलआ गामक गाम के शोचि रहल ऐछ। एकर मूल कारण है अशिक्षा आजये के शिक्षित भेला सं बचलै धर्मडीहावालीक इज्जति। नै त' अंधविश्वासी समाज भगत के भगत नै भगवान जकां बुझै छल। आओ कुकर्मी भगवान लोकक बहु बेटीक शील हरण करैत मठोमात भेल रहै छल।

अजय द्वारा समाज के बदलवाक प्रयास मे आइ टोलक किछु गोटे के सहमति भेटें। वेशी लोक के लगै कठाइन तें किछु लोक ओकरक बदलावक आन्दोलन मे संग भ' जाइत। किछु करै कुचिष्टा आ ओइ सामाजिक बदलावक आन्दोलन भ' जए मुर्छित। एहि सबहक बीच जनमलै शीला आ अजयक प्रेम। ई प्रेम मान टोल समाज आ गाम मे नै छै। ई त' संपूर्ण ब्रह्माण डक सासत्य छैक। ई तनाव नै खिचाव छै जे प्रकृति प्रदत्त अछि जीवत: एकटा माध्यम मात्र अछि। प्रेमक कतेक रूप ऐछ मुदा विषम लिंगी स्त्री-पुरुषक प्रेम आह्लाद मात्र मे हृदयक बन्धन के जोड़ैए मुदा समाज ऐहन प्रेम के मोजर नै दैए। तें प्रेमक बीया जोतल कोरल खेत नै उसर मे पनकै आ बढ़ैए। माने जे चोरी छिपाक। तें शीला आ अजय के लोक जिन्दा नै दै चाहैए।

समकालीन उपन्यास मे गढ़नि (कथ्य आ शिल्प) मे श्रेष्ठ उपन्यास आदर्श समाजक निर्माण मे अहम भुमिकाक निवहता करैत पढनीय अछि। ■

सत्ता आ प्रेमक चुनौती: दु:स्वप्न वा दिवास्वप्न

✍ विनीत उत्पल

मैथिली कवितामे एकटा गहीर खधारि लगातार देखल जा रहल अछि जे किछु विषय पर कविता खूब लिखल जा रहल अछि, ते कतेक रास विषय ओहिना छूटि जा रहल अछि। कोनो कवि अपन कविता के प्रति कतेक गंभीर अछि से कोनो पाठक बुझि सकैत अछि, कियैकि आजुक कविता आम पाठकक जिह्वा पर बैसैक क्षमता नहि राखैत अछि। एकर कारण ई अछि जे आजुक कविता पोथी प्रकाशित करबाक, मंच पर पढबाक आ पुरस्कृत हेबाक लेल लिखल जा रहल अछि। मुदा, एखनो किछु कवि अछि जे लगातार अपन कविता सं साहित्य जगत मे अपन छाप छोड़ि रहल अछि। सिर्फ सोशल मीडिया टा मे नहि, बल्कि अलग-अलग पत्र-पत्रिकाक मध्यम सं पाठकक सोझां आबि रहल अछि। हाथक आंगुर पर गिनल जाय बला एहन कवि सभमे रमण कुमार सिंह छथि, जिनकर रचना लगातार समाजक आ शासनक 'इस्टेब्लिशमेंट' पर प्रहार क' रहल अछि।

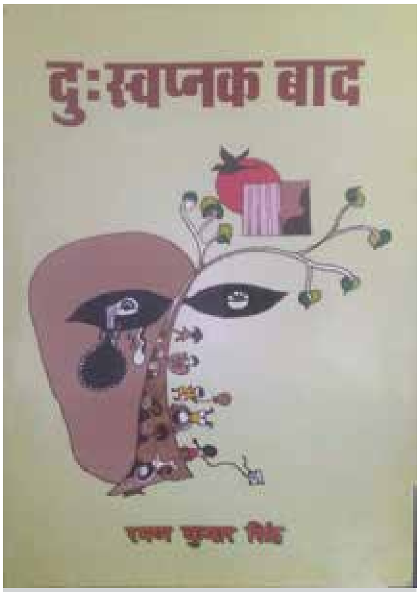

दु:स्वप्नक बाद

रचनाकार	:	रमन कुमार सिंह
प्रकाशक	:	किशुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	111
विधा	:	कविता संग्रह

समाज के सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक सिद्धांत के विरुद्ध 'एंटी-एस्टेब्लिशमेंट' थ्योरी काज करैत अछि आ एही शब्दक प्रयोग सन 1958 ई. मे पहिलुक बेर ब्रितानी अख़बार 'न्यू स्टेट्समैन' केने छल आ एकर संदर्भ राजनीतिक आ सामाजिक एजेंडाक लेल कयल गेल छल। राजनीतिक दर्शनशास्त्र मे एही शब्दक बड़ महत्व अछि। एहन नहि अछि जे एकर प्रयोग सिर्फ आ सिर्फ वैश्विक स्तर पर भेल अछि, मुदा भारत मे खासके पश्चिम बंगाल मे सरकारक खिलाफ आवाज खूब उठल आ ओतुका साहित्य मे मलय राय चौधुरी, समीर राय चौधुरी, सुबिमल बसाक आ त्रिदिप मित्रा एहन नाम अछि, जे अपन एंटी-एस्टेब्लिशमेंट' रचनाक माध्यम सं अपन फराक पहचान बनाउने छलाह। मुदा, मैथिली साहित्य मे 'बाबा नागार्जुन' आ 'राजकमल चौधरी' के बाद कोनो एहन साहित्यकार नै भेलाह जे समाज आ राजनीति के अपन क्षेत्र मे रचनाक माध्यम सं किनको लेल कोनो चुनौती पेश करय। हालांकि एही क्रम मे युवा कवि रमण कुमार सिंह के राखल जा सकैत अछि, मुदा ओ प्रेम कविता लिखि के ओही लीक सं कने फराक पहिचान बनेबा लेल आमदा छथि।

हुनकर कविता संग्रह 'दु:स्वप्नक बाद' के 34 गोट कविता समाज केर व्यापक फलक कें पाठकक आगू आनैत अछि। एही संग्रह के एकटा कविता अछि 'नवका वेश मे तानाशाह', जाहि मे ओ लिखैत छथि, "ओ एही देश कें सबसं आगू बढेबाक/बात करैत अछि सार्वजानिक रूप सं/मुदा असल मे ल' जाय चाहैत अछि/मध्यकालीन निरंकुशताक दौर मे"। सवाल ई अछि जे कोनो तानाशाहक असली रूप कविता मे आनय के लेल कोनो रचनाकार कोन अलंकार आ विशेषणक प्रयोग करय, जाहि सं सांपो मरि जाय आ लाठी नै टूटय। एही कविता मे आगूक पांति अछि, 'एही बेर ओकर फासीवादी चेहरा अछि बेस उघार/ओ करैत अछि लोकतंत्र पर भितरिया

दस बरखसँ बेसी काल धरि दैनिक भास्कर, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक हिंदुस्तानमे वरिष्ठ पद पर काज केला कें बाद शारदा यूनिवर्सिटीमे असिस्टेंट प्रोफेसर भेलाह। हिनक कुल पांच गोट कृति प्रकाशित छनि। जाहिमे एकटा मैथिली कविता संग्रह आ दूटा अनुवाद, हिन्दीमे एकटा संपादित कविता संग्रह आ मीडिया पर एकटा संपादित पोथी प्रकाशित अछि। संप्रति आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग मे असिस्टेंट प्रोफेसर।

संपर्क *: सी-32, द्वितीय तल, मंडावली ऊँचे पर, आई.पी. एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110092*

मो. 9911364616, ***ईमेल*** *: vinitutpal@gmail.com*

प्रहार/लोकतांत्रिक संस्था सभ कें पोसुआ कुकुर बनेबाक/नवका लूरि सीखि आयल अछि ओ एही बेर।' मुदा रमण कुमार सिंहक रचनामे प्रयुक्त शब्दक प्रतिबिम्ब बुझयमे कोनो संकोच नहि जे ओ कोना चुपचाप 'एंटी-एस्टेब्लिशमेंट' रचना क' रहल छथि आ सरकार पर प्रहार क' समाज के जगाबाय मे लागल अछि। हुनकर रचना सामाजिक वेदना कें स्वर देबय बला आ सत्ता के चुनौती दय बला रचना अछि, 'विजयादशमीक उत्सव' मे ओ खुलि के लिखैत छथि, 'भलाइ केर प्रतीक राम आ/ बुराइ केर प्रतीक रावणक बीच/भेल छल ओ युद्ध/जकर खिस्सा हम सभ पढलहुं रामायण मे/मुदा आजुक लड़ाइ प्रतीक युद्ध नहि थिक/यथार्थक जमीन पर लड़य पडत/ सभ कें अपन-अपन हिस्साक लड़ाइ।' माने ई जे सामाजिक जीवनक सच्चाई सं कवि पाठक के अवगत कराबैक संग अपन-अपन जिम्मेवारीक बोध सेहो कराबय मे सक्षम छथि। यैह कारण अछि जे हुनकर कविताक सन्दर्भ मे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र लिखैत छैथ, "सामाजिक, राजनैतिक ओ नैतिक चेतना सं सम्बलित हिनक रचना में जं एक दिस पारम्परिक आस्था उद्घोषित होइत अछि, तं दोसर दिस सांस्कृतिक ओ सामाजिक मान-मूल्यक क्षरणक प्रति चिंता प्रकट होइछ। परन्तु से उद्घोषणा अथवा चिंताक प्रकटीकरण मानव समाजक सुसंगठित ओ व्यापक स्वरूप लेल अछि, से कविक सर्जनात्मक प्रतिभा कें महत्ता प्रदान करैत अछि।"

कवि के रचनामे सामाजिक आ सांस्कृतिक तानाबाना एना आगू आबैत अछि जे चकित करैत अछि। हुनकर कविता 'काल्हि आ आइ' मे ओ कहैत छथि, "एगो एहनो समय छल जखन/ नेना-बुतरू कोनो एक घरक नहि/पूरा समाजक होइत छल दुलारु/आ ओकर सुरक्षा छल सबहक जिम्मेदारी।" आगू लिखैत छथि जे "सझिया आश्रम/सझिया दलान/सझिया संस्कृति आ सझिया खेती/सझिया इनार, सझिया पोखरि/ छल ताहि दिन गामक पहिचान।" ई पांति सं ई बुझल जा सकैत अछि जे कवि के भीतर सामाजिक तानाबाना के छिन्न-भिन्न भेला के बाद कोन तरह केर दर्द अछि आ गाम-घर सं कोण तरहक लगाव अछि। यैह कारण अछि जे युवा साहित्यकार दिलीप कुमार झा लिखैत छथि, "कथ्य आ तथ्यक आधार पर अपन निजी शिल्पमे बिनु कोनो लाग-लपेट के अपन बात कहैत अछि हिनक कविता। ई विषयक स्तर पर टटका आ विचारक स्तर पर साकांक्ष कवी छथि। कविता लिखैत काल कविक संवेदना सदति लोक संवेदनाक संग निजगुत सम्बन्ध स्थापित करैत रहैत छनि, जे हिनक एकटा फरक परिचित बनबैत छनि।"

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र लिखैत छथि, "नारी जातिक अमानवीय शोषण, कृषक जीवनक अकिंचनता, तथाकथित प्रगतिशीलताक व्यामोह मे टूटैत संबंध-अंतर्संबंध, बदलैत प्रेमक परिभाषा, मूल्यविहीनता- ई सभ किछु हृदय कें सीदित-स्पंदित करैछ आ तकरे भावाभिव्यक्ति भाषा ओ अर्थक स्पष्टताक संग श्री रमण कुमार सिंहक काव्य रचना मे कुशलताक संग भेल अछि।"

साहित्य अकादेमी पुरस्कार सं पुरस्कृत विभूति आनंद के मोताबिक, "रमण जीक आखर-आखरमे बेचैनी अछि। जेंकि ओ वैज्ञानिक सोचक एक सचढ स्वर छथि, तें कोनो स्थितिमे हारब नहि गछैत छथि। दिन फेर घुरतै, फेर सं हरियर होयतै जीवन-सोच, तकर कामना आ तकनीक ओ जोगारैत रहैत अछि। इहए कारण छै जे हुनक काव्य-स्वर कतहु सं ने तं तोतराइत अछि, आ ने तं कुंठित होइत अछि।"

शिवशंकर श्रीनिवास कहैत छथि जे, "समाजमे पसरल विद्रूपता, विसंगति, समस्या ओ दुःख-रागकें देखार करैत रमण कुमार सिंह ओहिसं बहरेबाक बाट बनबैत छथि, ओ असलमे मैथिली कविताकें बाट देखबैत अछि, जे हिनका दोसरसं फूट ओ विशिष्ट बनबैत अछि।" रमण कुमार सिंह के एही कविता संग्रहक कविता सभ 'दुःस्वप्न बाद', 'साइकिल सं स्कूल जाइत लड़की', 'पार्क मे बेंच', 'दुःख', 'गति', 'पत्रहीन नग्न गाछ देखि', 'पतन', 'घृणा', 'बलात्कारी हंसि रहल अछि', 'सावधान दिल्ली' आदि समाजक सरोकारक कविता अछि जे समाजक विद्रूपता पर लगातार प्रहार क' रहल अछि आ समाजमे बदलाव आनय लेल लोग मे उद्वेग भरि रहल अछि।

युवा कवि के प्रेमक दायरा सेहो बड़ व्यापक अछि। ओना प्रेमक 'त्रिकोण ीय सिद्धांत' बड़ महत्वपूर्ण अछि। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक राबर्ट स्टेनबर्ग के प्रेमक सिद्धांतक अनुसार तीन तरहक प्रेम होयत अछि। पहिलुक अंतरंगता (intimacy) दोसर जुनून (passion) आ तेसर प्रतिबद्धता (commitment)। एही मे जों किनको प्रेम दू वा दू सं बेसी बिन्दु पर आधारित अछि ते ओ प्रेम बेसी मजबूत होयत। जखन कवि 'प्रेम केर भाषा', 'हे हमर प्रिया', 'ताधरि बांचल रहत प्रेम', 'हम कोनो देवपुरुष नहि छी' सन कविता लिखैत छथि, तखन हुनकर कविता मे 'प्रतिबद्धता' केर चर्चा अछि। ओ 'प्रेम केर भाषा' कविता मे कहैत छैथ, 'एही भाषा कें लिखित शब्दक नहि/मात्र अनुरागक होइत अछि जरूरत/एकरा माध्यमे बूझि सकैत छी हम/दुनिया कें ओकर असली रूप मे/तें आइ-काल्हि हम/सीखि रहल छी प्रेम केर भाषा' हिनकर ई कविता प्रेम के अंतिम प्रकार 'प्रतिबद्धता' पर आधरित अछि आ प्रतिबिम्ब मे पाठक के ओझरा के राखि दैत अछि। स्त्री चेतना पर आधारित कवि के कविता 'हे हमर प्रिया' मे एकटा पांति अछि, 'हे हमर प्रिया/ जखन अहां संग रहैत छी/तं पता नहि कतय सं/आबि जाइत अछि हमरा मे/ पहाड़क ताकति आ हम/उठि ठाढ़ होइत छी/चुनौटी सं भिड़य लेल।' इ कविता प्रेमक 'जुनून' सं कम नहि अछि।

रमण कुमार सिंहक कतेक रास कविता मे प्रेमक नव-नव परिभाषा गढ़ल गेल अछि आ एकटा स्त्रीके नव-नव रूप शब्द मे उतरल अछि। कविता 'ताधरि बांचल रहत प्रेम' मे कवि कहैत छथि, 'प्रेम करबाक लेल/

(शेष पृष्ठ 42 पर)

मुक्त कंठसं बहराइत अविरल जीवन रसक कविता: अविरल-अविराम

✍ **सत्यनारायण प्रसाद यादव**

आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक अन्तर्गत कविता सबसं बेसी लिखल जा रहल अछि। मैथिली साहित्यक एहि विधाकें समृद्धि प्रदान करबाक हेतु बहुतो रास कवि/कवियित्री लोकनि सृजनरत छथि। जाहिमे सभ आयु वर्गक रचनाकार लोकनि अपन महत्त्वपूर्ण योगदान द' रहल छथि। अखन विभिन्न माध्यमे साहित्यक रचना भ' रहल अछि, खास क' फेसबुक एकर सभसं नीक माध्यम रूपें उभरल अछि। ई गप्प मैथिली भाषा साहित्यक लेल सुखगर प्रतीत होइत अछि।

समयक चक्र गतिमान छैक। साहित्य रचना जे कोनो समाजक प्रतिनिधित्व करैत अछि, तकर परिवेशमे परिवर्त्तन भेलैक अछि, ताहिसं साहित्यक स्वरमे परिवर्त्तन सेहो स्वाभाविके अछि। एहि क्रममे मोनक द्वन्द्व, व्यवस्थाक प्रति आक्रोश, आडंबर पर तीक्ष्ण प्रहार, सकारात्मक परिवर्त्तनक छटपटीक लेल प्रतिवाद करैत युवा कवि नारायण झा मैथिली कविता साहित्यमे सन् 2013 ई. मे प्रकाशित अपन 'प्रतिवादी हम' पोथीक संग सोझां अयलाह। सौभाग्य वा संयोगवश पोथी अपन प्रभाव, गुणवत्ता, वैशिष्टता, उद्देश्यता आदिक कारणें 2015 ई. क साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कारक लेल सेहो चयनित भ' गेल। कोनो पुरस्कार भेटला बाद रचनाकारकें मनोबल तं भेटितै छैक संगहि जिम्मेदारी सेहो बढ़ि जाइत अछि। कवि अपन काव्य यात्राकें

अविरल-अविराम

रचनाकार	:	नारायण झा
प्रकाशक	:	नवारम्भ पटना / मधुबनी
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	112
विधा	:	कविता संग्रह

आओर फरिच्छ करैत, जिम्मेदारीकें बुझैत 2017 ई. मे पुनः दोसर काव्य संग्रह 'अविरल-अविराम' अनैत छथि, जाहिठाम ओहि पुरस्कार प्राप्तिसं पीठ थपथपेबाक स्वर गुंजित भेल।

कवि लेल कविता की थिक, से पोथीक आत्मकथ्य वा दू आखरमे कवि स्वयं कहने छथि- "हमरा मतें कविता लिखल नहि जाइत अछि ई तं हृदयसं उतरैत अछि। हृदयसं उतरला बाद कवि रंग-टीप क' गहना पहिरा ओकरा सामने अनैत छथि। कविता पाठक-श्रोताक हृदयकें गुदगुदा दैत अछि। कखनहुं कविता कना दैत अछि। कखनहुं हंसा दैत अछि। कखनहुं सर्वांग शरीरक रोइंयां सेहो ठाढ़ क' दैत अछि। कविता देश-समाजक बहुआयामी स्थिति-परिस्थितिकें उपस्थापित करैत अछि।" अविरल-अविराममे कुल सत्तहत्तरि टा कविता संग्रहीत अछि। कविताक आरंभ कवि "इष्टदेवी" नामक शीर्षकसं कएने छथि आ अन्त "स्मृति शेष" सं। शीर्षक "इष्टदेवी" मे कवि स्वप्न रूपमे अपन इष्टदेवीसं यशपूर्ण जीवनक लेल वरदान होइत छथि, संभवत: ई कामना हुनक साहित्य रचनाक लेल रहल होयत। एहिठाम हमरा यात्री जीक चित्रामे संग्रहित प्रसिद्ध कविता "कविक स्वप्न" स्मरण होइत अछि, जाहिमे यात्रीजी जाहि उद्देश्य वा प्रतिकार लेल एहि कविताक कें लिखने रहथि, तकर प्रतिफलन एहिठाम बहराएल प्रतीत होइत अछि। कविकें कविधर्मक नीकसं भान छैन्हि।

'मशीन आ मनुक्ख' शीर्षकमे कवि मशीनक आरंभिक युग आ वर्त्तमान युगक चित्रण कएने छथि। कोन बेगरता लेल एकरा आविष्कारित कएल गेल आ आइ मनुक्ख कोना सभ तरहें मशीनेसं घेरा गेल

सत्यनारायण प्रसाद यादव मैथिली साहित्यक विशिष्ट अध्येता छथि। हालहि मे यू. जी. सी नेट जे. आर. एफ. परीक्षा उत्तीर्ण भेलथि अछि। मैथिली साहित्यक अध्ययन आ अध्ययनोपरांत लिखब हिनक व्यसन छैन्हि।

संपर्क : *पितामह: श्री पुलकित यादव, ग्राम+पोस्ट: भौर (राजग्राम), भाया-लोहट, प्रखंड-पंडौल, जिला-मधुबनी, बिहार, पिनकोड-847231,* ***मो.*** *9599303002,* ***ईमेल :*** *spyadav03021995@gmail.com*

अछि, कोना यंत्रणीकरण भ' गेल अछि। कोना एकहु पल एहि बिनु नहि रहि सकैत अछि, तकरा कवि नीकसं सामने अनैत छथि आ व्यंग्यात्मक रूपें कहैत छथि:- "एखन मशीन मनुक्खसं/कहि रहलैए हंसि-हंसि/आब कहू मोन केहेन लगैए"। शीर्षक 'नहि त्यागब देशप्रेम आ श्रद्धांजलि' मे कविक मातृभूमिक निश्छल प्रेम खूब नीकसं बहराइत अछि आ आमजनक की कर्त्तव्य बनैत अछि, तकरा सेहो झलकाबैत छथि।

"कियै लिखै छी" शीर्षकमे कविक लेल कविता की थिक,से आ ओ किएक लिखैत छथि तकरा सोझां अनने छथि। ओना एकर भाव ओ अपन दू आखरमे सेहो उल्लेख कयने छथि। एहि कविताक मध्य आयल पांति कें देखू:- "ककरो बेकलता देखि / ककरो खुशी देखि / भ' जाइ छी संवेदित/बेरा-बेरी अपना भीतर/ करै छी समाहित/ ओ संवेदना/ कुदैए, फनैए / हमरा अन्तर्मनमे/ तखन लै अछि / शब्दक आकार / शब्द बनए लगै अछि / हमरा लेल / हमर कविता"।

एहि तरहें हिनक कवित्वक की उद्देश्य छैन्हि से स्पष्ट रूपें बहराइत अछि, जाहिसं हिनका एकटा सुच्चा कविक पांतिमे राखल जा सकैए। पढैत आ देखैत काल पूर्वमे भेटल छल अमेरिकन-जर्मनीक प्रसिद्ध कवि "Charles Bukowski" क कविता "So you want to bea writer" (हिन्दी अनुवाद वरुण ग्रोवर आ यू ट्यूब पर कविता वाचन सौरभ द्विवेदी)' मे एहि तथ्यक नीक भाव अभरल छल।

कवि नारायण झा वृतिसं अखन अपन गामेक मध्य विद्यालयमे शिक्षक छथि, तें गामेमे रहैत छथि। कविकें अपन मातृभाषासं अगाध प्रेम छैन्हि। ओ अपनहि भाषामे कविताक मादे अपन बात सोझां रखबामे सहज आ समर्थ महसूस करैत छथि, जे कवि अपन दू आखरमे सेहो स्वीकार करैत छथि। हिनक काव्य यात्राक जड़िमे यथार्थक भाव-भूमि अछि। तें ओहि यथार्थक परिवेश हिनक कवितामे बेर-बेर उठि क' सोझां अबैत अछि। काव्य रचना हेतु कल्पनाशीलताक प्रयोग कवि लोकनि द्वारा कएल जाइत अछि मुदा ओहो कल्पनाशीलतामे कतौ नै कतौ यथार्थताक बोध जरूर निहित रहैत अछि। महानगरक विभिन्न सुख-सुविधामे बैसल कवि जे गामक वास्तविक मौलिक दृश्य गढबाक कोशिश करैत छथि, ताहिमे कखनहुं काल किछु भाव छुछुआउन गढ़ा जेबाक आशंका रहैत अछि। तहिना शहरोक वास्तविक चरित्र चित्रण करबा काल चौचंक रहब सेहो आवश्यक। ताहिसं रचनामे वास्तविक तथ्य आ परिवेशक यथार्थ चित्रण सोझां अबैत अछि, शीर्षक "टीस" क मूल भाव सैह अछि। जे कतेको कवि लोकनि लेल टीस उत्पन्न क' सकैत अछि। एहि कविताक किछु पांति देखू:- "करै छथि कवि गणित / एसी घरमे / रौदी-दाही पर / माछ मखानक लगता पर/ठठै छथि कवि / अट्टालिकामे रहि / मड़ैयाक ठाठ, कोनियां / आ बुनै छथि टाट फरक"।

जीवनक एहि भाग-दौड़मे लोकक हंसी कोना हेराए गेल अछि आ ओ बनाबटी हंसी हंसैत अछि तकर नीक चित्रण "हंसी हेरेलै" कवितामे भेल अछि। "ई केहेन हूलि-मालि" एहि कविता संग्रहक एकटा विशिष्ट भावबोधक कविता अछि। एहिमे कवि सिमरियामे ठाढ भेल प्रतीत भ' रहल छथि जाहिठाम एहि जीबनक सभ हूलि मालिकें देखि रहल छथि। एहिठाम एकहि कवितामे धार्मिक घाट पर धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष, एहि चारूक उत्कृष्ट दृश्य देखौने छथि।

"स्त्री" शीर्षकमे स्त्रीक सशक्तीकरणक गप्प करैत कवि कहैत छथि जे:- "के आब रोकतै / के आब टोकतै / डंकाक चोट पर सत्ता कायम करतै / बच्चा कें आब ओ / माइयेक नामे चिन्हेतै"। "विकासक होहकारा" मे भारी जनसंख्याक बढ़ोतरीकें कारण जे प्रकृति नष्ट करबाक होड़ चलि रहल अछि, तकरा चिंतनीय रूपमे उजागर कएल गेल अछि। एहिठाम कविक प्रकृति प्रेम झलैक रहल अछि। एहि कवितासं साफ-साफ संकेत भेटि रहल छैक जे कवि विकास तं चाहबे करैत छथि, सकारात्मक परिवर्त्तन तं चाहिते छथि, मुदा अपन प्रकृतिकें नष्ट क' क' नहि। जं प्रकृति-पर्यावरण नष्ट भ' जएतैक तं फेर एहि जीवन आ जीवनक उपक्रमक की हेतै? तहिना "पर्यावरण पोषक" शीर्षकमे जे वास्तवमे एकरा सम्हारिने छथि तकर चर्च कतहुं नहि होइत अछि आ 'फोटो खिंचौआ अभियान' जे खूब जोर पकड़ने अछि, जाहिमे कोनो विशेष योजनान्तर्गत एकहिटा गाछक लेल किओ ओकर पात तं किओ ओकर जड़ि पकड़ने आ किओ एक छिच्चा भरि पानि दैत अपन फोटो खिंचाक' पर्यावरणक बड़का संरक्षकक संज्ञा हासिल क' लैत अछि। तखने कवि कहि उठैत छथि:- "घामे पसेना सं / तर-बतर देह / पोसि पालि गाछ कें / बनबै छथि समर्थ / के घीचत हुनकर / फोटो-फाटो / के पूछत हुनकर / हाल समाचार / अपन धुनिमे / रहै छथि रमल / गामक सपूत"।

'चिन्ता' शीर्षक कवितामे कवि दिनानुदिन नीचां मुंहें शिक्षाक खसैत स्तरकें ल' क' चिन्तित बुझि पड़ैत छथि। ओहिना ''अपन हिस्सा'' मे नेनपनमे कोन तरहक ओकरा भीतर अपन हिस्साक प्रति मानसिक स्तरपर पारिवारिक शिक्षा भेटैत छैक, तकर बीजारोपणक दृश्य उकेरैत छथि। ''टिनही बाटी'' शीर्षक एहि संग्रहक एकटा विशिष्ट आ चर्चित कविता अछि, जाहिमे कवि शारीरिक-मानसिक रूपें असक्षम जे कत्तौ भीख मांगि क' कोनो तरहें अपन जीवनकें खेपैत रहैत अछि, तकर मनोव्यथाकें चित्रित करैत कहैत छथि:- "हम दिन-राति / लगौने रहैत छी एकटक्क / के पझाओत पेटक आगि / नहि होइए फांकल / सिक्का आ नोट / नहि सिझाएल होइए / मुद्रासं दू कओर अन्न / नहि जानि ओ लोकनि / कोना फंकैत छथि / हम नहि फांकि पबैत छी।"

"वृद्धाश्रमक खगता'' शीर्षक कविताक मादे कवि आजुक समयमे वृद्धाश्रमक संख्या जे दिन-प्रतिदिन बढ़ि रहल अछि तकर कारण बतबैत चिंतित छथि। हुनक कहब छैन्हि जे जीवनमे शिक्षाक बड़ पैघ महत्व होइत अछि। एहि बिनु जीवनक कल्पना भयावह बनि जाइत अछि। कवि कहैत छथि जे आइ कालि्ह सभ अपन दायित्वसं छुटकारा पबै लेल बेहाल अछि। नेनाकें अक्षरारम्भ लेल जाहि तरहें "प्ले स्कूल'', प्री प्राइमरी स्कूल,किड्स स्कूल आ एहेन कतेको नामसं जे स्कूल फूजि रहल अछि, ताहिसं शिक्षारम्भमे तीव्रता तं देखल जा रहल अछि, मुदा ओहिमे मायक ममता आ पिताक वात्सल्य प्रेमक अभाव रहि जाइत अछि। वृद्धाश्रमक खगता जाहि रूपें बढि रहल अछि ताहि पर कवि कहैत छथि:- "नेना नहि अकानि पबैए / मायक ममता / पिताक वात्सल्य / ठो भरिक दूधपिब्बा आब / नहि चखि पबैए / ममतामे बोरल दूध / तें आओर बढ़ले जा रहल / वृद्धाश्रमक खगता।''

कविताक शीर्षक "भूत'', "की कहल जाए'', "निन्न उड़ि गेलै'', "अर्थसत्ता सभ पर भारी'', "ढेरी'', "भ्रष्टाचारक बिरार'', "करै कियो भोगै कियो'', "योजना'', "प्लास्टिक सर्जरी'' आदिमे सामाजिक बहुआयामी विकृतिकें चित्रित करैत कवि नारायण झा अति चिंतिनीय भावसं व्यथित छथि।

"फोटोमे भगवान'' शीर्षक कवितामे कवि देखौने छथि, जे कोना लोक धर्मक लेल विभिन्न तरहक आडंबर करैत अछि आ कोना अपने एहिसं असमंजस्यक स्थितिमे फंसि जाइत अछि। एकठाम कवि मानसिक द्वन्द्वमे ओझरा गेल छथि आ कहैत छथि:- "आइ भेटि गेला सभ भगवान / हमरा तरहत्थी पर खाइत काल भुज्जा / अखबार पर जे देलक / उठौने रहि कओर / की पड़ि गेला मोन / भगवान फोटोमे / अकबका गेलहुं / भुज्जा फेकब / तं अन्नपूर्णाक अनादर / खाइत रहब तं फोटो बला भगवानक अपमान''। ओतहि शीर्षक "छागोत्सर्ग'' मे कोना एकटा मायक ममताकें बलिदान दैत दोसर मायक ममताकें स्थापित कएल जाइत अछि, तकरे मार्मिक चित्रण अछि।

पोथीक "ओ'' शीर्षक कवितामे कविक मानवीय संवेदना नीकसं बहराइत अछि। अखनहुं जखन समाजमे नाम,जाति आ धर्म एकटा अलग उद्येश्ये पुछल जाइत अछि, जाहिसं सामाजिक समरसता सामाजिक प्रेम आ सभसं मूल तत्त्व मानवताकें धक्का लगैत अछि। ओतय कवि कहि उठैत छथि:- "नहि नहि, एकदम नहि / अहां भ्रममे छी / हम मनुक्ख छी / मनुक्ख......ओ!''

"पिताक थापड़-1'', "पिताक थापड-2'' शीर्षक एहि संग्रहक उत्कृष्ट कविता अछि। जाहिठाम कवि पिताक थापड़ प्रतीक रूपें प्रयोग कयने छथि। ओहि प्रतीकसं कवि कहए चाहै छथि जे कोनो एकहि परिवेशमे कोना दू तरहक परिणाम सामने आबि जाइत छैक। प्रतीकमे कहलनि जे एकटा पुत्र लेल ओ पिताक थापड़ उसाहब मात्र सफलताक द्योतक छैक, ताहि ठाम दोसर पुत्रक लेल ओहि थापड़क चोट किछु नहि क' पबैए। परिस्थिति, परिवेश आ समयानुकूल कोन काज कोना कएल जाए तकर नीक दृष्टिकोण देखाएल गेल अछि। "अस्त्र'' शीर्षकमे कविक उत्कृष्ट दृष्टिक भान होइत अछि। एहि कविताक ई पांति देखू:- ''जं रहितै बुझल / तं हत्या वला धातु / नेहोरा-मिनती क' / पैर पकड़ि लोहारक / मनाइये लितए / अपन संज्ञा / बदलबाक' रहितै''। एहिठाम कवि ओहि निर्जीव धातुमे जाहि तरहें मानवीय संवेदना भरने छथि, से एकटा फराक स्तरपर कविताकें ल' जाइत अछि। तहुं ठाम परिस्थितिजन्य कोना एकहि समाजक लोक चोर आ किओ साधु बनि जाइत अछि, जकर दर्शन देखाओल गेल अछि।

"शत-शत नमन'' मे तुकबन्दी रूपें महाकवि लालदासक सुन्दर परिचयात्मक वर्णन भेटैत अछि। "इहो धर्मे थिक'' कवितामे मजदूरक जे यथार्थ दशा रहैत छैक ताहिसं परिचित करबैत ओकरा प्रति कवि अपार संवेदना व्यक्त कयने छथि। सभकें समस्त सुख देब' वला मजदूर अपना लेल कोन तरहें एहि जीवनक आगू बेबस अछि तकर मार्मिक चित्रण कवि एहि कवितामे कयने छथि। कविक संवेदित स्वरकें देखल जाउ:- "खटि कारखानामे देह जराक' / किशिम-किशिमक वस्तु बनाक' / बैसल पांजर ओकर उठबितौं / अपन ओरदा जे घटबैए / छै चैन कहां दिन रैन जगैए / देखि सपन, जीवन अपन खेपैए''।

"एहिना होइत एलै'', "गाम अखनहुं जीबैए'', "प्रेम'', "चकबिदोर'', "मनुक्ख कतेको बेर मरैए'', "गाम- शहर'', "स्मृति शेष'' आदि सेहो अपन नीक प्रभाव छोड़ैत अछि। "मनुक्ख कतेको बेर मरैए'' शीर्षकक ई पांति देखू :- "जखन नहि बचि पबै छै / लोकक साख / जखन लगै छै / चरित्र पर दाग / जखन लगै छै / कलंकक करिखा / जखन मेटा जाइछ / पुरुषक पुरुषत्व / स्त्रीक सतीत्व / एकटा मनुक्ख / कतेको बेर मरैए''। मनुक्ख आ मनुक्ख सन दुनू मे फराक बात छैक, तकरा कवि फरिछा क' नीक संदेश देलनि अछि।

कवि नारायण झाक कविता शहरो भ्रमण कयलनि अछि, मुदा कविताक मूल उत्स ग्रामीण परिवेशे छैन्हि हमरा दृष्टिकोणसं। कविता पढ़बा काल कतहुं ई आभास नहि भेल अछि जे कविताक अर्थ तकबा लेल कोनो द्वीप-महाद्वीपक भ्रमण करए पड़ए। शब्दक अर्थ तकबा लेल डिक्शनरी वा गूगल सेहो नहि करए पड़ल। तहिना कविताक भाव-पक्ष सबले नहि, खूब सबल छैन्हि, जे कविताक अपन लक्ष्य धरि ल' जएबामे बहुत हद धरि सामर्थ्यवान प्रतीत होइत अछि। मैथिली साहित्यक मूर्धन्य समालोचक डॉ. अमरेश पाठक अपन निबन्ध शीर्षक ' "मैथिली नव कविता ओ सम्प्रेषणक समस्या'' मे स्पष्ट करैत कहने छथि- "आधुनिकताक नाम

पर, अकविताक नामपर, प्रगतिशीलताक नामपर, ढ़ेरीक ढ़ेरी अग्निजीवी, वायुजीवी, उत्पन्न भ' रहल छथि। जनिक कविताक कोनो अर्थ हुनका छोड़ि आन ककरो नहि लगैत छैक।'' ताहि ठाम कवि नारायण झा हमरा बुझने "सुलभजीवी'' लगैत छथि।

सम्पूर्ण रूपें दृष्टिपात कएलाक बाद हम अपन मत सबलताक संग रखैत कहैत छी, जे एहि संग्रहक काव्य-यात्रामे कवि नारायण झाक कविताक विशेषताक अन्तर्गत विषयक विविधता, व्यापक आ फरिच्छ दृष्टिकोण, उदार विचार, सरलता आ सहजता, यथार्थवादी लेखन मतलब काव्यकें जस कें तस कहब, उपमा आ बिम्बमे मौलिकता, ग्रामीण परिवेशक दृश्यांकन आदि सोझां अबैत अछि। मैथिलीक मौलिक शब्दक प्रयोग हिनक कविताक एकटा विशिष्ट विशेषता छैन्हि। एहि संग्रहमे एहेन कतेको शब्द आयल अछि जे हेरागत देखल जा रहल अछि अर्थात उपयोग कम भ' रहल अछि, जेना - निंघेस, मड़ैया, गम्हराएल, निमुधन, घोंकल, कोनियां, मरखाह, खखरी, अबरजात, गढ़ुआरि, लहालोट, चोटभुस्सुक, गौंछल आदि। ओतय संग्रहक समीक्षात्मक कार्य करबा काल किछु - किछु कमी सेहो अभरल अछि, सेहो स्वाभाविके। किएक तं कोनो कविक श्रेष्ठ रचना ओहि कविक अंतिम सांस धरि लिखब बांचल रहैत अछि। एहि पोथीमे ठाम-ठीम वर्त्तनीक अशुद्धि रहि गेल अछि, जाहि लेल कवि आ प्रकाशक दुनू गोटे जिम्मेदार छथि। किछु कवितामे काव्य-प्रवाहक कमी सेहो अभरैत अछि। अपन शाब्दिक सामर्थ्यसं चमत्कृत करैत कवि कतेको कविताकें अलंकृत कएने छथि मुदा किछु शब्दक चयन हिनका ओहि सामर्थ्यकें साधारण बना रहल छैन्हि। कविकें किछुठाम शब्दक प्रयोगमे मितव्ययी होयब आवश्यक छलनि, जे अनावश्यक-अनावधान शब्द कमीकें उजागर करैत छैन्हि। कविताक शिल्प रूपें हम कतहुं -कतहुं झूसक अनुभूति सेहो करैत छी, जकरा आओर कसबाक खगता छल। एकटा आओर कमी देखाइत अछि जे एकहि काव्य संग्रह मे तुकबंदी कविता आ नव कविताकें नहि संकलित कएल जाएबाक चाही, ओना ई कविक विचार थिक मुदा अलग-अलग संग्रहीत होयने नीक भ' सकैत छल।

हिनक कवितामे कटु यथार्थक अभिव्यक्ति, राजनीतिक विसंगतिक उद्घाटन, कुण्ठा- संत्रास, अखिल मानवताक भावना, प्रगतिशील मूल्यमे आस्था, धर्मक वास्तविक यथार्थक उद्घाटन, रूढि आ विसंगतिक प्रति विरोध, जिजीविषा, प्रकृतिक प्रति अगाध प्रेम, असहाय लोकक प्रति संवेदना आदिक भाव खूब नीकसं समाहित भेल अछि। कवि नारायण झा कारयित्री आ भावयित्री दुनू प्रतिभा सं संपन्न कवि छथि। कविताक भावक स्तर पर ई अपन फराक जगह बनौने छथि। अपन पहिल संग्रह "प्रतिवादी हम'' सं एहि संग्रहक काव्य यात्रामे अपन दू डेग आओर बढ़ौलनि अछि मुदा एहि यात्रामे कवि अपन मूल स्वभाव नहि छोड़लनि। आशा करैत छी जे कवि एहि संग्रहमे आएल कमीसं परिचित होइत, किछु समय ल' आओर सशक्त भ' क' अपन अगिला कृतिक संग उपस्थित हेताह। कवि अपन काव्य-यात्रा पर बढ़ैत अपन रचना-संसारकें आओर सुदृढ़ करैत, अपन लक्ष्य दिस बढ़थि। ■

सन्दर्भ

1. 'प्रतिवादी हम' (कविता संग्रह): नारायण झा, नवारंभ प्रकाशन, पटना/मधुबनी, 2013 ई.
2. 'अविरल-अविराम' (कविता संग्रह): नारायण झा, नवारंभ प्रकाशन, पटना/ मधुबनी, 2017 ई.
3. यू ट्यूब पर सौरभ द्विवेदीक कविता वाचन
4. ए.न.ओ.यू. पटनाक एम.ए. पाठ्य सामाग्रीक सोलहम् पत्र,पेज नं. 64

(पृष्ठ 38 केर शेष)

सत्ता आ प्रेमक चुनौतीः दुःस्वप्न वा दिवास्वप्न

प्रेमी जन कें नहि चाही/कोनो सुख-सेहंता प्रेम अपने अछि एहन/अनिर्वचनीय सुख/ जकर नहि भ' सकैछ/कोनो आन चीज सं तुलना'। ओहिना 'हम कोनो देवपुरुष नहि छी' कविता मे लिखैत छथि, 'एगो अदना सन मनुक्ख आ अहांक प्रेमी छी/तें मनुक्खे जकां करब अहां सं प्रेम/आ चाहब जे भेटय हमरो/अहांक अकल्पित अनुराग।' ताहिना 'यौवन' मे हुनकर शब्द अछि, 'ई जिनगीक एहन दौर होइत अछि/जखन प्रेम सभसं नीक आ/प्रेम करब सबसं ठीक/काज बुझाइत अछि/एहन समय मे निन्न कम/आ सपना बेसी अबैत अछि/भूख घटि जाइत अछि आ/ पियास बढिते जाइत अछि'।

एही समयमे एकटा कवि एक दिस जों अपन कविताक माध्यम सं संस्कार, समाज आ सत्ताक 'इस्टेबलिश्मेंट' पर लगातार प्रहार क' रहल अछि तें दोसर दिस प्रेमक भाषा सीखि रहल अछि ते एक बेर सोचल जा सकैत अछि जे ओ एही धरा आ धरा पर रहय बला लोक कें कोण दृष्टि सं देखि रहल अछि आ केहन दुनिया बनाबैक स्वप्न देखि रहल अछि। वरिष्ठ कवि आ संपादक केदार कानन एक ठाम लिखैत छथि जे, 'रमणक कविता पढैत काल बोध होइत अछि जे हुनक शब्द-शब्द जेना हृदयमे उतरि रहल हो। सरल आ मोहक। स्पष्टता आ मुखरता समेटने।' परंच कविता पढ़य काल केदार कानन कविता के शब्द पर ध्यान ते दैत छथि मुदा कविता के विषय आ ओकर गंभीरताक लेल हुनकर चुप्पी बड़ रास बातके आगू आनैत छैथ। चूंकि रमण कुमार सिंहक कविता आ कविताक शब्द एतेक गहींर प्रहार करैक क्षमता राखैत अछि जे कोनो पाठक ओकर भाव आ शब्दक मायाजाल में फंसि के रहि जायत अछि आ समाज मे गंभीर परिवर्तनक गप एकटा दुःस्वप्न नहि दिवास्वप्न बनि के सं जायत अछि। ■

भूमंडलीकरणक असाधारण शब्द चित्र

✍ **पंचानन मिश्र**

मैथिली साहित्य मध्य कविता विधा अत्यधिक सुसम्पन्ने टा नहि, गुणवत्तापूर्ण ओ परिचित पोषक रहल अछि। प्राचीनता ओ अनवरत काव्य साध नाक अमूमन सात सए वर्षक इतिहास थिकैक। समकालीन परिवेशक समावेश मैथिली कविताक अन्यतम वैशिष्ट्य रहल। आधुनिक मैथिली कविता आ उचित कहब इएत जे तिहत्तरि वर्ष पूर्व सं अर्थात् स्वराज्य सं एकैसम शताब्दीक दोसर दशक धरि एहि अन्यन्तले नहि थोड़ तं ई विधा तीन धाप पार कएलक, तीन धाप नांघि आगां ससरि गेल। परम्परावादी कविताक सृजन पहिल फांटि थिक। दोसर कोटिमे परम्परा ओ आधुनिक दृष्टि प्रधान भए समन्वित अछि आ तेसर जे अत्याधुनिक कलेवर मे शामिल थिक ताहिकें सर्वाधिक प्रभावित कएलक। 1993 ई. क भूमण्डलीकरण। आ, कृष्णमोहन झा 'मोहन'क कृति ''ग्लोबल गाम सं अबैत हकार'' जकर निहितार्थ थिकैक जे भूमण्डलीकरण अगवे देशक आर्थिक ओ मानवीय उद्यमिता टाएमे अभूतपूर्व परिवर्तन करबामे सक्षम नहि भेल अपितु भारत कोटिक सांस्कृतिक, सामाजिक, संरचनात्मक, जीवन-शैली, जेंडर स्थिति, ग्राम्य ओ नगरीय परिवेश, दाम्पत्य जीवन, पारिवारिक सरोकार आदि कतोक दिशा, कतोक दशाक जमीनी हकीकत सं सोझा-सोंझी करएबामे समर्थ बुझि पड़ैछ। विवेच्च कृतिकें, मैथिली कविताक ग्लोबल पृष्ठभूमि, प्रभाव,

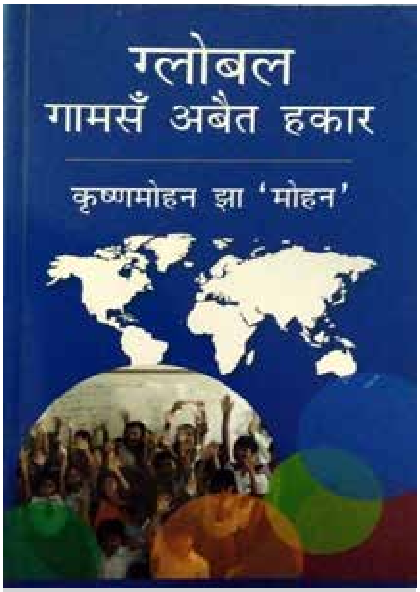

ग्लोबल गामसं अबैत हकार

रचनाकार	:	कृष्णमोहन झा मोहन
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	120
विधा	:	कविता संग्रह

परिवेश मे रचित रचनाक प्रतिनिधि वा अन्यतम कृति स्वीकार कएल जा सकैछ।

एतए हम कवि-सम्पादक केदार काननक ओहि टिप्पणीक उल्लेख करए चाहब जे प्रकाशकीयक अधीन ओना तं कृष्णमोहन झा 'मोहन'क असमान्य काव्य-प्रवृत्तिक संदर्भित थिकैक मुदा जौं गहींरी नजरिये देखल जाए तं ओहीसं मैथिली कविताक वैश्विक परिवेशक कतोक पक्ष हेरल जा सकैछ 'बाजारवादक आक्रामक दबाव लोक पर पड़ल अछि। अधिकाधिक उपभोगक प्रवृत्ति ने मात्र मूल्यक अभावक कारणे अपितु बजारक दबावक कारणे सेहो बढ़ि गेल अछि। अधिकाधिक उपभोग समाजमे प्रतिष्ठाक मानक बनि गेल अछि। जे हमर-अहांक भविष्यपर एकटा प्रश्नचिन्ह जकां टांगल अछि।

बाजारवादक चमक-दमक आ ताहिसं त्रस्त पीड़ित मानव मनक नव चित्रणक संग हिनक कविता पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। गाम आ शहर, दुनूक रहन-सहन आ स्तर, जीवनक नेह-छोह, राग-विराग आ तकर आर्तसंबंधक बीच सं फुटैत हिनक कविता सभ चाकर-चौरस बाटक निर्माण करैत अछि। जतय ठाढ़ भ' ई कखनो गाम-घर, बाघ-बोन, संस्कृति, रहन-सहन आ छूटैत जाइत राग-बंध आ संबंधक सीरकें चिन्हबाक उपक्रम करैत छथि तं कखनो नगरीय जीवनक चाक-चिक्यक चकभाउरमे थाहि-थाहि मुदा सचेद डेग उठबैत छथि।' (प्रकाशकीय/केदारकानन/ग्लोबल गामसं अबैत हकार)।

वैश्विक परिवेशसं प्रभावित कविता मे अदौकेर सांस्कृतिक तत्व ओ नितांत निजता तथा दोसर भाग 'मैकडोनाल्ड', 'नाइक', 'अल्फ्रेड' आदिक उत्पादक

पंचानन मिश्र झारखंड सरकार मे श्रम अधीक्षक पद सं सेवानिवृत्त छथि। मिथिलासँ सम्बन्धित पुरातात्विक, इतिहासपरक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, संरचनात्मक, एवं सामयिक तथ्यात्मक आलेख प्रकाशित। मैथिलीक भाषायी आन्दोलन विषयक आलेख। साक्षात्कार परिचर्चा, रिपोर्ताज, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, समीक्षा, लघुकथा साहित्य ओ साहित्यकार विषयक रचना। अभिनय, प्रतीक संगीता वर्मा, आयुजानन्द छद्मनामसँ रचना प्रकाशित।

संपर्क *: अच्युत परिसर, लालबाग, दरभंगा प्रधान डाकघर, जिला दरभंगा-846604 (बिहार),* ***मो.*** *: 7217837789*

विलम्ब, प्रतीक, चेन्हासक एक बानगी निम्न थिक-

मन पड़ि जाइत अछि

गोढ़नी हाथक / तमहा चूड़ा / आ ढ़ेपा सनक सजबी दही / प्लेटक टोस्ट पर सुलाएल-टटाएल, ऐंठल, टेढ़ चीप्स कें देखितहि / मन पड़ि जाइत अछि / तिलकोरक तन्तुक तरुआ (मन पड़ि जाइत अछि / ग्लोबल गामसं अबैत हकार)।

भूमण्डलीकरण परिवारक संरचना ओ आचार-विचारकें प्रभावित कएलक आ सदस्यमे अपन परंपरा, रीति-रेवाज, निजताक अति अनास्था उत्पन्न करैत गेल। विद्रोहक स्थिति उत्पन्न कए देल। मैथिली कविता एहि विषय स्थितिक चित्रण मे समर्थ अछि-

अबैत-अबैत
समा एकटा एहनो भेलै जे
हमरा पोता-पोती कें
घर जेना काटय दौड़त छनि
आ मनोरथ बनि गेल छनि
क्लब, बार, रेस्तरां
उड़िआइत रहैत छथि हरदम
नदी कातक बाउल जेका

(समयान्तर/ग्लोबल गामसं अवैत हकार)

वैश्वीकरणक पांच आधार स्तम्भ स्वीकार गेल : विश्वस्तरीय व्यापार, पूंजी निवेश, संचार, तकनीकी विकास ओ जनसंख्याक गतिशीलता। संसारक कतोक देश जकां भारत मे एहि कारक सभहिं कें सहजहिं चिंहित कएल जा सकैछ। जेना संचार सुविधा दू स्तरीय विकसित भेल अछि-मोबाइल, इंटरनेट, ईमेल, वेबसाइट, सेटेलाइट, टीबी आदि आ दोसर जे उदारीकरणक कारणें, विदेशी पूंजी निवेशक कारणें, सिविल इंजीनियरिंगक अत्याधुनिक उपादानक कारणें सर्वसाधारण ाक जीवनशैली कें, मानसिकताकें, आर्थिक स्थितिकें बहुत समीप सं, गहीरसं, विस्तारसं प्रभावित कएलक अछि से थिक सड़क मार्गक अप्रत्याशित विकास। मुदा एकपेरिया, मटियाही, खरंजा कएल सड़कक स्थानपर दस फीटक कंक्रीट सड़क, प्रधानमंत्री सड़क योजना, राष्ट्रीय उच्च पथक कोर आ सिक्स लेनक एकैसम शताब्दीक विकास-यात्रा मैथिली कविताक माध्यमसं चिंतन करबाक लेल विवश करैछ जे भारत कोटिक निम्न वार्षिक आमदनीवला देश, गरीबी रेखाक सीमान्त पर बसल चालिस प्रतिशत लोक, प्रति माह बीपीएल ओ एपीएल क सुविधा पर आश्रित लोक लेल संचारक ई नव स्वरूप केहन लाभकारी भेल। मैथिली कविता एहि द्वंद्वात्मक स्थिति पर धरातलीय प्रकाश दैछ-

देखि रहल छी
गामक सिमान कें छूबैत
राष्ट्रीय उच्च पथ कें
जकरा एक कात
उजड़ल-उपटल
गरीब-गुरबाक
घर-आंगन
कनैत-खिजैत
बाल-बोध
आ दोसर दिस
ढाबाक नमहर तब पर पकैत
गोल-गोल रोटी

सोचय लगैत छी
ई विकास थिकै
आकि विकासक व्यापार
जे भूख आ रोटीक बीचो-बीच
बनबैत जा रहल अछि
हाथीक पीठ जकां ऊंच
आ सूंढ़ जकां नमरल सड़क
जाहि पर दिन-राति
दोड़ैत रहैत अछि
ट्रकक-ट्रक लादल
एकटा नारा
ग्लोबल गामक
एक मात्र नारा-
'क' लिअ दुनिया मुट्ठी मे।

(टोल-टैक्स/तथैव)

वैश्वीकरणक प्रक्रियामे प्रचार-तंत्र प्रभारकारी अवयव थिक। ई प्रचार तंत्र बाह्य स्थान के कहव, हमर सभक बेडरूम मे प्रवेश कए हमर जरूरति, हमर दृष्टिकोण, हमर प्राथमिकता आदिकें तेहन झंसगर रूपमे प्रभावित कएने जा रहल जे उचित-अनुचित, नीक-बेजाए, प्रयोजन-निप्रयोजन आदिक मूल्यांकन कए असमंजस स्थितिक सृजन कए देल। मैथिली कविता एहि असमंजसता सं ग्रसित सामान्य मानवीयक चित्रणमे सफल भेल बूझि पड़ैछ-

आइयो
राजनीति आ बाजारक
अनेरुआ लखी जेकां
विचार-व्यवहार
ओझरौने जा रहल अछि
समय-संभावना कें

आ एहि ओझरी सभक
झोंझ मे ओ
गढ़ैत रहैत अछि
हमरे मे हमर
एकटा एहन आकार
जकरा विज्ञापन
आ कि सलोगन सं
लोभाएल आ सकै
झूठ आ सांचक बीच
भरमायल जा सकै

अनुभूतिक
एहि क्षणकें
हम बाजय चाहैत छी
हाको दैत छियै
मुदा परिस्थिति कें
स्वीकार क' लेने लोक सभ लग
हमर टहकार
पहुंचियो कें
नहि पहुंचि पबैत अछि।

(खाधिक परम्परा / तथैव)

वैश्वीकरण एक बहुआयामी, बहुलक्ष्यीय ओ बहुलांशी अबधारणा थिक। एकर प्रभाव क्षेत्रमे अमूमन चारि दिशा परिमाणित अछि- राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ आर्थिक। आर्थिक क्षेत्रहु मे पूंजी, उत्पादन, वितरण, विनिमय,

उपभोक्ता आदि प्रमुख तत्व थिकैक। उपभोक्ता बनबाक उद्देश्य रहैछ मूलभूत आवश्यकता भोजन, वस्त्र ओ आवासक सरंजाम करब। जतए धरि आवासक प्रश्न अछि, भारत कोटिक देशमे 2022 ई. धरि समाहिकें मकान मुहैय्या करएबाक लक्ष्य स्वराज्यक तिहत्तरि वर्ष उपरान्त थिर कएल गेलाई मकानक स्वरूप आब अपार्टमेंट, ग्रीन सिटी, कॉलोनी आदि मे निर्मित भए रहल छैक। परम्परागत मकानक संरचना आ ई नवीन पाश्चात्य शैलीक अनुपालनक मकान मे संवेदनाक स्तरपर, व्यवहारक स्तर पर, जीवनशैलीक स्तरपर पर्याप्त अन्तर, पार्थक्य ओ विभाजन देखबामे अबैछ। पुश्तैनीक मकानक परिवेश जतए आत्मीयता, संतुष्टि ओ उपकारक भावनासं ओतप्रोत छल ततए नव ढांचाक कालोनी मे अगवे असगहआपन, दमघोंटूपन ओ सीमा धरि सहयोगक अभावदेखक मे अबैछ। मैथिली कविता एहि नवीन जीवनशैलीक, स्वराज्यक दू दशक उपरान्त इजाद मकान निर्माणक योजनाक, हरित क्रांति ओ उज्जर क्रांति सं सम्पोषित भवन निर्माणक त्वरितपनमे मानवीय जीवन क अंदेशा, आशंका आ किछु हद तक संत्रास क चित्रण सटीक ढंगें करैत बूझि पड़ैछ–

शहरक छाती पर
जत'-तत'
चतरल-पसरल
ऊंचगर-ऊंचगर
एपार्टमेंट सभ कें
बेसीकाल
हियासैत रहैत छी
कखनहुं लालसा सं
त' कखनो जिज्ञासा सं
मुदा कखनहुं काल
अंदेशा होमय लगैत अछि-
कहीं एना त' नहि जे
बाजारक चालि-चलन
सुख-सुविधाक नाम पर
सभकें गोसिया रहल अछि?
मखानक पोखरि जकां
खड़रि-खड़रि कें
देरीं लगा रहल अछि?
आ कि खुद्दी झटकि
गोटगर चाउरक बोरा सभक
छल्ली लगा रहल अछि...?

(अंदेशा/तथैव)

वैश्वीकरणक आत्मा थिक पूंजी आ वस्तु। एहि दुनू वस्तुक जखनहि आश्रियता मे अवरोध आबए लगैछ, वस्तुक बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़य लगैछ, नियोजन मे लॉक-आउट ओ रिट्रेंच होमय लगैछ आओर तकर उत्तरोत्तर परिणाम मानव जीवन पर जाहि मानसिक, शारीरिक, आर्थिक रूपमे देखबा मे अबैछ तकर चित्रण मैथिली कवितामे भेटैत अछि–

हम ओहिखन
अवसन्न भ' जाइत छी
जखन ई पूंजीवादी
बाजारू व्यवस्था
एक मुट्ठी मे सुख
दोसर मुट्ठीमे
दुख कें बन्न कयने
भीड़ मे ठाढ़
बुद्धिक दाम लगबैत अछि
आ इजोतक तिलिस्म मे
अपन धुआं कें
नुका लैत अछि।

(बुद्धिक दाम/तथैव)

वैश्वीकरणक नकारात्मक प्रभावक परिणाम थिक जे साझी आशय ढहि कए आजुक तिथिमे तीन सदस्यीय एकल परिवार ठाढ़ भए गेल। नारी बोनिहारिनी छनि गेलि। गृहस्थीक काजक बिनु बोनिक मजदूरिन आ नियोजन। जीवन उपस्यांत, वेदनापूर्ण ओ अशान्तमय। ताहू मे अर्द्धनगर, नगर, महानगर जतए कतहु वास होइनि मात्र भागम-भाग। मैथिली कविता मे एहि दौड़-बहरहाक जीवनशैलीक चित्रण देखैत छी–

ताकय लगलहुं
घरक स्वभाव विचारमे
एकटा स्थान
जतय मनक एहि निर्दोष आनन्द कें
कतहु ठाम छै सकियै
मुदा,
शहरक घर
आब अनुभूत सुखक
नामो कहां जनैत अछि
एतय त'
लोक जतबय किनैत अछि
ओतबय जीबैत अछि।

(तरहत्थी पर रौद/ग्लोबल गामसं अबैत हकार)

वैश्वीकरणक महाप्रतापें प्राप्त अछि अत्याधुनिक तकनीक, इलेक्ट्रोनिक यंत्रक सुरक्षित व्यवस्था, एकटा एहन स्थायी व्यवस्था जाहिमे मानवक इतिहास सदति जोगाएल रहि पाओत आ मैथिलीक कविई नव इजादकें, नवयोगदानकें, नवउपक्रमकें अभ्यर्थन मे लिखैत छथि–

हमरा परिस्थिति पर
पएर राखि कें
औकातक सिढ़ही
एना जुनि चढ़ू
हमर जिनगीक गीत
अपन स्वर बदलि लेत
हिस्सा भहि जिनकी हमर
आबो धकिआउ नहि
रहल-सहल विश्वास
अपन विचार बदलि लेत।

(हिस्सा भरि जिनगी हमर/आहए)

एहि संग्रहक एकाधिक रचना अपन विविधता लेल उल्लेखनीय अछि। जेना बंसपिट्टी ओ विकास मे वर्तमान वैषभ्य, हमर नवगधुली मे नव खाढत्रे संग कएल जाइत अनाचार, गड़हैत जिनगी मे जिनगीक कटु सत्य, एकतरफा महाभारत मे चतुर्दिक षड्यंत्र, केचुआयल लोकमे सुविचारित जीवनशैली, तैं कहैत छी धृतराष्ट्र मे सत्ता सुख मे लागल आन्हरजाल, से कहां बुझि सकलियै मे जेनरेशन गैप, बचल खुचल गाम मे सापिफक विलोपीकरण, अभाव आ काज मे अभावे-अभाव आदि द्रष्टव्य अछि।

सारत: कृष्ण मोहन झा 'मोहन'क ई कृति मैथिली कविताक भूमंडलीकरण संदर्भित रचनाक विभिन्न दशा-दिशाक सशक्त कृति मानल जा सकैछ। ■

प्रेम-अनुराग सं सिक्त काव्यधारा

✍ रोमिशा झा

मैथिली काव्य साहित्य मे तुलनात्मक स्तर पर स्त्री काव्य चेतना आ स्वरक अभाव रहल अछि, तथापि किछु कवयित्री सभ बीसम-एकैसम सदी मे अपन योगदान द' काव्य साहित्य के यात्रा मे स्त्री पदचिन्ह के स्पष्ट छाप छोड़लनि जाहि मे डॉ. इलारानी सिंह, डॉ. नीरजा रेणु, सुशीला झा, वन्दना झा, शेफालिका वर्मा, ज्योत्सना चंद्रम, सुस्मिता पाठक, कामिनी चौधरी, नंदिनी पाठक, माला झा, निवेदिता झा, बिभा कुमारी, निक्की प्रियदर्शी रोमिशा, बिजेता चौधरी, स्वाती शाकम्भरी आदि अछि। एहि श्रृंखला मे एकटा महत्वपूर्ण कवयित्री छथि शारदा झा। अपन पहिल कविता-संग्रह 'प्रेम कविताक बाद' से एकटा निस्सन मैथिली कवयित्री के रूप मे ई स्वयं के स्थापित क' चुकल छथि। 'बीत जयबाक क्रम मे' हिनकर दोसर मैथिली काव्य संग्रह छन्हि। कवयित्रीक कविता स्वर स्त्री जीवन के संघर्ष, अंतर्मनक अन्तर्विरोध, स्त्रीक से अपेक्षा आ उपेक्षा के यातना यात्रा, प्रेम-स्नेह-संबंध, नारी-अस्तित्व, हृदय-संवेदना आ विषाद आदि सूक्ष्म मनोभावक कविता सभ अछि। ओ अपन स्वर मे नहि त' उग्र होइत छथि, नै ओनायल हुनकर विरोधक स्वर सेहो बहुत मद्धिम छन्हि।

बीति जयबाक क्रममे

रचनाकार	:	शारदा झा
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/पटना
वर्ष	:	2010
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	120
विधा	:	कविता संग्रह

हमरा लेल शारदा झा के कविता मतलब जीवन मे प्रेम आ अनुराग बचेबाक आग्रह। स्त्री सुलभ मनक कोमल भाव के शब्दशः कागज पर उतारि देब हुनकर खूबी। कवयित्री स्वयंके जटिल होइत जाइत दुनियाक व्यापक समस्या लग कविता सभ मे प्रेम, अनुराग, आसक्ति, पारिवारिक-सामाजिक विडंबना, सम्मोहन आकर्षण आ सामाजिक अन्तर्द्वन्द्व के दर्शनक धरातल पर राखि कविता रचैत छथि। हिनकर कविता सभ जीवनक कठोर सत्य लग अपना लेल किछु, मधुर शांत कोन तकैत अछि जे कोनो स्त्री के पुनः ऊर्जावान बना जीवन यात्राक मार्ग मे हुनकर पथ प्रशस्त राखैत अछि।

'विदा' श्रृंखलाक सातो कविता मे विदा शब्दक कटु यथार्थ बहुत कोमलताक संग अलगाव पीड़ा के दर्शन के रूप मे लिखि कवयित्री प्रेम आ आसक्ति के जीवित राखबाक पक्षधर छथि।

''बुन्न-बुन्न क' भाप बनि उड़ि गेल
प्रेम कें छिड़िया देबय पड़त अकास मे
बरखाक बाद इन्द्रधनुष
नहि रहि जाय सुखायल
एहि संसारक लेल
कविता ओतबे जरूरी छैक जतबे प्रेम''

हिनकर कविता मे नायिका निरीह नहि अछि अपितु नारी स्वभाव के सहज गुण सं पूर्ण स्वयं कें परिस्थिति लग नतमस्तक केने छथि आ ई आत्मसमर्पण ओ सामाजिक हित मे कयने छथि। चित्र श्रृंखलाक दुनू कविता एहि भाव के अछि जतए स्पष्ट-जीवन संघर्ष आ वैचारिक प्रगतिवाद के बादो नायिका सीमा रेखा तय क' लेलक अछि समाजिक सरोकार लेल-

''मुदा चित्र मे नहि देखाइत अछि
मात्र एकटा चीज
जे ताला छैक बन्द

(शेष पृष्ठ 48 पर)

रोमिशा झा मैथिली कविता केर सशक्त युवा हस्ताक्षर छथि। हिनक कविता मैथिली आ हिंदी के प्रतिष्ठित पत्रिका सभ मे प्रकाशित भ' चर्चित भेल छनि। ओ आलोचनाक क्षेत्र मे सेहो सक्रिय छथि। हिनक पहिल मैथिली कविता संग्रह शीघ्र प्रकाशित होयबला छनि। हिनक पेंटिंग मे सेहो रुचि छनि।

संपर्क : *166, डीडीए फ्लैट्स, तीसरी मंजिल, खिड़की गांव, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017*

मो. *9810882109,* ***ईमेल :*** *romisha094@gmail.com,*

बेटीक जीवन पर केन्द्रित काव्य

✍ शंकर 'मधुपांश'

स्वतंत्रता प्राप्तिक बहत्तरि बरख बीतलाक बाद भारतक समाज मे नारीक स्थान कतेक रास सकारात्मक परिवर्तनक संग क्रमशः नीक भेलैये, मुदा एखनो धरि ओ अप्पन गरिमा कें पूर्णतः प्राप्त करबा मे असफल अछि। नारी आ पुरुष, समाज निर्माणक ई दू टा अवयव समान रूपें जिम्मेदार, मुदा कतहु ने कतहु जखन एक पक्ष द्वारा दोसर पर अभियोग, लांछन, तिरस्कार, अपमान आ अत्याचार देखबा मे अबैछ तं संवेदनशील हृदय दुखक अनुभव करैये, से चाहे ओ ओहि दुन्नू मे सं कोनो पक्षक प्रतिनिधि कियैक ने हो। विभिन्न प्रकारक सुधार, कानूनक मदति सं कयल जा रहल छैक आ उत्तरोत्तर नारीक अधिकार आ व्यापकता मे परिवर्तन सेहो देखबा मे अबैये मुदा एखनो सामाजिक आ पारिवारिक स्तर पर बहुत किछु परिवर्तन होयब जरूरी छैक। से जखन एहेन संक्रमणकाल सामने हो आ सामाजिक समानताक तराजू एकभगाह झुकल देखाइत हो तं कवि/कवयित्री केर हियाक कचोट कविताक रूप मे अपन अभिव्यक्ति पबैत अछि आ लोकक सोझां अवतरित होइत अछि पुस्तकक रूप मे, जेना मुन्नी कामत केर कविता संग्रह 'अंततः'।

कुल 104 कविताक ई संग्रह आरम्भ होइत अछि 'अंकुराइत बीया' सं जतय एकटा उम्मीद छैक जे जखन ओ अंकुरल बीया गाछक आकार लेतैक तं –

"ई देत अहां कें छांह,
किछु पात तं होबय दिऔक"

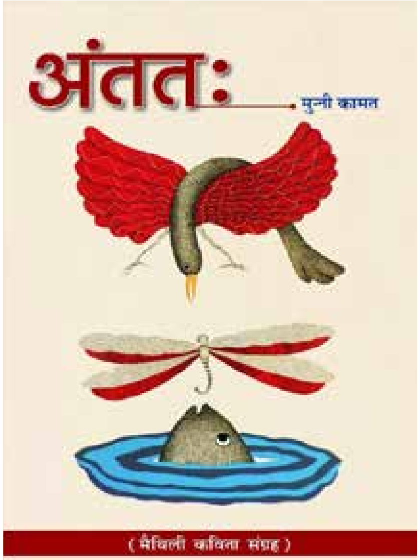

अंततः

रचनाकार	:	मुन्नी कामत
प्रकाशक	:	गीताश्री प्रकाशन
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	128
विधा	:	कविता संग्रह

जतय संततिमात्र मे समानताक भाव राखक मांग छैक –

"संतान तं संताने होइत छैक,
नवजात कें जीबाक अधिकार तं दिऔ"

आ जतय आगां लेल एकटा प्रबल आस छैक जे कहैत छैक जे –

"हंसैत रहय ई आंगनक तुलसी,
एकटा दीप तं जरा दिऔ"

मुदा आगां जखन बढैत छी तं 'अन्हराइत समय' देखि देह सुन्न भ' जाइत अछि, जखन धरैनक ससरी सं लटकल बेटीक ठठरी माय सं कहि रहल छै –

"माफ करब माय, हम नहि बचा पौलहुं
अपन मान, जे हाथ कोरा उठेलक
वैह केलक आइ अपमान"

पोथीक पृष्ठ उनटैत रहल, सामाजिक स्तर पर पसरल विभिन्न समस्याक मार्मिक अभिव्यक्ति देखाइत रहल मुदा आद्योपांत पुस्तकक केंद्र मे नारी अपन वेदना आ दुविधाक सम्पूर्णताक संग उपस्थित रहल, कखनो जननी बनबाक खुशी मे बच्चाक प्रति सिनेह सं सराबोर तं कखनो ओही संतानक पैघ भेला पर ओकरा लेल 'झोल' बनल, कखनो मायक रूप लेने तं कखनो बेटी बनलि 'खंड-खंड सम्बंध' कें निहारैत, कखनो 'शापित बेटी' तं कखनो 'सबला', कखनो 'सुनसान' मे बैसलि बेटाक बाट हेरैत तं कखनो 'अलच्छ' हेबाक लांछन लेने, मुदा 'भोर' हो आकि 'जेठक दुपहरिया', कहनिहारि 'यशोधरा' हो अथवा 'सासू मां' व्यवस्था पर ओ बड़का प्रश्नचिह्न सोझां सं कखनो नहि हटैत अछि। रूप बदलैत रहल, भाव बदलैत रहल, पात्र, काल आ स्थान बदलैत रहल मुदा गर्भ मे बैसलि बेटीसं लय परदेशी बेटाक प्रतीक्षा करैत बुढिया तक अंतर्मनक व्यथा आ परिवेश मे पसरल विसंगति सभठाम कमला-कोशीक धार जेकां संग संग बहैत रहल।

अपना सभक 'बदलैत समाज' मे भने चारि चारि टा बेटा रहैतो सुन्न पड़ल घर

शंकर मधुपांश मैथिलीक नवोदित कवि, मूलतः छंदबद्ध आ पारंपरिक कविताक सशक्त हस्ताक्षर जनिकर दू टा मैथिली आ एकटा हिंदी पुस्तक प्रकाशनाधीन छन्हि।

***संपर्क :** मकान नं. 34, गली नं. 35, बी ब्लॉक कौशिक एंक्लेव, बुराड़ी, दिल्ली 110084*

***मो.** 8851630134, **ईमेल :** prince22121969@gmail.com*

दुआरि मे बूढ माय चुल्हि फुकैत हो, मुदा तैयो बेटी शापित अछि आ सब सं पैघ विडम्बना तं ई जे नारिये नारीक सब सं पैघ दुश्मन बनल देखाइत छथि –

"बेटियेक नाम सूनि गदगद मोन मुरुझा गेल
खुशीक आंखि मे दु:खक नोर डबडबा गेल।''

तखन कोना मानि ली जे "ममताक सागर स्त्री सिनेहक खान अछि'' आ ओकर ई सिनेहक धारा ओकर अपन संतति पुत्र आ पुत्री दुन्नूक लेल समान वेग सं प्रवाहित होइत छैक?

खाहे ओ 'निर्लज्जता' मे बांस सं लटकैत, नृशंस बलात्कारक शिकार भेल मुइल बेटी हो, अथवा 'डिबिया तर अन्हार' कविताक 'कंचाहे मे बनल माय', 'झूलैत सांच' क उज्जर चुनरी सं लटकैत नोंचल कन्या हो वा 'बाल विवाह' मे कनियां-पुतरा खेलाइक अवस्था मे कोरे मे चढि मंत्र पढैत कन्यादान भेल बेटी, संग्रहक सभटा कविता एकटा बड़का टा प्रश्नचिह्न ठाढ करैत अछि जे एहेन समाज मे की प्रासंगिकता रहि गेलैये 'महिला दिवस' केर? कोना वर्णन आ वंदन करू 'नारी शक्ति' क? कतय सं आनू जीबैत रहबाक 'हुब्बा' आ कोना मानि ली जे 'गुरु थिक माय'?

विभिन्न प्रकारक सामाजिक समस्या, अधिकांश रूपे नारीक परिस्थिति पर केंद्रित कविता सभक एकपेरिया सं होइत 'अंतत:' जतय समाप्त होइत अछि ओ स्थान वैह थीक जतय –

"डेग-डेग पर एखनहुं बेटी लेल वैह प्रश्नचिह्न बनल अछि''

यद्यपि पुस्तक मे आनो आनो विषयक समावेश कयल गेल छैक जेना 'शहादत', 'नववर्ष', धार्मिक वैमनस्य, आतंकवाद, पर्यावरण, किसान, आधुनिकता इत्यादि, मुदा आरम्भ सं अंत तक ई पुस्तक नारी-विमर्श कें एकटा नव आयाम दैत अछि आ ओहि सभटा विसंगति कें रेखांकित करैत अछि, जाहि सं अपना सभक समाज एखनहु धरि मुक्त नहि भ' सकल अछि। सर्वांगीण रूपे कहल जा सकैये जे ई एकटा पठनीय पुस्तकक रूप मे लेखिका केर 'सुखल आंखि तरसल आंखि' क बाद दोसर प्रस्तुति थिकन्हि आ निश्चित पढल गुनल जेबाक चाही।

यद्यपि पुस्तक मे कतहु-कतहु वर्तनीक दोष आ किछु अनभुआर सन शब्द अवश्य भेटैत अछि, मुदा कविता सभक सरल शब्दावली आ ओहि मे सन्निहित भावक तरंग आ प्रवाह सं ओ सभटा कमी कतिआ कें मोनक किनछेर मे एकात लागि जाइत अछि आ सोझां मे बस एकटा भयावह कल्पना बचैत छैक–

"बिनु बेटीक कने सोचिऔ, केहेन हेतैक घर दुआर?'' ■

(पृष्ठ 46 केर शेष)

प्रेम-अनुराग सं सिक्त काव्यधारा

भीतरहिसं
आ कुंजी बान्हल छैक
ओकर अपनहि आंचरक खूट मे।''

कविता 'स्वीकार अछि हमरा' मे कवयित्री के स्वीकार्य भाव अपन चरम पर छन्हि जतए ओ ओहि सीमा धरि सब किछु बरदाश्त क' सकैत छथि जतए धरि मनुष्यक प्रेमक अस्तित्व आ मनुष्यता पर कोनो खतरा नहि होअए।

''स्वीकार अछि हमरा
मनुष्यक सौहार्द
दान, करुणा आ मानवता
घात-प्रतिघात आ असमानता
सभ किछु...
मुदा नहि अछि स्वीकार पतन
संसारक सभ स्वरूपक
पृथ्वीक अदम्य रूपक...
नहि अछि स्वीकार वैमनस्य
भावनाक रंग मे
संबंधक संग मे''

हिनकर किछु कविता सभ जेना कि 'प्रतिध्वनि', 'प्रेम मे भेनाइ', 'डोना पौला', 'गोपी', 'से जे अहां कहने रही', 'इजोत दिस बढ़ैत जोग' आदि सभ कविता मे जाहि उच्च दृष्टिकोण सं प्रेम के देखल, परिभाषित आ अंगीकार कएल गेल अछि, ओकरा बुझबाक लेल चेतनाक विस्तृत आयाम आ संवेदनाक सूक्ष्म तार सं बुनल मन होयब आवश्यक। हिनकर प्रेम कविता सभ मे कामवासना आ प्रेम के मध्य जे स्पष्ट पातर रेखा होइत अछि, ओकरा कोनो प्रेमी हृदय जं काव्य साकांक्ष होअए सद्य: अकानि सकैत अछि। हिनकर कविता सभ प्रेम अरिपन अछि आ कि कही जे प्रेमक अलग-अलग रंग सं सिक्त इन्द्रधनुष। प्रेम मे विरह-मिलन, वेदना आ पीड़ा हिनकर कविताक प्राण तत्व छियैन्ह। हिनकर कविता सभ मे सामाजिक नियम मे बन्हायल मनुष्य केर चेतना के दारुण क्रंदन आ पीड़ा अछि आ ई एहि कवयित्री के महादेवी वर्मा आ शेफालिका वर्मा के निकट ठाढ़ करैत अछि। हिनकर सृजन-प्रक्रिया मुख्यत: भावात्मक अछि आ वैचारिक प्रगतिवाद आ प्रगतिशील परिप्रेक्ष्य के बादो सामाजिक या राजनैतिक बदलाव लेल कोनो व्यग्रता आ कि परिपक्व अवधारणा के कनिक अभाव छन्हि। हिनक कविता सभ सूक्ष्म संवेदना के कविता त' अछि मुदा आजक युग मे जाहि ओज आ विद्रोह के संगे विचार कविता मे अएबाक चाही तकर कनिक अभाव छन्हि। कविता सभ मे मानव जीवनक आकर्षण-विकर्षण, राग-विरागक अद्भुत विस्मय भेटैत अछि। हिनकर कविता सभक सभ सं पैघ खूबी जे कविता मे कविता तत्व बहुत नीक से बांचल रहैत अछि। कविता अपन रंग, रूप दृष्टि मे बोझिल नै होइत भाव, कथ्य आ शिल्प के सहजताक संग पाठक धरि अपन संप्रेषणीयता बनबैत अछि। ■

पूर्व आ पश्चिम तं फराक थिक जीवनक यथार्थ

✍ विनीत उत्पल

भारतक सभ्यता सदिक्खन अपन वर्तमान काल सं आगू रहल अछि मुदा ब्रितानी शासनक बाद पश्चिम दिस देखब आ बुलब हमर सभक परिणिति नियति भ गेल बुझाइछ। यहि कारण अछि जे विज्ञानक तमाम फार्मूला पश्चिम भ' के पूर्व दिस आबैत अछि ते सामाजिक विज्ञानक तमाम विषयके थ्योरी आ मॉडल मे पश्चिमक प्रभाव स्पष्ट रूप सं देखल जा सकैत अछि। हम सभ पश्चिम के देखौंस आ पश्चिम दिस जायब एकटा 'स्टेटस सिम्बल' बुझैत छी। तखन युवा कवयित्री स्वाती शाकम्भरीक कविता संग्रह 'पूर्वागमन' ओही विरोधक प्रतीक बुझा पड़ैत अछि। अपन कुल साठ टा कविताक माध्यम सं स्वाती जेना मनक द्वंद्व-प्रतिद्वंद्व, परिवारक दशा-दुर्दशा, समाजक स्थिति-परिस्थिति के आगू राखने अछि, ताहि सं हुनका लीक सं हटि के कवयित्री मानल जा सकैत अछि। ओहिनो कबीरदासजी कहि के चलि गेलाह, 'लीक-लीक गाडी चलय, लीके चलय कपूत/तीन लीक कहियो नै चलय, शायर, सिंह आ सपूत'। तखन स्वाती लीक सं कोना चलि सकत।

मार्क्स के कहब छल, 'नीक कविता मनुष्यताक मातृभाषा होयत अछि', तहिना स्वाती शाकम्भरीक कविता मनुष्यताक मातृभाषा अछि। मिथिला समाज मे स्त्री पराधीनता, ओकर वेदना आ ओकर संवेदना सहित ओकर अपमान आदि बड़ कविक अनेक रचना मे परिलक्षित होयत अछि। आय जखन बेसी कवि प्रेम आ प्रेमक इतर कविता लिख रहल अछि, ओहि काल मे स्वाती शाकम्भरी पुरुष आ

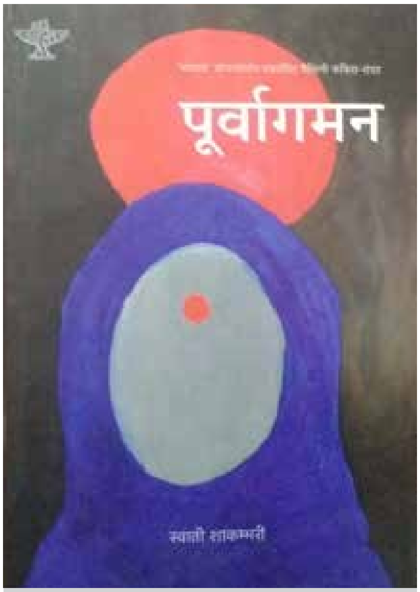

पूर्वागमन

रचनाकार	:	स्वाती शाकंभरी
प्रकाशक	:	साहित्य अकादमी, दिल्ली
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 160
पृष्ठ	:	195
विधा	:	कविता संग्रह

स्त्रीक पीड़ा के शब्दक जरिये एकटा नव दुनियाक कल्पना क' रहल अछि। ओ एकटा कविता मे लिखैत छथि,

'अर्थ-धर्म
काम-मोक्ष
पुरुषक सफलता
ओ विफलतापर
अनेक कहानी।'

एही ठाम कवयित्री जीवनक सफलता आ विफलता पर विचार करैत समाजक विडम्बना के आगू आनैत छथि जे लोक कोना बहाना बनाबैत अछि आ असफलताक दोष दोसरा पर आरोपित करैत अछि। सामाजिक यथार्थ पर कम शब्द मे कोना व्यंग्य केल जा सकैत अछि, ओ स्वाती के कविता सं सीखल जा सकैत अछि। जेना 'मुखाग्नि' कविता सामाजक विद्रूपताक एकटा बड़का प्रतिबिम्ब देखा पडैत अछि,

"कतेक कबुला-पाती
भगवती सं याचना
कथिक लेल?
कथिक लेल
एतेक हाय-हाय
एतेक जोड़ब-चिन्तब... सभ किछु
हरलाक बादो
ओकरा संतोष नहि
जे अवसानक बाद
द' देत अछि मुखाग्नि"

आजुक समय मे सच कहब एकटा दु:साहस अछि, आ कोनो कविक रचनाकर्म ओकर दु:साहसक लेल जानल जायत अछि।

हिन्दीके प्रख्यात आलोचक प्रो. मैनेजर पाण्डेय लिखने छथि, "किछु स्त्री विमर्श बेसी करैत अछि, जिनगी कम जीबैत अछि।" ताहि सं बेसी मैथिल कवयित्रीक कविता मे विमर्श ते बड्ड ऊंच रहित अछि, मुदा जिनगी कम देखा दैत अछि। मुदा, स्वाती केर कविता जिनगीक कविता अछि। सभ दिन एकटा स्त्री कोना जीबैत अछि आ कोना मरैत अछि, कोना संघर्ष करैत अछि, एकर सामाजिक मर्यादा मे जीबैत अछि, हुनकर ई कविता,

'राम!
अहांक मर्यादाक

रक्षामे
सीता फेर
जंगल जायब
स्वीकार क' लेलनि।

एही सन्दर्भमे प्रख्यात आलोचक प्रो. नित्यानंद तिवारी लिखने छैथ, "सीता कें जखन दोबारा वनवास देल गेल आ बाद मे राम बड अनुनय-विनय करैत छैक। हुनकर बेटा लव-कुश सेहो अछि मुदा सीता सिर्फ एक बेर विरोध सं राम दिस देखैत छथि। जे दुःख अछि सीता कें, विरोध अछि, वेदना अछि, ओ अपन बेटा के सेहो मना क' दैत अछि आ राम के सेहो। तखन राम सीता सं कहैत छैथ, अहां की बुझैत छी जे हम अहां के ताहि लेल मुक्त केलहुं कि अहां हमर पत्नी छी वा अहां हमर प्रेम छी? नही, अहां के मुक्त केलहुं कुलक रक्षा लेल वा अपन पुरुषार्थक लेल।" तखन प्रो. नित्यानंद तिवारी सवाल उठबैत छथिन जे एना जखन कोनो पति कहय जे प्रेमक कारण नहि, कुलक रक्षा करैक लेल अहां के हम मुक्त केलहुं, तखन ओ रामक संग सीता कोना रहि सकैत अछि। स्वाती सेहो कहैत छथि,

'अहांक कठोर
परीक्षामे
पूर्णांक लेने
उत्तीर्ण भ' गेल छलीह
समाजक सोझांमे'

आ हुनकर कविता ओकरो सें आगू जायत अछि आ राम-सीताक कथा धरती हिलय धरि जायत अछि,

'जखन-जखन
सीताक माय
धरतीकें
ई दृश्य
मोन पड़ैत छनि
त' करेज
फाटि जाइ छनि
सीता ओहिमे
कोना झंप देल
तकरे सब कियो
कहैत छी
फेर आइ
भूकंप भेल।'

स्वातीक कविता बड्ड व्यापक अछि आ हिनक कविता पढ़ के नहि कोनो धारणा बनाओल जा सकैत अछि। ओकर एक-एक कविता एक-एक नव-नव धारणा के स्थापित करैत अछि जकर परिधि मे परिवार, समाज सहित पर्यावरण, बाढ़, भूकंप, धरती, प्रकृति, तीर्थाटन, मर्यादा, भाषा आदि अछि। हिनक कविता मे स्त्रीवादी सिद्धांत यानी फेमनिस्ट थ्योरी के कांसेप्ट नीक जेना फरछायल अछि। फेमनिस्ट थ्योरी पढय बला लोक स्त्री आ पुरुषक सामाजिक भूमिका, अनुभव, रुचि आदि के अध्ययन करैत अछि आ एकर पढाय एंथ्रोपोलॉजी, समाज विज्ञानं, संचार, मीडिया अध्ययन, मनोविज्ञान, गृह विज्ञानं, साहित्य, शिक्षा, दर्शनशास्त्र आदि विषय मे होयत अछि आ जेंडर समानता पर केन्द्रित विषयक अध्ययन करल जायत अछि। फेमिनिस्ट थ्योरीक अस्तित्व 1970 के दशक में आयल आ साहित्य मे बड रास महिला साहित्यकार अपन रचना केलनि। भारत मे सेहो स्त्री विमर्श बड व्यापक मुद्दा अछि। मुदा मिथिला वा मिथिला साहित्य मे एही विमर्श ओतेक जोर नै पकडलक किएक तं ई धरती गार्गी, भारती आदि केर रहल अछि। मुदा, स्वाती आ हुनक कविता एही धरती पर प्रासंगिक मुद्दाक अपना कविताक माध्यम सं पाठकक सोझां आनालक।

एहन धरती पर रहैत स्वाती जहि तरहे अपन पिताक चिंता पर अपन शब्द के गूंथि के कविता मे परिवर्तित करैत अछि, ओ विलक्षण अछि आ हुनकर समकालीन कोनो कवयित्री के कविता मे नजरि नै आबैत अछि। अपने 'पिता' कविता मे ओ लिखैत छैथ,

'आजुक वर्तमान दुनिया
सोचैत अछि, पहुंच जाइ
चान पर
मुदा, अहां
मचानपर
बैसल
हमर भविष्यक
चिंता किए करै छी?
एना जीबितहिं, किए मरै छी?'

स्वाती के चिंता मिथिलाक बेटी अछि आ ई चिंता हुनकर कविता 'आब हम हतास नहि', 'हम थिकहुं मिथिलाक बेटी', 'शिक्षा', 'बायोडाटा', 'बेटा आ बेटी', 'भिखमंगा समाज' आदि मे देखल जा सकैत अछि। एक दिस स्वातीक कविता मे स्त्रीवादी पक्ष बड शक्तिशाली रूप में उभरि के आगू आयल अछि ओतय स्त्री-पुरुषक प्रेमक प्रतिरूप सेहो कविता मे देखल जा सकैत अछि। जेना हुनकर कविता 'आब हम हतास नहि' मे लिखैत छथिह जे

'हम पुरुष
मात्र केर
शक्ति थिकहुं
जतय समर्पण
ततय भक्ति थिकहुं'।

स्वातीक कविता एक दिस सामाज मे स्थापित मान्यता आ परंपरा पर प्रहार करय मे सक्षम अछि ते दोसर दिस बाल मन के सेहो आगू आनबाक मे सक्षम अछि। 'हमहूं पढ़बै' कविता मे स्पष्ट करैत छथि,

''हमहूं पढ़बै
जानू ने
पाटी कीनि क'
आनू ने
पैसा नै अछि
कानू नै
हमहूं पढ़बै जानू ने।'

एक-एक शब्द विलक्षण अछि। एकटा नेना के मांग की सब होयत अछि, पाटी, पेंसिल आदि। मुदा समय बदलि गेल अछि। बाजारवाद आ संक्रमणक दौर मे आजुक नेना के डिमांड होयत अछि, मोबाइल, लैपटॉप, रिमोट बला गाड़ी आदि मुदा स्वाती के कविता एकटा आस

जगबैत अछि जे गाम-घरक नेना मे ई सदी मे पाटी आ पेंसिलक लेल अपन माता-पिता सं निहोरा करैत अछि। तहिना 'हम्मर गुड़िया' कविता मे एकटा छोट सन बेटीक निहोरा देखल जा सकैत अछि,

'बाबू!
हमरो गुड़िया
आनि दियअ
पानि पडै छै
झम-झम-झम
छाता कीनि क'
तानि दियअ
बाबू!
हमरो गुड़िया
आनि दियअ।'

ई सभ कविता पढि के एही बात सं सहमत भ' सकैत छी जे कवयित्री मे एकटा बल मन सेहो अछि जे नेना-भुटका के मनोदशा आ मनाबैक-दशा के बुझैत अछि आ ओकरा पाठक आगू आनय मे सक्षम अछि। तखने कवयित्री नेनापनक नटखटपन आ हताश के पाठकक आगू एही पांतिक संग राखैत अछि,

'दोकानसं
घुरैत
सिसकैत
छोटका
भाय हमर
पचटकिया
सिक्का घुरौने
हतास भेल
कहैत
मां
चीनी
पचास भेल'।

बाल मन आ घरक स्थितिक परछा के आगू राखय के क्षमता एही कवयित्री मे अछि।

मिथिलाक त्रासदी अछि जे कोसी सभ बरख मैथिल के विस्थापित करैक संग स्थापित सेहो करैत अछि। विस्थापित ओहि सन्दर्भ मे जे लोक अपन घर-द्वार सं दूर चलि जायत अछि आ स्थापित ओहि सन्दर्भ मे जे बेर-बेर विस्थापित भेला के बादो जीवनक संघर्ष चलैत आयल अछि आ चलैत रहत। एकटा कवि बाढ़ सं भेल दुर्दशा के अपन शब्द सं लोक के परिचय करा सकैत अछि, कवि अपन 'बाढ़' कविता मे कहैत छैथ,

'सुरसरि
कोशीक
किछेरपर
गामक पूब
हमर मकान
आ
मकानक छतसं
सशंकित भेल
हौंज हेंज
लहासकें
भासैत
देखि रहल छी।'

एहनो विकट विपत्तिक स्थिति मे एकटा कवि अपन दार्शनिक भाव मे स्थितप्रज्ञ होयत अछि एकर उदहारण एही पांति मे अछि,

'आ जनलहुं
विपत्तिये थिक
एकता
संपत्तिये थिक
मत भिन्नता।'

मतलब ई जे कहिने नीक आ बेजाय स्थिति आबय, स्थितप्रतिज्ञ हेबाक स्थिति एकटा कवि के होयत अछि जे हर स्थिति मे अपन निष्पक्ष सोचक संग ठार रहैत अछि।

स्त्री वेदना, बेटीक विवशता आ दहेज़ पर स्वातीक कलम बड धारगर अछि। 'हत्या' नामक कविता मे एकटा मादा भ्रूण हत्याक बिम्ब देखा दैत अछि,

'अपन उत्कर्षक
अंकुरकें
निर्मम बनि
नष्ट क' रहलहुं
आ बेटापर
लाखक-लाख
दहेज़ ल' रहलहुं।'

एही कविता के सात टा पांति मे कवयित्री सम्पूर्ण समाज के स्थिति के उघार क' देली आ पाठकक सोंझा आनय मे सक्षम भ' गेली, जे यथार्थ अछि। तखन ओही कविता मे ओ चेतावनी सेहो दैत छथि,

'अहां
हमर नै
अपना हिसं
अपन
हत्या
क' रहलहुं।'

स्वातीक रचना मे समाजक प्रति आक्रोश, विद्रोह संग सामाजिक संरचनाक ताना-बाना तोड़बाक चुनौती अछि, जेकर परिणिति या ते बदलाव अछि या फेर कविता।

'पूर्वागमन' कविता संग्रहक तमाम कविता एकटा आत्मसंघर्षक कविता अछि। परंपरा आ आधुनिकीकरणक सामंजस्यक कविता अछि। हिन्दीक प्रख्यात आलोचक प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी एक ठाम हिन्दीक प्रख्यात रचनाकार हरिशंकर परसाईक एकटा छोट-सन उपन्यास, 'नालीक कीड़ा' के तथ्यक चर्चा केने छैथ। एही उपन्यासमे कहल गेल अछि जे दो-तीन बरख धरि लड़की अपन ब्याह करब बन्न क' दिअ आ एहन स्थिति बना देल जाय जे दुनिया मे जे सभ अछि, ओ हुनके वजह सं। जों ओ अपन महत्त्व बुझि रहल छथि ते ओ स्त्री हेबाक चेतना नहि अछि, अपना के फराक करबाक चेतना नहि अछि, मुदा ई आत्मविश्वास सेहो बड्ड पैघ चीज होयत अछि, तखन स्वाती शाकम्भरीक कविता अचौक्क्के आगू ठाढ़ भ' जायत अछि,

'बेटी थिकहूं
भारतकेर
परंपरा
निमाहि लेब

बिगड़ल भाग्य
आया परिस्थितिकें
कोनहूं ना
सम्हारि लेब
मुदा, आब हम
परतंत्र नहि
सगरो
स्वतंत्र छी... स्वतंत्र
रावणक बहिन
सूर्पनखा नहि
जे नाक
अपन कटा लेब
हम मिथिलाक
थिकहूं बेटी
भारती सन
शास्त्रार्थी बनि
सम्मान कें
बढ़ा देब।'

स्वाती शाकम्भरीक कविता पढ़ैत काल महापंडित राहुल सांस्कृत्यायनक एकटा संस्मरण ख्याल आबैत अछि, जे किछु छात्रक समूह एक बेर हुनका सं मिलैक ले गेल छल ते हुनका सं सवाल केलक जे अहां के कृति के पढिके लागैत अछि जे अहां अपन रचना के रिवाइज नहि करैत छी। तं ओ जवाब देलखिन जे अहां सत्य कहि रहल छी, क्याकि जखन हम एक कृति पूर्ण करैत छी ते दस हमर आगू ठाड़ भ' जायत अछि। आब हम ओ दस के चिंता करि या ओकर एक के, जेकरा हम लिखि चुकल छी। तहिना स्वाती के कविता पढय काल ई नीक सं बुझा पडत जे हुनकर रचनात्मकता मे राहुल सांस्कृत्यायन जेना द्वंद्व अछि आ जहिना ओ एक विषय पर कविता लिखब खत्म करैत छथि, हुनका आगू एक नहि पचास टा विषय ठाड़ भ' जायत अछि जे हुनका कविता लिखैक लेल विवश क' दैत अछि।

स्वातीक कविता ओ सभ स्त्रीक कविता अछि जे समाज मे जीबैत ते अछि मुदा कोनो कविता नहि लिखैत अछि, जीवनक संघर्ष ते करैत अछि, मुदा संघर्षक गीत नहि गाबैत अछि, प्रताड़ित ते होयत अछि, मुदा प्रताड़नाक शिकायत पुलिस थानामे दर्ज नहि करैत अछि। स्वातीक कविता जीवन सं लडैत अछि, समाज सं लडैत अछि, मुदा एकटा नव दुनियाक संकल्पना सेहो सोझां राखैत अछि। ताहि कारण सं ओ लिखतो छथि,

'कविता नहि थिक
नेयारल-भासल
कोनो योजना
निर्धारित कोनो संरचना
ककरो आग्रहक आकर
कविता थिक
व्यक्ति-व्यक्तिक
अपन- अपन
अनुभवक अभिव्यक्ति भावुक मन अनुरक्ति...
कविता नहि थिक
मान पत्र
सम्मान पत्र
वंदन-अभिनन्दन
कविता थिक
स्वतंत्र, निर्मल
प्रवहमान मनक संवेग
भावक उद्वेग
जे अनायास
हृदयाकाशमे।'

बहरहाल, आजुक काल के तमाम नामचीन, मंचासीन, पुरस्कारसीन, पोथीचीन कवयित्री सभ में ओ धधकैत आगि आ ऊर्जा सं युक्त कविता नहि देखा पड़ैत अछि जे स्वाती शाकम्भरीक कविता में अछि। हां, ई बात अवश्य अछि जे कतेक कविता अनगढ़ सेहो अछि, कविताक बाहरी आडम्बर सुन्दर आ चुस्त-दुरुस्त नहि हुए, स्वातीक अनुभव कम हुए, मुदा कम शब्दमे आत्माकें आगि के ज्वालामे झोकैंत क्षमता हुनकर रचनाक मे अछि। चूंकि 'पूर्वागमन' हुनकर पहिलुक कविता संग्रह अछि ताहि सं किछु अनगढ़ रहब ते स्वाभाविके अछि। मुदा, इहो सत्य अछि जे तथाकथिक स्वनामधन्य कवयित्री सभ जेना स्वाती शाकम्भरी कविताक मंच पाबैक लेल, पोथी प्रकाशित करबाक लेल वा पुरस्कार पाबैक लेल मैथिली साहित्य जगत मे उधम नहि मचौने छथि, मुदा हुनकर रचना पढ़ल जायत अछि। ई बात संग्रहक पार्श्व पृष्ठ मे अंक्ति अछि जे हुनकर काव्य विविध भाव-भूमिकें स्पर्श करैत अछि। हिनक कविता मे अपन गाम-घरक प्रति नेह छनि त' समाजमे व्याप्त कुरीति सभक प्रति विक्षोभ सेहो। हिनकर कतेको कविता शिक्षाक महत्त्व संगहि मातृभाषाक महत्त्वकें रेखांकित करैत अछि त' टूटि रहल सामाजिक सरोकार आ पारंपरिक संबंधक कचोटकें सेहो मुखरित करैत अछि। वैचारिक गाम्भीर्यक सनहि प्रस्तुतिक टटकापन एही पोथीक विशिष्ठ बनबैत अछि। ■

तीरभुक्ति मे विज्ञापन द प्रबुद्ध मैथिल समाज तक पहुंचाउ अपन सनेश

विज्ञापनक दर

बैक कवर पेज (कलर)	:	50,000
फ्रंट कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
बैक कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
डबल स्प्रेड पेज (कलर)	:	40,000
इनर पेज (श्वेत/श्याम)	:	20,000
हाफ पेज (श्वेत/श्याम)	:	10,000

बनैत-बिगड़ैत देश आ सुकान्त सोमक कविता

✍ तारानंद वियोगी

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) 1991 मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-संपादन। साहित्य अकादेमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार 2010 पोथी "ई भेटल तँ की भेटल'' लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार 2010 ई.

सुकान्त सोम मैथिलीक एक विरल कवि छथि, आ हुनका कविता पर बात करब मैथिली काव्येतिहासक एक दुर्लभ अध्याय पर बात करब थिक। मुदा, एहि मे समस्या छैक जे अपन कवि-निर्मिति पर, अपना सोचक काव्य-परिदृश्य पर आ कि अपन कविता-प्रतिमान पर हुनकर अलग सं कोनो लेखन नहियेक बराबर हमरा लोकनि लग उपलब्ध अछि। दोसर, सुकान्त सन विद्रोही साधक-कवि पर जाहि व्यापकताक संग समीक्षा-विचार हेबाक चाही, से नहि भ' सकल अछि। तेसर, मुख्यधाराक हिन्दी पत्रकारिता मे पछिला तमाम बरस ओ ततेक मुखर-प्रखर रहला जे हुनकर यशस्वी पत्रकारक छवि तर मे हुनकर ई दुर्लभ कवि पिचाएल आ नुकाएल रहि गेल अछि।

सुकान्त कें पढ़बा काल हुनकर पहिल जाहि विशेषता पर सब सं पहिने ध्यान जाइत अछि, से ई जे अपन कविता सब मे ओ बेर-बेर कविता कें परिभाषित करैत चलैत छथि। 'कविता लेल एकटा कविता' आदिक तं शीर्षके स्वयं सैह अछि, बांकी बहुतो ठाम अवसर एला पर अथवा अवसर ताकि क' ओ ई काज करैत छथि। अपन कविताक बारे मे हुनकर ख्याल छनि जे ई 'मनुक्खक कविता' थिक जे 'एकटा सार्थक आ सामरिक चुप्पीक संग शुरू होइत अछि।' अपन कवि-कर्मक चिन्हासय दैत कहैत छथि जे हम 'अहां क राष्ट्रीय उद्यानक हरियर जंगल मे रत रत करैत कुरहरि भांजि रहल छी।' एक ठाम कहैत छथि- 'पातविहीन छाल नोंचल गाछक चीत्कार थिक हमर कविता।' एक आर ठाम कहैत छथि, 'सुखैल हड्डीक झनझनाहटि थिक हमर कविता।' एक ठाम तं ओ इहो कहैत छथि जे 'हमर कलमक नीब पर नचैत अक्षर अहांक शान्ति-व्यवस्था लेल घातक अछि।'

मिथिला मे सदा सं कविता कें कामिनी मानबाक चलन रहलैक अछि, पंडितो लोकनि कें जखन एकरा हीन साबित करबाक होइन तं 'रजनी-सजनी' कहथि। मुदा, सुकान्त कहैत छथि, 'हमर कविता प्रेयसीक अंगक भूगोल नहि, ओकर सुखाइत-टटाइत आतंकक इतिहास थिक।' हमरा तं कौखन लगैत अछि जे मैथिल कवि लोकनिक काव्यांग प्रक्रियाक एहि सं सुंदर विवेचना साइते कतहु आन ठाम भेटत जेना सुकान्त अपन एक कविता मे केने छथि- 'फूलपात काढ़ल कापी मे लिखल कविताध उदासी मे गाओल गेल गीत आध हर आ हरबाहक मादे लिखल गेल आख्यानध कोन दिशाक ज्ञान करबैत कोन युगक संकेत करबैत गुजरि जाइछ।'

सुकान्तक बिम्ब आ कालानुगत व्याख्या

कखनो कखनो सोचै छी, सुकान्तक कविता मे ई सब एना-एना किए अछि? कतहु बिंब पर बिंब चढ़ि जाइ छै। कतहु कमलाक बिंब गरम खून कें ठंडा करक प्रतीक के रूप मे आबै छै, कतहु घोर विक्षुब्ध बला व्यंग्य मे अपन पीड़ा बयान करैत कविता-वाचक ठेठ अभिधा मे चीत्कार करय लगैत अछि। कतहु निस्तब्धता तेहन भयाओन भ' क'

संपर्क : प्रथम तल, शांति निकेतन, डॉ. सी.पी. ठाकुर पथ, शिवपुरी पूरब, पटना-800023, मो. 9431413125

आबै छै जे नबगछुलीक ठाढ़ि सभक कनफुसकी साफ-साफ सुनाइ पड़ै छैक। मुदा, 'जलकुंभीक लेल अपस्यांत एकटा आतंकित वनमुर्गी' एक तरह सं बुझू तं हुनकर स्थायी टेक छियनि। ई वनमुर्गी आठम दशकक आम भारतीय आदमी थिक, जकरा लेल सुकान्त लगातार जिबैत, सोचैत आ कविता लिखैत रहला अछि। कहै छथिन, 'अन्हारक खिलाफ आदिम संघर्षक सैनिक' थिक ई, मुदा आइ गर्दिश मे अछि। दोसर दिस, शासन के वहशीपन के जते चित्र सुकान्तक कविता सब मे ठाढ़ भेल अछि, से फेर हुनका समयक कोनो आन कवि लग दुर्लभ अछि।

आदमी सं आदमीक सम्बन्धक अनेक वृत्तान्त पर सुकान्तक ध्यान गेलनि अछि। माय अछि तं तेहन जे अपन कोटि-कोटि जनमक वात्सल्य अपन एक संतान पर निछाबर क' सकैत अछि। पिता तेहन पिता जे अन्यायक विरुद्ध लड़बे अपन विरासतक रूप मे छोड़ैत अछि। ओहि ठाम जे व्यक्ति-रूप जनता अछि, ओकर एक कर्तव्य मातृभूमियोक प्रति अछि। ई ओकरे देश थिक। ओम्हर ओ देश अछि, तखनहि एम्हर ई गाम अछि। ध्यान देबाक थिक जे सुकान्तक ओइ ठाम देश अमूर्त भाववाची नहि। ओ जखन कखनहु आएल अछि तं अपन पूरा भौगोलिक राजनीतिक संदर्भ संग आएल अछि। ओकरा हम चीन्हि सकैत छिऐक जे भारत थिक। ओकरा पाछू महान स्वतंत्रता संग्रामक आदर्श छैक। तें, जखन हम सब सुकान्तक कविता मे हुनकर आदमीक खोज करी तं ओतय क्यो एक व्यक्ति नहि देखाब देत। ओ सामूहिक मनक दहाइ, सैकड़ा, हजार सनक जीव थिक। सुकान्त ओकर बात लिखैत कहै छथिन जे हमही कारखाना सं इस्पात बहार करै छी, शहरक प्रत्येक घर ठाढ़ केने छी, हमरे पसेना खेत मे खसैत छैक तं फसिल लहलहाइत अछि आ हिमालयक बर्फ पर खसय तं देशक लक्ष्मण-रेखा बनैत छैक, आदि आदि।

मोन रखबाक चाही जे आजादी बादक हवा मे एक नेनपन सं सांस ल' क' जबान भेनिहार आरंभिक पीढ़ीक एक कवि सुकान्त छथि। सत्तरि के दशक अबैत-अबैत स्वतंत्रता-संग्रामक ओ आदर्श टूटि चुकल रहैक। आब तं हालत ई छल जे लोकतंत्रे मानू समाप्त छल। तानाशाही फासिज्म पूरा तरह सं देश कें गछाड़ि लेने रहै। पहिने अघोषित इमरजेन्सी छल बाद मे औपचारिको इमरजेन्सी लागू भेलै। मुदा आजादीक ओ आदर्श जकरा जीवन मे शामिल रहै, ओ आगि हृदय मे जरैत रहै, ओ विरोधक बिगुल फूकि देलक। ओतय हिंसा-अहिंसाक सवाल मिथ्या छल। ई युद्ध सुकान्तक कविता मे हम सब जारी देखैत छी।

आदमी सं आदमीक सम्बन्धक अनेक वृत्तान्त पर सुकान्तक ध्यान गेलनि अछि। माय अछि तं तेहन जे अपन कोटि-कोटि जनमक वात्सल्य अपन एक संतान पर निछाबर क' सकैत अछि। पिता तेहन पिता जे अन्यायक विरुद्ध लड़बे अपन विरासतक रूप मे छोड़ैत अछि।

सुकान्तक कविता-समय पर कने ध्यान देल जाय। ओ समय छल जखन विश्व भरि मे छात्र आन्दोलन भ' क' अपन परचम लहरा चुकल छल, जकर धमक हरेक ठाम, भारतो मे सुनल जा सकै छल। एही आन्दोलनक परिणाम-स्वरूप फ्रांस मे महाबली दिगालक पतन भेल छल। चे ग्वारा, कास्त्रो, सार्त्र-सन नामेक नहि, तारिक अली, कोहन बेंदित आ हर्बर्ट मार्कूसक नामक धूम छल। भारतीय युवा लोकनिक वामपंथी रुझान अपन चरम पर छल। ई दौर कैरियरिज्म के नहि, आदर्श सभक तलाश आ ओकरा लेल जीवन अर्पित करबाक समय रहैक। सेंट स्टीफन सं ल' क' सेन्ट जोन्स धरिक लड़का-लड़की नक्सलबाड़ी मे, श्रीकाकुलम के जंगल मे पाओल जा सकै छल। एहि युवा सभक हृदय मे अपन सपना छल, जे अपना सं बाहर अपन देश धरि, दुनियां धरि जाइत छल। ई पीढ़ी परिवर्तन चाहैत रहय, आ ताहि लेल लड़ि रहल छल। ई पीढ़ी अपना कें सौभाग्यशाली बुझय कि ओकरा अपन किछु सपना छैक आ लड़ैत जं ओ मारल जाय, तं ओकरा समझ मे एहि सं बेसी सार्थकता ओकरा जीवनक आर किछु नहि भ' सकैत अछि। आजादी कें तखन मात्र पचीस बरस भेल रहै। आजादीक पचीसम बरस सं पैंतीसम बरस धरि के कालक धुकधुकी सुकान्तक कविता मे एलनि अछि।

ओ समय जाहि ठाम, जाहि युगान्तरक घुमान-बिंदु पर छल, जं लंपट नेतातंत्रक नृशंस विजय नहि भेल रहैत तं आइ क्यो कल्पना नहि क' सकैत अछि जे ई देश कतय रहितय। सुकान्तक कविता एही परिस्थिति सभक उपजा थिक। हुनकर कविताक अस्सल महत्व तखन उद्घाटित हैत जं ओहि समय मे हिन्दी आ बांग्ला सहित आन-आन भाषा-साहित्य मे लिखल कविताक संग ओकरा पढ़ल जाय। कहब जरूरी नहि जे एहि महासंग्राम मे मिथिलोक हिस्सेदारी कोनो कम नहि छल। कते प्रतिष्ठित घरक बेटा अपन शहादत देलक, कते युवा अपन महत्वाकांक्षी पढ़ाइ बिच्चहि मे स्थगित करैत श्रीकाकुलम पहुंचला। बंगाल एकर धधकैत प्रयोगशाला छल आ सुकान्त तहिया बंगालक महानगर कलकत्ता मे रहैत छला।

सुकान्तक कविता मे जलकुंभी लेल अपस्यांत आतंकित वनमुर्गीक रूपक सर्वांगता मे आएल अछि। ई आम लोकक दशा बतबैत अछि। कलकत्ताक सड़क पर तहिया सिद्धार्थशंकर रायक मस्तान के एकच्छत्र राज छल। कोनो कानून नहि, कोनो तर्क नहि, विरोध मे उठाओल गेल एको आबाज स्वीकार नहि। मुख्यमंत्रीक आ कि पार्टीक निजी गुंडा सय-दू सय लोकोक समूह कें बीच सड़क पर मारि क' राताराती लाश गायब क' सकै छल।

आइ जखन इतिहास अपना कें दोहरा रहल अछि तं हम सब अटकर लगा सकै छी जे केहन ओ समय रहल हेतै। सुकान्तक कविता मे अबैत अछि जे 'कमला, अहां विस्मृतिक गह्वर मे चलि जाउ / कमला अहां एना नहि मोन पड़ू।' कमला हुनक नेनपनक नदी छियनि जकरा संग जीवनक अनेको सुखद प्रसंग जुड़ल छै। ओ अपन प्रेयसीक प्रेम-स्मृति कें अप्रासंगिक बुझैत छथि--'हे सुनयना, बर्फ गलाब' बला सूर्य कत' छै / कत' छै ओ आगि जे हमर / हृदय मे भरल बारूद कें लहका सकय?' अपना बारे मे खबर उऐह छै जे 'एहि दारुण शीत मे हम / एकटा अघोषित युद्ध लड़ि रहल छी।' आ संकल्प यैह जगैत छैक जे 'ठामठीम पसरल ओझरायल रेखा सब कें समेटि / देशक नक्शाक बीचोबीच एक्केटा मोट रेखा खीच दी, आ / पच्चीस बर्षक अभ्यन्तर लिखल गेल अपन समस्त / कविता कें कविताक रक्षा मे / अस्वीकार क' दी।'

सुकान्त एहि ठाम मात्र अपन कविताक बात क' रहल छथि लेकिन हम सब समझि सकै छी जे ओ कुल्लम मृदुल कविता कामिनी विलास के पतन के बात क' रहल छथि। ओ समूचा मैथिली काव्य-परंपराक निरर्थकताक बात करैत छथि, जतय बड़का-बड़का महाकाव्य मे बाझल कवि लोकनिक पतक्का फहराइत रहैत अछि आ ओम्हर 'गामक पोखरि मे महीस सब पहिनहि जकां जलक्रीड़ा करैत रहैत छैक'। हम सब बूझि सकै छी अपन कविता सब मे कविता कें बेर-बेर परिभाषित केनाइ हुनका किए जरूरी लागलनि अछि। ओ पौरुषक स्वर चाहैत छथि जाहि सं दुर्गत देश-समाज फेर सं उठि क' ठाढ़ भ' सकय। अपना कवि कें ओ 'अन्हारक खिलाफ आदिम संघर्षक सैनिक' बतबैत छथि। कहबाक चाही जे सुकान्तक कविता साहित्य आ राजनीतिक, जनवादीक राजनीतिक आत्यन्तिक मिलन बिन्दु थिक। आजादीक बाद नेता लोकनि कोन तरहे देशक विकास केलनि अछि तकर कुल्लम हिसाब-किताब सुकान्तक कविता मे भेटि जाएत। देशक स्पष्ट उत्पाद थिक आतंकवादी सत्ता राजनीति। मुदा, सुकान्त लग प्रतिरोध हुनक स्थायिभाव छियनि। हमर ई सोनाकटोरा देश आ ताहि पर एकटा आतंकवादी गैंग कब्जा क' लेत, आ जकर ई देश छियै तकरा संग एहन व्यवहार करत, एकरा कोना बर्दास्त कयल जा सकै छै, जीताजी तं एकर पुरजोर प्रतिरोध हेतै-- सुकान्तक कविता-वाचक एहने सोच राखनिहार एक बौद्धिक युवा थिक, जकर भूमि मिथिला छियै, मुदा मिथिला भारत मे अछि आ भारतक दुख सं अपना कें एकात करब ओकरा लेल कोनहुना संभव नहि छैक।

ओ पौरुषक स्वर चाहैत छथि जाहि सं दुर्गत देश-समाज फेर सं उठि क' ठाढ़ भ' सकय। अपना कवि कें ओ 'अन्हारक खिलाफ आदिम संघर्षक सैनिक' बतबैत छथि। कहबाक चाही जे सुकान्तक कविता साहित्य आ राजनीतिक, जनवादीक राजनीतिक आत्यन्तिक मिलन बिन्दु थिक।

जनमुक्तिक विशिष्ट स्वर

1984 मे सुकान्तक पहिल कविता-संग्रह एलनि 'निज संवाददाता द्वारा'। एहि मे हुनकर 31 गोट कविता संकलित छलनि। कुलानंद मिश्रक 7 गोट कविताक संग 1986 मे सुकान्तक 9 गोट कविताक संयुक्त संग्रह 'भोरक प्रतीक्षा मे' शीर्षक सं आएल। संग्रहक भूमिका मे मोहन भारद्वाज लिखलनि- 'सुकान्तक कविता विरोध मे ओहि सब बिंदु पर ठाढ़ भेटैत अछि जतय सं शोषण आ मनुक्ख पर लादल यंत्रणाक यात्रा शुरू होइत छैक। अन्तर्विरोधी स्थितिक द्वन्द्व मे जिबैत लोकक व्यथा सुकान्तक कविता मे अपन प्रखरतम रूप मे आएल अछि। ई व्यथा एकटा व्यक्ति, एकटा गाम आ एकटा समाज- सबहक अछि। ओ व्यक्ति, गाम आ समाज देशो मे अछि आ विदेशो मे। ओकर सीमा भूगोल मे नहि, शाश्वत मानवीय स्वभाव मे छैक।'

कहबाक चाही जे मैथिली कविताक भौगोलिक सीमा कें जे कवि लोकनि बढ़ा सकला, ताहि मे सुकान्त सोम सर्वोपरि छथि। से एहि कारणें जे जेना-जेना ई सीमा कविता मे बढ़ैत गेल अछि, तेना-तेना ओ मैथिली कविताक पाठकोक मानसिक सीमा कें आगू बढ़बैत चलला अछि।

सुकान्तक कविताक कतेको गोट विशेषता सब अछि। एहि सब पर ध्यान देने हुनकर कविक विराटता प्रकट होइत छैक। असल मे, जाहि प्रयोजनक लेल ओ कविता लिखैत छथि, सैह बहुत विशिष्ट अछि। कवि लोकनि जे कविता लिखैत रहला अछि से या तं यश लेल, अथवा अर्थ लेल, अथवा अपन अकल्याण निवारण लेल, अथवा अपन आनंद लेल लिखला अछि। सुकान्तक काव्य-प्रयोजन एहि सब सं बिलकुल भिन्न छनि। ओ जनमुक्ति लेल लिखैत छथि। ई 'जन' शब्द बड़े व्यापक, आ पुरानो ततबे। कारण, ऋग्वेद मे सेहो एहि शब्द कें ठीक एही अर्थ मे हम सब प्रयोग होइत देखै छी। जन माने जनता, जकर एक इकाइ हम छी आ कि सुकान्त छथि। मार्क्सवादी लोकनि कें पुछबनि तं कहता जे 'सर्वहारा' शब्दक जे अर्थ ठीक वैह नहि छैक, जे 'जन' के अछि। सर्वहारा अबैत छैक औद्योगिक मजदूर-समुदाय सं जखन कि जन गाम सं अबैत छैक। गामक किसान आ कृषि-मजदूर। सुकान्त मुदा एहि विभाजन कें कत्तहु स्वीकार नहि करैत छथि। हुनकर यैह जन कतहु जं खेत सं सोना उपजाबै छै, तं कतहु फैक्ट्री सं इस्पात, कतहु सियाचीन मे देशक सिमान बचबैत छैक।

भारतक इतिहास मे देखबै जे यैह जन थिक जकरा पर शासन कयल जाइत छैक, आ एहि शासन लेल जानि नहि

कतेको तरहक शासन-प्रणाली चलन मे आनल गेल। सुकान्तक समय लोकतांत्रिक प्रणालीक शासनक समय थिक, जकरा बहुत आराम सं बाहुबली लोकनि, बनियां लोकनि, मनबढ़ू नेता लोकनि तानाशाही-प्रणाली मे रूपान्तरित क' लेलनि अछि। जन के एतय ई हालति छैक जे अंगरक्षकक बूट तर मे ओकर कल्ला दबाएल छै आ ओ रोगाह कुकूर जकां कें कें क' रहल अछि। वास्तविक स्थिति छैक जे एही जन के निर्माण केने देशक निर्माण होइत छैक आ देश आगू बढ़ैत अछि। मुदा, सुकान्तक कविता मे हमरा लोकनि देखैत छी, आ वास्तविक घटना-चक्र मे तं देखितहि छी जे शासन-संचालनक एहि समुच्चा कर्मकांड मे जनताक लेल कोन्नहु टा स्थान नहि छै। नीति आ योजना ककरो आन कें ध्यान मे राखि क' बनैत अछि। लाभान्वित ककरो आन कें करबाक मंशा भीतर भरल रहैत छैक, यद्यपि कि कहल यैह जाइत अछि, जे एहि सं देश के विकास हेबाक छै। एहि छद्म कें देखार करब सुकान्तक काव्य-प्रयोजन छनि।

मैथिली कविताक भारतीयता एक एहू बात मे निहित अछि जे आने साहित्य जकां एत्तहु नौटा रस छै। एहि नबो रस मे हास्यरस बली कि करुण रस बली, ताहि सम्बन्ध मे हमरा सब लग पुरखा कवि लोकनिक कतेको संस्मरण अछि। मुदा ई रस-शास्त्र सुकान्तक कविता बुझबा मे लेशमात्रो सहायता नहि क' सकत। हुनका ओइ ठाम एकटा दशम रस भेटत। ओ थिक विक्षोभ रस।

लगातार अन्याय आ उत्पीड़न सं ई उत्पन्न होइत अछि। अनीति एकर आलंबन थिक। विरोध केला पर पुलिसक गोली सं मारल जाएब उद्दीपन। सौंसे दिन बरद जकां खटलाक बादो ने निचैनक रोटी, ने मनुक्ख सन के आवास, ओकर आत्मसम्मान लेल शासक-दलक कोनो गत्र मे लेहाजक आभास तक नहि, ओकर बाल-बच्चाक भविष्य लेल दूर-दूर तक कोनो संवेदनशीलता नहि कतहु। एकरा सब कें विभाव, अनुभाव, संचारी भाव- जे कहि लिय'। सुकान्तक कविता पढ़ैत आइ अहां कें लागि सकैत अछि जे रोहिंग्या तं मात्र एक उपाधि थिक, जकर निर्णय भूगोल केलकैए, बांकी असली उत्पीड़ित तं एहि देशक ई जन थिक। हुनकर आकलन छनि जे एहि दुर्घट परिस्थिति कें बदलल जा सकैत अछि। आ, अपन जीवनक चरम सार्थकता ओ एही मे देखैत छथि जे परिस्थिति कें बदलबाक चाही। तें हुनकर विक्षोभ आक्रोश सं विद्रोह धरिक अपन समुच्चा प्रक्रिया पूरा करैत अछि।

सुकान्तक कविता-वाचक मैथिली कविताक इतिहास मे एकटा अलगे पहचान ल' क' अबैत अछि। ओ ने यात्री जीक वाचक जकां गमैया किसान थिक, ने राजकमल चौधरीक वाचक सन दिशाहारा बौद्धिक। जीवकान्तक वाचक जकां ओ सुधांग प्रगतिशील ग्रामीण सेहो नहि थिक। तखन सुकान्तक वाचक केहन थिक? ओ बौद्धिक थिक, कतहु बेसी गंभीर। मुदा ओकरा लेल चिन्तनक ओते महत्व नहि छैक, जते पुरुषार्थक। ओ भला लोक मैथिल जकां भुखलो पेट ढकारक देखाबा करैबला नहि थिक। अपन एक-एकटा दुख कें ओ कलमबंद करै छथि जाहि सं सनद रहय। सामंती हमला मे पिताक बारहटा दांत टुटबाक प्रसंग हो कि मायक हुकरब कि भरि दिन खटलाक बादो आधा पेट खा क' आठ बाय आठ के कोठली मे निन्न बिना बेचैन औनाएब-ओ कथूटा नुकाएब नहि जनैत अछि। एकर स्वाभाविक परिणति थिक नक्सलबाड़ी, भोजपुर। एक ठाम जखन ओ प्रिया कें बिसरि जाइ लेल संबोधित करैत छथि कि कमला कें नै मोन पड़बा लेल बरजै छथि, कि गाम-घर कें बिसरि जयबाक बात करैत छथि तं तकर मर्म मे जेबाक चाही। मिथिलाक माटि पर ओ नक्सलबाड़ीक फसल लहलहाइत देखय चाहैत छथि।

सुकान्तक कविता-वाचक मैथिली कविताक इतिहास मे एकटा अलगे पहचान ल' क' अबैत अछि। ओ ने यात्री जीक वाचक जकां गमैया किसान थिक, ने राजकमल चौधरीक वाचक सन दिशाहारा बौद्धिक। जीवकान्तक वाचक जकां ओ सुधांग प्रगतिशील ग्रामीण सेहो नहि थिक।

सुकान्तक कविता बहुत प्रौढ़। मैथिली कविता कें रजनी-सजनी बूझि क' जे लोकनि एहि ठाम ढुकय चाहता, सुकान्तक कविता एहन लोक कें बैरंग आपस हेबा लेल बाध्य क' देत। हुनकर जाबन्तो कविता दोहारा बान्ह के कविता सब थिक, जाहि मे एक्कहि संग अनेक स्तर चलैत रहैत छैक। चित्र दर चित्र, विचार दर विचार अबैत छैक। शैली जे कहबै जे एकटा कोनो पकड़लनि आ समुच्चा कविता लिखि गेला, सेहो नहि। अक्सरहां कविताक आवेग अपना लेल बीच मे जा क' अपन अलग शैली अख्तियार क' लैत छैक। सौन्दर्यक पारखी सेहो ओ अलबत्त। हुनका ओतय 'जुआन बांसक कोपड़ पर लुबधल चम्पइ रौद' अछि तं कतहु 'धान कटल खेतक सोन्हगर गंध मे मातल', 'एकटा हाक केराउ आ तीसी फूलक मेहराव दैत अछि'। हुनकर कविता मे जे आवेग आ लय अछि से तते लस्सेदार जे मानू अगिला बिंब-समूह कें तं घिचि-घिचि आनिते अछि, ओकर लस्सा पाठकक मन धरि पसरि जाइत छैक, जं ओ कविता मे एक बेर प्रवेश क' गेल हो तं। ताहू पर सं कबीर टाइप के खिलंड़ापन। आ, बुझौअलि बुझेबाक गंहीर आ मारक कलाकारी से ठामठीम जगजगार।

हुनकर कविता ने जीवकान्तक कविता जकां एकहारा छनि ने उदयचंद्र झा विनोदक कविता जकां वर्णनात्मक। ओइ ठाम चित्र दर चित्र अबैत छैक जे अंत मे

जा क' एकटा निस्सन कथ्य मे निमज्जित होइछ। एहि सभक कारण हुनकर कविता भरल-पुरल, गज्झिन स्वरूप बनबैत अछि। एकटा स्तर विचारक रहैत छैक जे समुच्चा चित्र कें गतानने रहैत छैक, एकतान एकलय बनबैत छैक। स्वाभाविक थिक जे एहि सब कथूक अपन जटिलतो छैक। ई जटिलता तखन आरो बढ़ैत अछि जखन ओ सामयिक राजनीति पर अपन कोनो रूपक रचैत छथि। कोनहु ठाम नगर भरि मे एकटा जंगली चीताक हरबिरड़ो रहैत छैक, तं कतहु मुइल हाथीक मांसक लोभी गिद्ध समुदायक बीच तीन दांतवाली एकटा बुढ़ियाक प्रवेश होइत छैक। तें अहां अक्सरहां महसूस करब, सुकान्तक कविता अपन पाठक सं नव पात्रता, नव रसज्ञताक अपेक्षा करैत रहैत छैक।

सुकान्तक कविता मे भेटैत अछि जे देशक भीतर एकटा युद्ध चलि रहल अछि। जं ई जन अपन वाजिब रोजी, अपन आत्म-सम्मान आ अपन स्वतंत्रता लेल बेगरतूत अछि तं ई युद्ध अवश्ये अवश्यंभावी थिक। कोन युद्ध थिक ई? निश्चिते गृहयुद्ध थिक। कवि स्वयं अपनो एहि युद्ध मे शामिल छथि। अपन कविता सब मे जे हुनका हम सब बजैत सुनैत छी, ओ बाजब एकटा सामान्य बाजब नहि, एकटा सामरिक चुप्पी कें बीच मे राखि क' बाजब थिक। ओ कहैत छथि, 'महाश्मसान बनल ई देश हमर नहि भ' सकैत अछि / जल्लाद सभक ई देश हमर नहि भ' सकैत अछि / जोआन आकृति कें तेजाब सं जरा देब' बला ई देश हमर नहि भ' सकैत अछि।' तखन, कोन देश अहांक देश थिक कवि? ओ कहैत छथि, 'आब आवश्यक जे / ठामठीम पसरल ओझरायल रेखा सभ कें समेटि / देशक नक्शाक बीचोबीच एक्केटा मोट रेखा खीच दी।' जखन ओ कहैत छथि जे 'माय-बाप बेटाक जन्म मात्र ऊके लगाब' लेल नहि दैत छैं' आ 'पति मात्र ओछाओनेक साझीदार नहि होइत छैक' तं कहय असल मे ओ यैह चाहैत छथि जे एहि जनयुद्ध मे भागीदार होयबे मनुष्यताक चरम अहोभाग्य थिक। ओ अपनो एहि युद्ध मे शामिल छथि। हुनक रणनीतिक आकलन छनि जे जनता जीतत आ वास्तविक स्वतंत्रता जरूर एहि देश कें नसीब हेतै। ओ कहैत छथि, 'मौसम आबि रहल छै / सभ किछु फरिछा जयबाक / गाछ मे झूलैत पातक / पयर तर दबाइत पातक / अंकुरस्थ पातक / स्थिति फरिछा जयबाक / मौसम आबि रहल छै।' हुनक स्पष्ट आकलन छनि जे जनता अपन युद्ध लड़ि क' ई देश अवश्य बचाओत।

स्वतंत्रताक मूल्यबोध

अपन कविता मे एकठाम ओ अपन देशक आजादी कें 'एकटा चौंतीसवर्षीया भोतिआएल राजनीति' कहलनि अछि। तखन देखबै जे हुनक कविता सब मे टुटैत गामक पीड़ा आ मुक्त बाजारक मायाजालक अनेक चित्र सेहो आएल अछि। एक ठाम कहैत छथि, 'हमरा लोकनि अपन रचनात्मक मूल्य कें / बेसी सं बेसी दाम मे बेचबाक लालसा मे / प्रतिदिन व्यापारिक संघ सभ सं अपील कइये रहल छी / युग सौदेबाजीक थिकै।' एक ठाम सामाजिक सरोकारक मादे कहैत छथि जे 'हमरा लोकनि परचर्चा मे लीन / अपन दियादक मथदुक्खी सं आनंद मे बाझल रहि जाइत छी।' एकठाम कतहु एहनो संकेत दैत छथि जे भारतक राजनीति आ नेतागिरीक कारण भारतीय मनुष्यता मे कतेक ह्रास भेल अछि। सुकान्तक काव्य-प्रवृत्ति कें देखैत कौखन प्रश्न उठैत अछि जे ई सब आखिर की थिक? ई सब थिक आजादीक आदर्शक पूर्णतः ध्वस्त हेबाक निशानी। आजादी नामक जे युवती चौंतीसेक उमेर मे उढ़रि गेल छल, से सत्तरि सालक बुढ़ियाक रूप मे आइयो कोना आ किए नरक भोगि रहल अछि? एहू प्रश्नक उत्तर सुकान्तक कविता मे भेटि सकैत अछि। एकटा सही कविता अपना कविता-समयक समस्त जटिलता अपना भीतर नुकौने रहैत अछि।

इमरजेन्सीक कालखंडक लिखल हुनकर कविता सब मे सत्ताधारीक आतंकक चित्र सब तं अयबे कयल अछि, तकरा संग-संग राजनीतिक महाधूर्तइक बिंब सेहो आएल अछि। ओतय आजादीक आदर्श कें चालाकी सं पृष्ठभूमि मे ठेलि देबाक चतुराइ छैक। सरकार अपन पल्ला झाड़ि लेलक, बुझू। धर्मक राजनीति, अस्मिता-विमर्श, मुक्त बाजार, भूमंडलीकरणक स्वागत- ई सब की थिक? यैह सब तं विकास थिक। जे आजादी हरेक आंखिक सपना बनि क' एक दिन उतरल रहय, हरेक हाथक लेल काज, हरेक नागरिक लेल आत्मसम्मानक वचन उचारैत, हरेक हृदय मे ई आसभरोस जगबैत प्रकट भेल छल जे 'जे काजुल से भरिपेट खाएत / ककरो नहि बड़का धोधि होएत', तकरे रक्षक संवैधानिक, जनकल्याणकारी सरकार आइ पूरा आत्मविश्वासक संग आंकड़ा गनबैत अछि जे पकौड़ा बेचब आ कि ओला-ऊबर चलाएब तं सेहो रोजगार थिक।

एहना मे तं उचिते जे सुकान्तक कविता असमाप्त लगैत अछि। से ठीके असमाप्त अछि, कारण ओ युद्ध असमाप्त अछि। ओ अपनहु गछने छथि। हुनक 'प्रतीक्षान्त' कविताक समापन पंक्ति छनि- 'बेरंग बुर्ज सभक दोहाइ दैत हमरा लोकनि / कखनो बोकारोक विस्फोट मे / कखनो चासनालाक बाढ़ि मे / कखनो बंगोपसागरक चक्रवात मे / कखनो लद्दाख आ कच्छक रण मे / मारल जाइत छी / सभ दिन सभ ठाम / प्रतिवादविहीन / मीत हे, हमरा लोकनि एखनो / एहि चैती बसात मे प्रतीक्षारत छी कि / क्यो तं आबय आ / एहि खरायल कासवनक निरंग होइत आकाश मे / एकटा रंग पसारय / भ्रम आ सपना कें फरिछाबय / क्यो तं आबय।'

साइत अपना युगक हरेक जिम्मेदार कविता अनागतेक आवाहन सं समाप्त होइत हो। ■

ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 3

बीहनि कथामे मीलक पाथर

✍ मुन्ना जी

आह! सिरखारी केहेन दिव्य। कटि- पयोधर सर्व गुण संपन्न। एहेन युवती, युवके मात्र के नै वरन् समस्त समाजक आंखिक ज्योति सन!

कहू त' एकरा बेर भेल भ्रूण हत्याक सफल प्रयास की एहेन परिणाम दैत...?

भीषण ताप सं तपल। इन्होर मे द' अधखिज्जु नै वरन् सीझा- सीझा पुर्ण कएल।

नारीक नव्यता, सुन्नरताक सर्जक आ प्रतिपालक सब रूप कें लेखक भोगि यथार्थक चित्रण सोझां अनलनि।

आठम दशकक 'लघुकथाकार' घनश्याम घनेरो अन्तिम दशकक 'बीहनिकथाक' जड़ि मूल मे समा गेला। अपन जिनगी मे मिझझर भेल सामाजिक सरोकारक तिया पाछां करैत प्रत्येक सर्जना के प्रासंगिकताक संग सोझां रखलाह।

जहिना 'खलिल जिब्रान 'अपन सताएल जिनगी सं उजास पेबा लेल साहित्यक विश्व परिदृश्य पर देखार भेलाह। तहिना घनश्याम घनेरो अपन समतुरियाक ओलवा दोलवा सहि कतिएल रहलाहक पछाति 'बीहनिकथा' मे अपना के सन्हिया भारतीय साहित्यक मांझ मे मैथिली साहित्य के खुटेसबाक सफल प्रयासक संभावना देखौलनि।

सिरखारी पोथी (facebook) सं प्रेरित हिनक सर्जना के कतेको बेर ढठिएबाक वा मांटि मे गोरि ओरा देबाक असफल प्रयासक पछातियो ई बीहनिकथा संग अप्पन पैरूखे जगजियार भ' स्थिर भ' पेबा मे सक्षम भ' पौलाह।

मैथिली साहित्य मध्य प्रारम्भहि सं वैधानिक/ऐतिहासिक रूपें 'लघुकथा' (जे

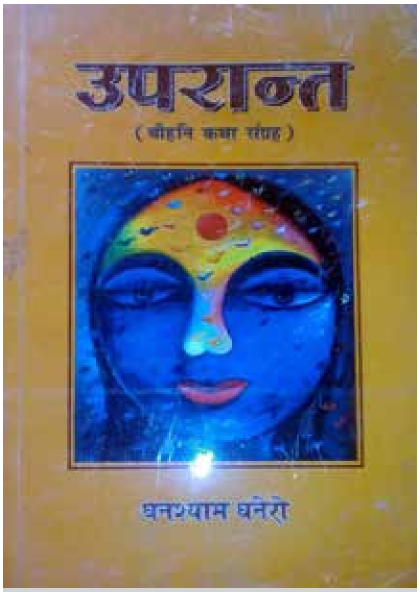

उपरांत

रचनाकार	:	घनश्याम घनेरो
प्रकाशक	:	गीताश्री प्रकाशन, पटना
वर्ष	:	2016
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	120
विधा	:	बीहनिकथा

कथा/गल्प कहि लिखाइत छल) रहितो किछु श्रीमान् अयानता वा कौतुहलवश हिन्दीक लघुकथा के मैथिलीक पौस मानि 'दंपतिक सुन्न भेल कोराक अनेरूआ संतान सं भेल गोद भराइक प्रक्रिया अपनौलनि।' जे आगां चलि अनेरूआ संतान सन सूपक भट्टा भ' गुरकि गेल।

ताहि परिस्थिति सं उबरि कतेको डेग आगू बढ़ि सोचलनि ई लेखक। आ अपन एक - एक रचना के सुतिहार भ' तरा उपरी रचि पाठकक मगज मे ओकरो भोगल यथार्थ सन समायोजित क' बैसेबा मे सफल भेलाह अछि।

हिनक रचना समाजक सब वर्ग वा घटना के ठाम ठीम उघार करैत बैठकी बनेलक। मुदा बेशी धमक नारीक नव्यता वा ओकर जिनगीक उतरा- चढी के परेख विकछवैत बाट धेलक।

आधुनिकताक बोध करबैत:

'गै माए किछु सुनै छीही?

नै गै।

छलै त' हमरे हाड़ माउसक ने! त' ओकर कहरब तोरा कोना सुनेतौ? कुमारि माए।

नारी के अब्बल बुझि पुरूखक गात मे नुकाएल सन रहि पुरूषे के दोषी बुझि मौगी के झांपनि दैए। मुदा दुनू बरोबरि सन।

'छओंड़ी के खसैत - बचैत देखि पुलिस छओंड़ा के थोपड़िया देलकै।

छओंड़ी उनटल - ओढ़नी हमर चप्पल मे ओझरा गेल छल।

अच्छा!

अच्छा की, स्त्रियो फिरिसान रहैए जे पुरूष भेटए- जमाना

अखनुक बढैत मंहगाइ, बेरोजगारी एवं उतरैत चढ़ैत अर्थव्यवस्थाक बीच फांसल गिरहतक बेथा के मेहीं गढ़नियें विकछवैत:

'हेल्लो! अहां गुणानन्द झा।

जी, अहां के?

हम बीमा अभिकर्ता, अहां सं गप्प करबाक नीक समय भेटल।

किए ने, रौदी जे पड़ल छै।

ओ, त' अहां किसान छी।

मोन के मनबैत भनभनेलाह- मरल के कतौ बीमा भेलैए।

(शेष पृष्ठ 64 पर)

हृदय ओ मस्तिष्ककें आन्दोलित करैत कथा-संग्रह

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा

मैथिली साहित्यमे किछु विराट व्यक्तित्व एहनो छथि जिनका कोनो विशेषणसं विशेषित नहि कएल जा सकैत अछि। हुनक कृतित्वकें कोनो शब्दसं नहि आंकल जा सकैत अछि। हुनक एक-एक रचना पढ़ैतकाल सम्मोहनक एहन जादू चलैत अछि जे पाठक ओहिमे भसियाइत चल जाइत अछि आ एक रचनाक बाद दोसर रचना पढ़बाक पियास तेना ने जागृत भ' जाइत अछि जे सम्पूर्ण ऊर्जा हुनक दोसर रचना पढ़बा दिसि केन्द्रित होम' लगैत छै।

हमर सभक सौभाग्य थिक जे हमर साहित्य मध्य डॉ. रामदेव झा सन रचनाकार छथि। हुनका की कहल जाय- कथाकार, नाटककार, समीक्षक वा सम्पादक। नहि, कोनो एकटा 'कार' लगा हुनक रचनाकारक पूर्ण मूल्यांकन कथमपि संभव नहि होयत। ओ शब्दक जादूगर छथि, भाषाक शिखर-पुरूष छथि आ तें जखन हुनक रचना-सागरमे पैसैत छी त' मोन करैत अछि जे ओहिमे डूबिये जाइ, तट कहियो आ कखनो आकर्षित नहि करैत अछि।

डॉ. रामदेव झाक अद्यावधि चारिगोट कथा-संग्रह प्रकाशित छनि- 1965 ई. मे पहिल कथा-संग्रह 'एक खीरा:तीन फांक', 1966 ई. मे दोसर 'मनुक सन्तान', 1985 ई. मे तेसर 'धरती माता' आ 2009 ई. मे चारिम 'आजी मां'।

'आजी मां' कथा-संग्रहमे कुल 20 गोट कथा संकलित अछि जाहिमे सं अठारह गोट कथाक प्रकाशन विभिन्न पत्र-पत्रिकामे भेल अछि।

संग्रहक पहिल कथा आजी मां अछि। ई कथा सर्वप्रथम रचना पत्रिकाक

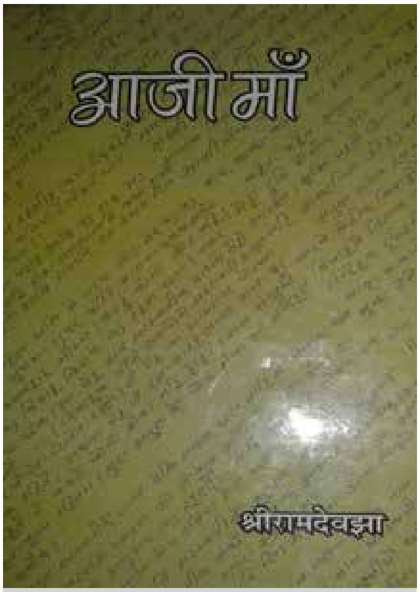

आजी मां

रचनाकार	:	रामदेव झा
प्रकाशक	:	मिथिला रिसर्च सोसायटी, दरभंगा
वर्ष	:	2009
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	127
विधा	:	कथा संग्रह

अक्टूबर-दिसम्बर 2001 अंकमे प्रकाशित भेल अछि। आजी मां चरित्र प्रधान कथा थिक जकर केन्द्रमे आजी मां छथि। एहि कथामे प्रवाह छै आ कथा कतौ ठमकल सन प्रतीत नहि होइत छै। संगहि संग जों-जों कथा आगां बढ़ैत छै तौं-तौं जिज्ञासाक भाव प्रबल भेल जाइत छै। कथामे घटना सभ सेहो अछि जे आजी मांक चहुंदिसि घूर्णित होइत रहैत अछि। मुदा अंतमे कथा एकटा नव भावक संग समाप्त होइत अछि जे मानवीय संवेदनासं पूर्ण अछि। आजी मां यद्यपि आरंभे सं एकगोट विशिष्ट नारीक रूपमे सोझां अबैत छथि मुदा अंत धरि जाइत-जाइत ओ आदर्शवादक सीमा छूबि लैत छथि। संगहि पारिवारिक मर्यादा, जे अपन मिथिलाक विशिष्टता रहल अछि, तकरो अभिव्यक्ति एहि कथामे भेल अछि।

संग्रहक दोसर कथा शहीद चौक एकगोट विवरणात्मक कथा अछि। एहिमे एकगोट सजीव पात्र छथि बंगालक रिफ्यूजी चिन्तूदा आ एकटा निर्जीव पात्र शहीद चौक मुदा दुनू एहि कथाक आवश्यक आ अपरिहार्य पात्र। ओ रिफ्यूजी चिन्तूदा स्वयंकें राष्ट्रक मुख्यधाराक व्यक्ति मानैत छथि आ गांधी, नेहरू आ सुभाषक चित्र टांगि शहीद चौकक स्थापना करैत छथि। मुदा एकदिन एक अधिकारी द्वारा हुनक दोकान आ खोपड़ि उजाड़ि देल जाइत छनि। आब एतही शहीद चौक अपन सम्पूर्ण सार्थकताक संग सोझां उपस्थित होइत अछि। शहीदक पारम्परिक परिभाषा बसियायल सन बुझना जाइत अछि आ चिन्तूदाक रूपमे एकटा नव शहीद नव रूपें परिभाषित होइत छथि। एहि कथाक प्रकाशन कथादिशा पत्रिकाक महाविशेषांकक 1997 केर अंकमे भेल छल।

तेसर कथा ठमकल घड़ी अछि जकर प्रकाशन भाखा पत्रिकाक मइ-जून 1989 अंकमे भेल अछि। जखन सियावर मिसरकें पुलिसिया डांग पड़ैत छनि तखन हुनक भखक टूटैत छनि। ओहिसं पहिने ओ अंगरेजिया सरकारक खैरखाह बनिक' रहैत छला। पुलिस द्वारा प्रताड़ित भेलाक बाद हुनक स्वाभिमान आहत होइत छनि आ तकर बाद ओ अंगरेजक विरूद्ध शंखनाद करैत छथि। जाहि ठाम

ओ आन्दोलनक शुरूआत केने छला, ओतहि बादमे टावर चौक बनल। कथा एकटा घटनाक वर्णन करैत प्रतीत होइत अछि। कथामे आयल मोड़ कोनो नव नहि अछि।

प्रेम शाश्वत थिक, ओ संवेदना पर जीवित रहैत अछि। ओकरा लेल वयसक कोनो महत्व नहि अछि। एकटा पति-पत्नी बससं रांची जा रहल छथि अपन पुत्रक ओहिठाम। ओ दुनू रस्ताभरि एक-दोसरक चिन्तामे मग्न रहैत छथि। बूढ़ीकें बूढ़ाक सर्दी लगबाक फिकिर फिरीशान केने रहैत छनि त' यैह चिन्ता बूढ़ाकें सेहो अपन बूढ़ी लेल छनि। ओ दुनू रस्ताभरि एक दोसराकें साल ओढ़बैत रहैत छथि। परस्पर कथा मोनक सिनेहक कथा कहैत अछि, संवेदनाक कथा कहैत अछि। ई अंतिकाक जनवरी-मार्च 1999 मे प्रकाशित भेल छल।

मकुआ छड़ी कथा एकगोट विशिष्ट कथा थिक। पतिक संगमे जे एकटा छड़ी छनि तकरा संग कतौ जेबासं पत्नी एहि कारणें मना करैत छथिन जे हमहीं अहांक सहारा छी त' एहि छड़ीक कोन काज? आ पत्नी ओहि छड़ीके सन्दूकमे बन्न क' दैत छथिन। मुदा जखन पत्नीक निधन भ' जाइत छनि त' ओ सन्दूकमे सं वैह छड़ी निकालि थाहि-थाहिक' श्मशान दिस विदा होइत छथि। कथा अंतमे पाठककें द्रवित क' दैत अछि। करूणाक उत्प्रेरकक रूपमे कथामे ओ छड़ी काज करैत अछि। एही तरहक भावप्रवण कथा डॉ. रामदेव झाकें रामदेव झा बनबैत अछि।

गाम आ गामक लोकक बदलैत स्वरूपक सटीक चित्रण भेल अछि चिन्हार गाम : अनचिन्हार लोक कथामे। पहिलुक समयमे लोक-लोकक बीच जे एकटा आपकता छलै, एकटा प्रेमक बन्हन छलै से आब टूटि गेल छै आ तें नैहर गेला पर भैयनि दीदीकें कुभेलिया धोबिन मोन पड़ैत छनि। ओकरा संग बिताओल दिन मोन पड़ैत छनि आ एकटा घटना मोन पड़ैत छनि जे हुनका दुनूमे विग्रहक कारण बनल। मुदा अंतमे सभ विद्वेष पानि जकां बहि जाइत अछि आ रहि जाइत अछि मात्र सिनेह। मुदा आइ ओ सभ किछु नहि आ तें भैयनि दीदीकें गाम घुमबाक कोनो लौल नहि रहि जाइत छनि। ई कथा 'ठेस' नामसं जखन तखन पत्रिकाक मार्च 2005 अंकमे प्रकाशित भेल अछि।

पीढ़ी अन्तरालक व्यापक चित्रण ढहैत पुरान घर कथामे भेल अछि। पुरान लोक आ नव लोकक आचार-विचार, इच्छा, रूचि आ शौक कोना एक दोसरासं भिन्न भ' जाइत अछि, तकर बस्र सुन्दर चित्रण एहि कथामे कैल गेल अछि। संगहि नवयुवक लोकनि निसां-पानिक गुलाम भेल जा रहल छथि जाहिमे पुरान लोक अपनाकें मिसफिट बुझैत छथि। एहि कारणें महनजी उदास भ' जाइत छथि।

ओकर सेहन्ता गलत व्यक्ति बनबाक कैक गोट पक्षकें सोझां रखैत अछि। कोना एकटा नकारात्मक व्यक्तित्व सभ पर राज कर' लगैत अछि आ ओकरा डरे सभ कियो सकदम्म रहैत छथि। मुदा ओहो व्यक्ति एकटा इमानदार आ नीक व्यक्तिक सम्मान करैत अछि। ओ ओहि व्यक्तिक समक्ष नतमस्तक भ' जाइत अछि जे ओकर डरसं नहि डेराइत अछि। ई ओहि व्यक्तिक लेल प्रायश्चितक माध्यम सेहो भ' सकैत अछि।

राम आदर्शवादी छला। ओ प्रत्येक निर्णय जनमानसक हितार्थ लेलनि। समाजमे एकटा आदर्श उपस्थापित केलनि। जेठांसक राम सेहो जे निर्णय लैत छथि ओहो जनसमुदायक लेल लैत छथि, हुनक लाभ लेल लैत छथि। ओ जेठांसमे अपन गाछी राखि ओकरा अपन माय-बापक नाम पर उसरगै छथि आ कहैत छथि जे आब ई गाछी हमर नहि अपितु सौंसे गाम-समाजक अछि। वस्तुत: ई कथा लोकमे नैतिक जागृति अनबाक प्रयासक कथा थिक। एकर प्रकाशन पूर्वमे इलाहाबदसं प्रकाशित पत्रिका प्रवासीमे 1997 ई. मे भेल छल।

पुत्रमोह कथा पुत्रक लेल पिताकें ओहनो काज कर' पड़ैत छनि जे काज हुनक परम्परामे निषिद्ध मानल जाइत रहल अछि। अंडा भने आइ घरे-घर प्रचलित खाद्य-पदार्थ बनि गेल हो मुदा एक समय छलै जखन अपन समाजमे एकरा निषिद्ध खाद्य बुझल जाइत छलै। मुदा पुत्रक कारणें परम्परावादी सोचक गुणेश्वरकें अंडा छूब' पड़ैत छनि। ई कथा रचना पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि।

मुट्ठीमे बन्द कथा चेतना पत्रिकामे अक्टूबर 1992 मे प्रकाशित भेल अछि। एहि कथाक अन्त एकटा हास्य कथा जकां होइत अछि मुदा एकर संदेश बस्र गंभीर अछि। लोक बिनु श्रमकें अर्जित करबाक प्रवृत्ति पोसने रहैत छथि आ तें जखन बूढ़ा सड़क पर झुकिक' कोनो वस्तु उठबैत छथि त' तकर अनेक दावेदार ठाढ़ भ' जाइत छथि। मुदा अंतमे ओ बूढ़ाक दांत बहराइत अछि। लोकक भीतर एकटा लालच मरोत काढ़ीक' बैसल रहैत अछि जे समय अयला पर बाहर निकसिये जाइत छै।

जत' पुत्रमोह कथा पुत्रक लेल पिताक त्यागक कथा थिक ओतहि फड़िच्छ भ' गेल छलै कथा एकटा पुत्रीक अपन पिता लेल त्यागक कथा कहैत अछि। चनरमा नामक बेटी अपन पिता सेवा-सुश्रुषा लेल अपन पतिक घर छोड़ि आबि जाइत अछि। बादमे चनरमाक पतिक तामस शान्त होइत छै आ ओकरा ईहो मोन पड़ैत छै जे चनरमाक पिता ओकर ओस्ताद सेहो रहल छै, तखन ओ चनरमाकें पुन: अपना लैत छै। ई कथा मैथिली अकादमी पत्रिकामे नवम्बर-दिसम्बर 1992 ई. मे प्रकाशित भेल अछि।

हलुमाना हौरन कथा एकगोट फिल्मी कथा सन प्रतीत होइत अछि जाहिमे संयोग तत्वक प्रधानता अछि। वास्तविक जीवनक सार्वभौमिक सत्य एहि कथामे देखबामे नहि अबैत अछि। एकटा नेनाकें बस स्टैण्डमे हेरा जायब आ पैघ भेला पर

पुन: भेटि जायब, सामान्य स्थिति नहि गढ़ैत अछि। मुदा कथामे रोचकता अपन चरम पर अछि आ तें पाठक जिज्ञासु भ' कथाकें पढ़ैत चल जाइत छथि। एकर प्रकाशन जखन तखन पत्रिकाक अक्टूबर-दिसम्बर 2006 अंकमे भेल छल।

कहां छें रे नुनुआं कथा एकटा फराक विषयवस्तुक कथा थिक जकर मूलमे पशुसं प्रेम आ मात्सर्य भाव निहित अछि। एकटा पठरूकें एकटा स्त्री द्वारा अपन दूध पियायब एकटा अद्‌भुत घटनाकें चित्रित करैत अछि। मुदा कथा अंतमे एकटा विडम्बनापूर्ण स्थिति ठाढ़क' दैत अछि जे करूण भने हो मुदा विश्वसनीयताक संकट उपस्थित करैत अछि। कथामे रोचकता अछि मुदा विश्वसनीयताक अभावक कारणें ई पाठक संग सहजतासं नहि जुड़ि पबैत अछि। एकर प्रकाशन भारती मंडनमे 2004 मे भेल छल।

रचना पत्रिकाक जनवरी-मार्च 2003 अंकमे प्रकाशित आ एहि संग्रहमे संग्रहित कथा एक निमूधनक आत्मकथा एकगोट मार्मिक कथा थिक जे पशुओमे संवेदना होइछ, तकरा स्थापित करैत अछि। बरद बिका जाइत अछि मुदा अपन मालिक आ अपन बथानक स्मरण ओकरा ततेक ने व्याकुल क' दैत छै जे ओ अपन बन्हन तोड़ि पुन: अपन पूर्व मालिकक ओहिठाम आबि जाइत अछि। ई कथा बरदक आत्मकथा थिक आ लेखकक तीक्ष्ण दृष्टिक परिचायक सेहो अछि जे ओ एकटा बरदक पीडाक अनुभूति एतेक मार्मिक आ सटीक रूपें केलनि अछि।

उपकारक बदला कथा सेहो उपर्युक्त दुनू कथाक परम्पराक कथा थिक। एहिमे बानर एकगोट पात्र अछि जे अपन हितैषीक पीड़ाकें नीक जकां गमैत अछि। पंखा बेचखवला गरीब सोमन द्वारा नित्य भोजन प्राप्त करखवला बानर जखन एकदिन किछु नहि पबैत अछि त' ओ बुझि जाइत अछि जे संभवत: आइ पंखा नहि बिकायल। एहन स्थितिमे ओ एकटा पाकल अड़रनेवा आनि सोमनकें दैत अछि। एहि कथामे मानवीय संवेदना त' अछिए मुदा ताहूसं बढिक' पशु संवेदना अछि जे मानवीय संवेदनासं मिसियो भर कम नहि छै। एहि कथाक प्रकाशन प्रवासी, इलाहाबादसं 1997 ई. मे भेल छल।

गुलंजर कथा कहैत अछि जे कोना एक कानसं दोसर कान धरि यात्रा करैत गप्प बदलि जाइत अछि आ अंत धरि अबैत-अबैत ओ गप्प अपन विकृतावस्थाकें प्राप्त करैत अछि। इनारमे दूध निकलबाक गप्पकें फूसि प्रमाणित करबा लेल पंडित मनमोहन झा कौआक पांखिक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि। ओ पांखिक खिस्सा एक कानसं दोसर कान पहुंचैत-पहुंचैत एहन गप्पमे परिवर्तित भ' जाइत अछि जे कौआ पंडितजीकें खोधि-खोधिक' मारि देलकनि। संग्रहक आने कथा जकां इहो कथा रोचक अछि।

मुदा आब की कुकृत्यक प्रायश्चितक कथा थिक मुदा ई सार्वभौमिक आ सार्वस्थानिक सत्य थिक जे प्रायश्चितोक एकगोट समय होइत छै। समय बितलाक बाद प्रायश्चितक कोनो महत्व नहि रहि जाइत छै। मैनेजर गलती केलक आ तकर सजाय भागिरथकें भेटलै। भागिरथकें मैनेजर डिसमिस क' देलकै आ अंतत: गरीबी आ भूखमरीक कारण ओकर पत्नीक असामयिक मृत्यु भ' गेलै। आब मैनेजरक मोन कचोटैत छनि जे हम बस्र पैघ गलती क' गेलौं। मुदा आब की ? आबत' समय बीति गेलै, आब गलतीक अनुभूतियो कोनो रूपें फलदायी नहि भ' सकैत अछि। आवश्यकता थिक जे गलतिए नहि करी आ करी त' समय रहैत चेति जाइ, प्रायश्चित क' ली, सुधारि ली अपन गलती। ई कथा मिथिला मिहिरक 25 जुलाइ 1953 मे प्रकाशित भेल छल।

दू ठोप नोर एकटा सतमायक भीतरक मातृत्वक कथा अछि। समाजमे प्रचलित सतमायक भांति-भांतिक स्थापित कल्पनाकें झांटैत माहेश्वरी एकटा आदर्श महिलाक रूपमे ठाढ़ छथि। ओ अपन पतिक पहिल पत्नीक संतानकें अपन माये जकां सिनेह आ प्रेम करैत छथि। ई समाजक नैतिकताक प्रति जागरूक करैत अछि। कथा बिनु कोनो तामझाममे आबद्ध भेने अपन काज पूर क' दैत अछि। एकर प्रकाशन पूर्वमे मिथिला मिहिरक 15 अगस्त 1953 केर अंकमे भेल छल।

संग्रहक बीसम आ अंतिम कथा थिक माय भूख लागल। एहि कथामे एकगोट सर्वहारा मजूरक व्यथा अभिव्यक्त भेल अछि। फेकना भट्टा पर मजूरी करैत अछि आ ओकर आर्थिक स्थिति विपन्न छै, ओकर घरवाली खखना माय सेहो काज करैछ मुदा दुनू मिलियोक' बाल-बच्चा लेल भोजन-पानिक जोगार नहिक' पबैत अछि। सामाजिक असमानता आ ओहिसं जनमल एकटा निराशाक कथा कहैत अछि माय भूख लागल। यद्यपि ई वर्तमान समयमे बेसी प्रासंगिक नहि रहल अछि किएक त' आब सरकारी योजनाक कारणें एहि तरहक भूखमरी शेष नहि छै। मुदा जाहि कालमे ई रचल गेल छल, ताहि समयक समाजक एनाक काज करैत अछि ई कथा। एकर प्रकाशन पूर्वमे निर्माणक 04 दिसम्बर 1954 केर अंकमे भेल छल।

डॉ. रामदेव झाक आजी मां कथा-संग्रह अपनामे विविध विषयक कथा सभ समेटने अछि। अनेक कथा सोझे दिमाग झनझना दैत अछि त' ओहनो कथा कम नहि अछि जे हृदयकें आन्दोलित क' दैत अछि। क्षणमात्रक विस्तृत अनुभूति आ पसरल समयक सूक्ष्म अनुभूति- दुनू तरहक तत्वकें एहि संग्रहमे स्थान देल गेल अछि। डॉ. रामदेव झाक एहि संग्रहक भाषा, पात्र रचना ओ वातावरण निर्माण अद्‌भुत अछि। सहज भाषा प्रवाह पठनीयताक लेल आवश्यक होइछ जकर निर्वाह एहि संग्रह मध्य खूब नीक जकां कैल गेल अछि। प्रत्येक कथा एकटा चित्र बनबैत अछि आ ओ चित्र कखनो हृदय त' कखनो मस्तिष्ककें आन्दोलित क' दैत अछि। ■

माटि-पानी संबंधक जीवंत कथा

✍ शुभेन्दु शेखर

कोनो कथा के जे अंतर्निहित तत्व होइत छै से होइत छै ओकर भाव आ वैह कथाक मानक होइत छै। यैह तत्व कथा कें कालजयी आ कथाकार कें महान बनबैत छै। कथाक कथ्य कें खोइचा छोड़ा क' उद्घाटित करब कथाकर्मक कसौटी होइत छै। कथ्य न' ब सेहो भ' सकैत छै आ पुरान सेहो मुदा ओकर कहबाक शैली कोनो कथाकार कें अनका सं पृथक करैत छै। बीसम शताब्दीक आठम-नवम दशक सं अपन साहित्यक यात्राक आरंभ केनिहार में सं मैथिलीक एकटा पैघ हस्ताक्षर छथि श्री शिवशंकर श्रीनिवास। वस्तुत: हिनक यात्राक शुरुआत होइत छनि कविता 'काठ कटि रहल अछि' सं जे सोमदेवजी द्वारा सम्पादित 'अग्निजीवी' में प्राय: 1972 में छपल छलै। तकर बाद ओ अपन पहिल कथा 'इजोत' ल' क' 1973 में अबैत छथि जे 'मैथिली दर्शन' में प्रकाशित भेल रहै। एकर बाद बहुत ओरिया क' निर्बाध गति सं अपन कथा यात्राक आरंभ ओ करैत छथि। 1983 में अपन कथा 'बुता' सं। हिनकर आ हिनकर कथाक मादे कथाकार अशोक जी कहैत छथिन जे गाम के हमर मोन में जीवित रखबा में शिवशंकर श्रीनिवास आ हुनकर कथा सबकें बहुत पैघ हाथ छै। गामक अस्तित्व, विकास आ प्रतिष्ठाक लेल हिनकर कथा सब मोन-मस्तिष्क कें छेकने रहैत छै आ आग्रही रहैत छै जे गामक लेल सोची, विचारी आ करी (तीरभुक्ति, जुलाई-सितंबर, 2019))। सहयोगी कथा संग्रह 'त्रिकोण' (1986) आ स्वतंत्र कथा संग्रह 'अदहन' (1991) आ 'गामक लोक' (2005) के बाद हिनकर टटका कथा संग्रह छनि 'गुण-कथा' (2014)। श्रीनिवासजीक कथा सब हताशा, निराशा आ आवसादक बीच इजोतक कथा कहैत छै। जं माटिक सुवास की होइत छै से ककरो बूझक 'इच्छा होइ त' हिनकर कथा सब पढ़क चाही। हिनकर कथाक प्राण तत्व होइत छै 'लोक', ओकर मोन, कृषि कार्यक सौंदर्य बोध आ लोकक ताकत।

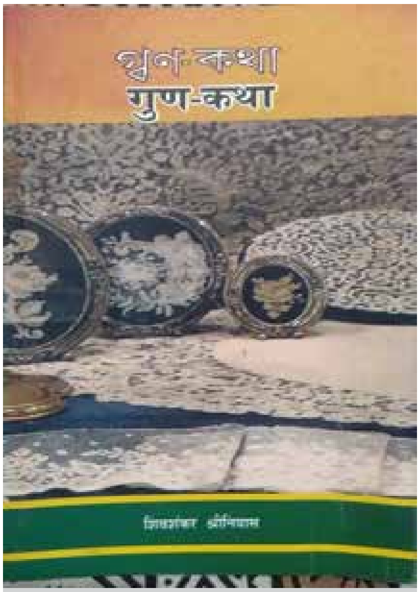

गुण-कथा

रचनाकार	:	श्री शिवशंकर श्रीनिवास
प्रकाशक	:	नवारम्भ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2014
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	120
विधा	:	कथा संग्रह

आब हम केंद्रित हुंज चाहब श्रीनिवासजीक नया संग्रह 'गुण-कथा' पर। कुल तेरह टा कथाक ई संग्रह नवारम्भ प्रकाशन सं प्रकाशित भेल छै। एहि संग्रह कथा सब चमत्कारक कथा सब नई छै परंच हमरा-अहांक गाम सं पलायन आ प्रवासक पृष्ठभूमि में संघर्षक कथा छै। हिनकर शहरो के कथा में गाम जीबैत रहैत छै जेना कि 'गुण कथा', 'सतभैंया', 'रूमाल', 'पितामही' आ 'मनुक्ख नदी थिक' में। हिनकर कथा सब भूमंडलीकरण के चपेट में संवेदनहीन होइत शहर के बीचो-बीच संवेदनाक संग फांड़ कन्हि क' ढाढ़ छै आ जेना छाती होकि क' कहि रहल छै जे - कनेको यदि हिआऊ अछि त' हमर जड़ि उकन्नन क' क' देखू त'। जड़ि माने गाम। बाजारवादक विरोध मे ठाढ़ 'साहुकारी' कथा के गोपीनाथ ठाकुर मास्टरसाहेब होइथ आकि 'गुण-कथा' के अंजनी देवी, कथाकार एत' अपन एकटा विशेषताक संग ठाढ़ भेटता जे हिनकर कथा सब मात्र समस्या कें नई देखबैत छै परंच

लेखक बायोकेमिस्ट्री सं स्नातकोत्तर आ मॉलिक्युलर बायोलॉजी एंड बॉयोटेक्नोलॉजी सं पीएचडी केर उपरांत सम्प्रति शोध वैज्ञानिक रूपें कार्यरत छथि। मूल रूप सं कथाकार, किछु समीक्षा सब सेहो प्रकाशित। अंतिका, जखन तखन आ पूर्वोत्तर मैथिल में कथा सब प्रकाशित। कथा संग्रह "ओकरो कहियो पांखि हेतै" अंतिका प्रकाशन सं प्रकाशित, संगहि फिल्म "छुटत नहि प्रेमक रंग के पटकथा एवम संवाद लेखन। रंगकर्म सं सेहो जुड़ल छथि।

__संपर्क__ : शोध वैज्ञानिक, लैब नं.-104, राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान, अरुणा आसफ अली मार्ग, जेएनयू कैम्पस, नई दिल्ली-110067, ***मो.*** *9968446606,* ***ईमेल*** *: shubhendu21@gmail.com*

ओकर समाधान के तरफ सेहो इंगित करैत छै। साहित्य मात्र समाजक दर्पणे टा नई होइन छै, ओ समाज कें एकटा दिशासेहो देखबैत छै। तें एत' कथाकार अपन कथ्य के ल' क' सफल छथि। एतबे नई अपन अधिकांश कथा मे कथाकार उपस्थित छथि ताहि माने मे हिनका इनवॉल्वमेंटक कथाकारकहल जा सकैत छै। उदाहरण ास्वरूप साहुकारी कथा मे गोपनाथ ठाकुर मास्टरी करैल छथि आ एकटा अपना लेल सम्मानक गप्प बूझैत छथि। संगहि कथा सेहो लिखैत छथि मुदा जखन बाजारीकरण के प्रभाव में आबि हिनकर संगी आ बेटा हिनकर मास्टरी कें निम्न स्तर के बूझि कथा लिखबाय के व्यवसायीकरण के लेल कहैत छनि सं हिनका बड्ड दुख होइत छनि। हिनकर दुख आरो तखन बढ़ि जाइ छनि जखन हिनकर पत्नी सेहो अपन वाला बदैल लैत छथिन। एहि कथा मे मानवीय आ सामाजिक मूल्य आ बाजारवाद तराजू के दू टा पासंग पर राखल छै। तहिना 3 ग्रह कथाक पात्र में सं दू टा केंद्रीय पात्र कथाकार छथि आ हुनका माध्यम सं समाजक विकृति आ स्वार्थतत्परता कें देखार करबा मे सफल भेल छथि कथाकार श्रीनिवासजी।

समय के संग गाम सेहो बदलि गेल छै मुदा अदौ सं समाज दूए टा वर्ग में बांटल रहल छै, एकटा पाई आ प्रभुत्व वाला वर्ग आ दोसर दूनू सं विहीन, से चाहे कोनो जातिक होइ। यैह बात कें स्पष्ट करैत छै एहि संग्रहक कथा 'सहरजमीन' जाहि मे बलदेव जखन कतेको बरखक बाद गाम अबैत छथि त' गाम में हुनका पुरना माहौल, समाजजिकता आ समरसता सं ल' क' अपन लंगोटिया संगी-साथी सब बदलल बुझाइत छनि। मुदा जखन ओ मंत्रीजी आनन्द चौधरी सं भेंट करबा लेल पहुंचैत छथि तं देखैत छथि सबकें मंत्रीजी ल'ग शरणागत मुद्रा में। ई वैह आनन्द चौधरी छला जे दलित आ गरीबक नेता कहाइत छला आ ओही वोटक बले जीतल छला। मुदा आब वैह गरीब आ दलित जनल हिनक पत्रट तरै छलै। ई दृश्य देखि बलदेव कें दलित नेता आनन्द चौधरी में बाभन जमींदार हरि ठाकुरक प्रतिबिम्ब देखाइ दैत छनि। ब्राह्मण वादक विरोध के उद्देश्य एकर सोझां एकटा अहीरवाद के स्थापना नई छै मुदा दैह ब्राह्मणवाद अलग-अलग मुखौटा पीहरि एखनो समाजक बीच उपस्थित अछि। एहि बात कें ई कथा उधार करैत पाठकक सोझां अनैत अछि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास आम जन-जीवनक भाषा, सोच, आस्था आ ओकर मनोविज्ञान कें बहुत नीक जेना अपन कथा सब में पकड़ैत छथिन। वस्तुत: आम जन कें बहुत नीक जेना हिनकर कथा सब अंग्रेजने रहैत छै। आमजन कें ई अपन कथा सब मे रिंगमास्टर के स्थान दैत छथिन जे सबटा संचालित करैत छै, आमजन सबसं पैघ शक्ति के रूप मे हिनकर कथा सब मे उपस्थित रहैत छनि। हिनकर यैह विशेषता अहू संग्रहक कथा सब मे देखार छनि।

तहिना बिम्बक माध्यम सं कथ्य कहबाक एकटा महत्वपूर्ण प्रयोग कथाकार केने छथिन कथा 'धार नहि मजरसै' मे जत' एक दिन अपन एकाकीपन सं पीड़ित विवाहक किछुए दिनक बाद विधवा भ' गेल रूपनी कें जखन ओकर घरबलाक संगतुरिया विराटबाबू मोन पड़ैत छै तं ओहि समयक मनोभाव के मेना आ कार कौवा के माध्यमे व्यक्त केने छथिन।

एहि संग्रहक अधिकांश कथा मे कतौ ने कतौ गाम दिस घुरि एबाक आग्रह रहबे टा करै छै। चाहे ओ कथा 'रसक अर्थ' होइ जाहि मे अपन वैज्ञानिक बेटा के गाम घुरि एबाक निर्णय सं अहिलाद मिश्रित चिंता मात्र-रूप के होइत छनि आ कि 'अनुराग' कथा होइ जाहि मे लोक-कला आ संस्कृति कें बचा रखबाक एकटा आग्रह होइ। सब हां एहेन एकटा आग्रह कथाकार पाठकक सोझां रखैत छथिन मुदा कथाकार संपूर्ण प्रक्रिया में न्यूट्रल रहि अपन गप्प कें कथा मे खोंइचा छोड़ क' कहैत चलि जाइल छथि। जेना कि परमाणु के नाभिक (केंद्रक) मे न्यूट्रल या आदेश रहित रहि क' परिधि में ऋणात्मक आदेशवाला इलेक्ट्रॉन कें नाभिक (केंद्रक) के धनात्मक आवेश वाला प्रोटॉन के तरफ बान्हि क' रखै छै। तहिना कथाकार कखनो विचलित नई भ' क' कथाक तमाम घटना-परिघटना आ पात्र कें कथाक मूल कथ्य सं कन्हने रखैत छथिन। अपन बात कें फरिच्छेबाक लेल श्रीनिवास जी अन्तरकथा, फकड़ा आ बिम्ब सबहक खूब प्रयोग करैत छथिन। जेना कि 'सतभैया' कथा मे सतभैया के कथा कहैत छथिन जाहि मे कोना-कोना अलग-अलग वर्ण आ जाति एक्के माय-बापक संतान होइतो अलग-अलग भ' जाइत छै आ अभिशप्त भ' जाइत छै असंपृक्त रहबाक लेल। एहि अंतरकथा कें कथा संग कतेक नीक जेना जोड़ गेल छै जे विनोदजी के बेटी जखन धर्मेत्तर विवाहक निर्णय लैत छै तं ओ भीतर सं हिल जाइत छथि। ई दैह विनोदजी छला जिनकर मात्र जातिक संकीर्ण व्यवस्थाक अपने माकूल छली। हिनकर माय तार्किक आ दूरदर्शी महिला छलखिन जे हरदम जाति आ धर्म सं उपरक सोच रखबाक आग्रही छलखिन। एत' तक कि ओ अपन संतानो सबकें अही विचारक बीच पैघ केने छलखिन। मुदा वैह निोदजी कें जखन अपन संतानक बेर मे निर्णय लेबाक वेर अबैत छनि तं हुनका सोझां बहुत प्रश्न ठाढ़ भ' जाइत छै। ई कथा समाज मे मनुक्खक अन्तरभाव कें आ ओकर मनोविज्ञानक कथा कहैत छै। अपन कथ्य कें स्पष्ट करें लेल एहि कथा मे कतेक नीक जेना कथाकार संवाद आ बिम्ब कें प्रयोग केने छथिन तकर कएकटा उदाहरण छै जेना कि विनोद जी के मात्र कहैत छथिन- बौआ हो, ई समाज जाति-धर्मक नाम पर मनुक्ख के बड़-बड़ विकट परिस्थिति मे देने छै। हमर सक्क चलैत तं

ई जाति-धर्म सब कें चूल्हि मे डाहि क' भस्म क' दीतियै। मात्र मनुक्ख रहितै ओ जुग रहितै। तहिना बिम्बक प्रयोग कतेक सधल छै से देखल जाए, जखन बेटी के विवाहक अन्तर्द्वन्द्व सं विनोद जी निकलैत छथि आ माय सं प्रश्न करैत छथिन जे - औंठा मे की भेलौए मां? त' माय उतरा दैत छथिन अहि मे पुरना नह सड़ि क' छूटि रहलैए, जाबत पूरा छूटि नइं जेतै ताबत कनियो लगै छै त' अवचंक प्राण भ' जाइए। तें बान्हि देने छिये। तहिना बिम्बक माध्यम सं कथ्य कहबाक एकटा महत्वपूर्ण प्रयोग कथाकार केने छथिन कथा 'धार नहि मजरसै' मे जत' एक दिन अपन एकाकीपन सं पीड़ित विवाहक किछुए दिनक बाद विधवा भ' गेल रूपनी कें जखन ओकर घरबलाक संगतुरिया विराटबाबू मोन पड़ैत छै तं ओहि समयक मनोभाव के मेना आ कार कौवा के माध्यमे व्यक्त केने छथिन। मैथिली कथाक इतिहास मे ई हमरा जनैत मोन रखबा जोग प्रयोग छै। मुदा जखन हम ई दूनू कथा के तुलना करैत छियै तं दूनूक निष्पति सं हम कने ठमकि जाइत छी। जत' 'सतभैया' मे कथाकार धर्मेत्तर विवाहक ओकालत करै छथिन आ 'धार नहि मजरलै' मे एकटा एकाकी वैधव्यक जीवन जीबै वाला स्त्रीक देहिक आ भावनात्मक आवश्यकता गप्प करैत छथिन, तत' 'धार नहि मजरसै' के सपनी विराट बाबू संग जेबाक लेल तैयार भ' जाइत छै, एत' तक कि ओकर कहब छै जे ओ चोरा क' नइ देखा क' जायत। तव' ओ फेर प्रति विराट बाबू संग जेबा सं मना क' दैत छै, किएक त' ओ बाछी तरे गाय पोसिया ल' सैत छै। एत' समाजिक वर्जना नई तोड़बाक आग्रही कथाकार किए भ' जाइत छथिन जखन कि आन कतेको कथा मे हिनकर पात्र सब समाजिक वर्जना सबकें तोड़ैक आग्रही छै। ई प्रश्न मोन मे एकटा पाठकक रूप मे हमरा जरूर अबैत अछि।

एहने उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक आ दाम्पत्य जीवनक केंद्र के कथा छै 'रूमाल' आ 'दबाई'। कथा 'रूमाल' के हिन्दी अनुवाद हाले मे श्री वैद्यनाथ झा द्वारा कयल गेल छलै जे हिन्दीयो जगत के लोकक बीच खूब प्रशंसित भेल छल। एहि कथा मे एक तरफ बडा साहेब जत' रूमालक माध्यमे पत्नीक श्रम आ स्नेहक महत्व कें अपन कनिष्ठ विमलचन्द्र क' ग उजागर करैत छथिन तहिना हुनकर मनोविज्ञान पर एकटा पैघ प्रहार करैत दाम्पत्य जीवनक आधार तत्व के तरफ सचेत करैत छथिन। तहिना 'दबाई' कथा दाम्पत्य जीवनक विश्वास जखन हिलै छै ताहि स्थिति के मनोविज्ञानक गप्प करै छै। कथा 'आभास' जत' गाम दिस घुरकक आग्रह सं भरल कथा छै ओतै कन्याक लिंग अनुपात में कमी के तरफ सेहो ईशारा करैत छै। ग्राम्य आ शहरी जीवनक मूल्यक अंतर के बहाने एक तरफ दूनू के मूल्य मे आयल हासक कथा त' कथाकार कहिते छथिन संगहि एकटा पैघ जीवन दर्शन सोझां रखैत छथिन कथा 'मनुक्ख नदी थिक' मे। हिनकर मानव छनि जे जहिना पहाड़ सं भिन्न-भिन्न नदी बहराइत छै आ ओकर अलग-अलग धारा होइत छै तहिना मनुक्खो के अपन-अपन अलग धारा होइत छै। कथाकार अपन कथ्य कें परिच्छेबाक लेल विभिन्न खिस्सा-पिहानी आ लोकोक्ति के माध्यम सं कथ्य कें पाठकक सोझां रखैत छथिन। हिनकर कथा मे कतेको गामैया शब्द सब अमरै छै जे विलुप्त हेबाक कगार पर छै।

मैथिलीक सुपरिचित साहित्यकार ललितेश मिश्र हिनका पाश्चात्य साहित्यक वेसेक्स शैलीक प्रतिनिधि कथाकार मानैत छथिन। हिनकर आने संग्रह जेना ईहो कथा संग्रहक कथा सब गामक सहरजमीन पर ठाढ़ भ' क' विभिन्न समाजिक, आर्थिक आ मनोवैज्ञानिक प्रश्न सब सं टकराइत छै आ एकटा समाधान के बात करवैत छै। ई खूबी बहुत कम कथा सब मे नजरि अबैत छै।

कुल मिलाक' निस्तुकी ई जे जे पाठक कथा पढ़ैत छथि आ कि लेखक कथा लिखैत छथि हुनका ई संग्रह अबस्से पढ़क चाही। कथा कहै के लूटि की होइत छै से श्रीनिवासजीक कथा सब पढ़ि क' सीखल जा सकैत छै। एहने आरो कतेक चीज छै जे एहि संग्रह के पढ़ि सीखल जा सकैत छै। ■

(पृष्ठ 58 केर शेष)

प्रेम-अनुराग सं सिक्त काव्यधारा

अखनुक व्यावसाकिताक दौड़ मे अहुंछिया कटैत लोक मुदा दोहरी जिनगी जीवैत के देखार करैत लिखलनि:

पत्नी अछैत शुगर नै बढै छै, बढ़ै छै त' बी.पी.!

किए दौगबैत रहै छथुन?

चुप्प, लोक सुनत त' हंसत...!

"सुआइत रामदेब बाबा लटगेनाक समान बेच' लगलै?

ऐ प्रकारें तरा उपरी निश्शन रचना सब सोझां आयल।

हिनक प्रत्येक रचना 'बीहनिकथा थिक मात्र बीहन नै' माने ओहन बीया नै जे' मोढ़ा मे जोगा राखल रहैछ। बाउग केला पर किछु जनमल आ किछु अतरा गेल।

'बीहनि' माने जे दुपतिया जनमल आ गाछक संपूर्णताक प्रतीक भ' सोझां ठाढ़ भेल।

'उपरान्त' मे संगोर किछु विश्वप्रसिद्ध रचना Seed Story writer (बीहनि कथाकार) आ बुकर पुरस्कार विजेता सुश्री लिडिया डेविसक जगजियार रचना - The Soul, Captured, Little Hot, आ Dialysys क समतुरिया सन लगैए।

किछु धारा मे बहैत गढ़ल मुदा मढ़बा सं बंचित सन। बानगी जकां-अंकरी, तुरहिनी, खतरनाक जीव आ क्षतिग्रस्त पुनर्लेखनक खगता देखबैछ।

सौंसे किताब छानि मारला पर ई विश्वास दियबैए आ अपने बीहनिकथाक निश्शन पहिचान पेबाक संग दोसरो के बाट धरा बीहनिकथा बाटक मीलक पाथर हेबाक सबूत दैए। ■

'हम छिएह तोरा संग...' ई घोषणा नहि क्रांति थिक

✍ वैद्यनाथ झा

समकालीन मैथिली कथाकारक पांति मे एकटा एहन कथाकार छथि जनिक कथाक केन्द्र मे समाजक सभसं निचला सीढ़ी पर ठाढ़ गरीब, लाचार, मुदा कठोर परिश्रमी लोक छनि, जनिक दृष्टि समाजक कुरीति, विषमता आ अन्याय सहैत वर्ग पर रहैत छनि आ समस्या सं लड़ैत नब बाट तकैत क्रांतिधर्मा नायक/नायिका पर रहैत छनि। ओ कथाकार छथि रमेश जी।

हुनक पोथी 'समकालीन नाटक', नाटक नहि, कथा संग्रह छनि। शीर्षक सं भ्रम होइत छैक जे ई नाटक सभक संग्रह हेतैक एकर शीर्षक एही संग्रह मे सं कोनो कथा कें राखल जा सकैत छल।

कोनो रचना सं रचनाकार कें अलग नहि कएल जा सकैत छैक। लेखकीय आत्मा अपन रचनाक भीतर-बाहर हुलकी मारिते छैक। लेखकक अनुभव ओकर अप्पन, 'विजन-टूल' अप्पन, नैरेशन अप्पन तं व्यंजना-शिल्प सेहो अप्पन रहैत छैक। अनुभव वैविध्य रचनाक स्वरूप मे सेहो विविधता आनैत छैक।

रमेश जी बिहार प्रशासनिक सेवा मे रहथि आ हुनक पद-स्थापन प्राय: 'प्रत्यक्ष पब्लिक डीलिंग' बला विभाग मे रहनि तें हुनक सम्पर्क मे वार्ड सदस्य, पंच, सरपंच, सचिव, स्थानीय नेता ओकर लगुआ-भगुआ ई सभ आवय, ओही स्तरक शतरंजी दांव-पेंच, शह-मात धरि पहुंचबाक धाड़फड़ी मे उपस्यांत लोक भेटनि। हुनका कथा लेल कच्चा माल ओही परिवेश मे भेटलनि।

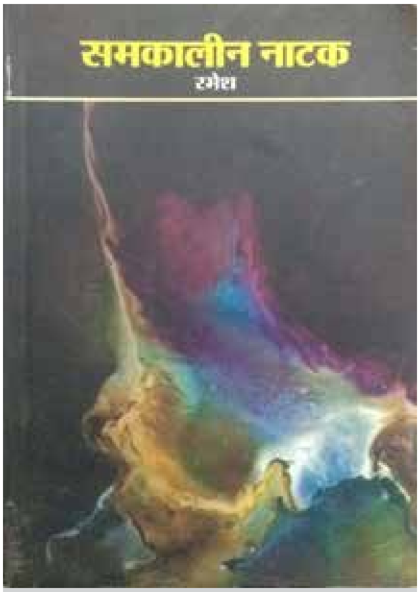

समकालीन नाटक

रचनाकार	:	रमेश
प्रकाशक	:	नवारंभ प्रकाशन, पटना/मधुबनी
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ ???
पृष्ठ	:	196
विधा	:	कथा संग्रह

प्रशासनिक अधिकारीक संग-संग रमेश जी संवेदनशील, सजग रचनाकार छथि तें समाजक सभ वर्गक, विशेष रूपे गरीब, मजदूर शोषित, पीड़ित लोक, गिरहत्थ, किन्नड़ि, नक्सली, वामपंथी भिड़न्तू कार्यकर्ता, चारु दिस पुरुषक सांप जकां लपलवैत कामुक नजरिबिला हमला झेलैत आ अपनाकें बचबैत स्त्री, अपन गाम-घर छोड़ि पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, मुम्बई दिस जाइत मजदूर आ गाम सेबने ओकर सभक पत्नी सभ हिनक कथाक पात्र छनि। रमेश जी पात्र गढ़ैत नहि छथि, पात्रक भीतर नुकाएल दर्द, लचारी, संघर्षक : संकल्पकें बाहर आनैत छथि।

ई पोथी 'समकालीन नाटक' 15 गोट कथाक संग्रह थिक आ मधुबनी सं नवारम्भ प्रकाशन सं प्रकाशित भेल अछि। ओना तं संग्रहक सभ कथा महत्वपूर्ण, रुचिगर आ पठनीय छैक, एहिमे सं किछु कथाक मादे गप्प कएला सं पूरा पोथीक समग्र, प्रवृत्तिगत मूल्यांकन सोझा मे अबैत छैक।

संग्रहक पहिल कथा छैक, 'समरस हौ मीता'। समरसता अजुका गामक समाजक प्रमुख बेगरता छैक, अपेक्षा। आइ काल्हि गाम, समाज मे खटरसता बेसी छैक। जाति-पांति, कुल-शील, पाइ-कौड़ी एहि खटरसताक मूल मे थिकैक। एतय लेखकक छटपट्टी मानवीय मूल्यक रक्षाक चिंता लएं कए छैक। मित्रता सेहो ओहि मानवीय मूल्यक एकटा 'मैनिफेस्टेशन' छैक। सहज उदारमना लोक एहि मित्रताक बाटमे कोनो बाधा नहि आव' छैत छैक मुदा गामक स्थानीय राजनीति, जतिगत दम्भ ई सभ खटरास कें जन्म दैत छैक।

लेखक दुनू समानान्तर पात्र दू वर्गसं लेलाह आ नामो रखलनि टुन्नीलाल झा आ टुन्नीलाल कामति। नामकरण

वैद्यनाथ झा मैथलीक प्रसिद्ध लेखक आ अनुवादक छथि। हिनक बाल कथा संग्रह खिस्सा सुनु बाउ वर्ष 2018 मे बाल साहित्य पुरस्कार (मैथिली) सं पुरस्कृत भेल अछि।

संपर्क *: 405, बी-ब्लॉक, सेक्टर-56, (हुड्डा प्लॉट) गुरुग्राम-122011 (हरियाणा),* ***मो.*** *9582221968*

साभिप्राय छैक आ व्यंजना-कौशल सेहो। गाम-घरक राजनीतिक सूक्ष्म सं सूक्ष्म घटना सभ कथा मे समेटल अछि। गाम-घर परिवारक छोट सं छोट बात 'टिपिकली' अंग्रेजल अछि। एहि कथाक सभसं महत्वपूर्ण बात ई थिकै जे टुन्नी झा आ टुन्नी कामक जीवन मे कएक मोड़ एहन अबैत छैक जे मित्रता टूटि जाइत छैक। मुदा उमेश मंडलक बूथ कब्जाक विरोध करैत मारल गेल टुन्नी झाक लहास लग बैसल टुन्नी कामतिक मीता-प्रेम सूत्र निम्न सं जागि जाइत छैक। ओ ओकर लहास लग बैसल पुलिसक प्रतीक्षा करैत छैक। मुखिया उमेश मंडलक विरुद्ध गवाही दय लेल ओ तैयार भ' गेल अछि।

संग्रहक एकटा कथा छैक- ''लाल टरेस आंखि।'' रमेश जी लाल टरेस आंखि कें कामुक मानसिकताकें प्रतीक्त रूप मे कुशलता सं स्थापित करैत छथि। ई लाल टरेस आंखि कोर्ट-कचहरी, पुलिस, प्रखंड, सड़क, चौबटिया, घर-आंगनि सबतरि स्त्रीकें खेहारैत छैक, सीसीटीभी कैमरा जकां स्त्रीकें कैद कर' चाहैत छैक मुदा ओ कथा रमेश जीक कोना जाहिमे अन्यायक विरुद्ध प्रतिरोध नहि हुअय, अन्यायक सोझा मे प्रबल संघर्ष नहि आबय आ ओहि संघर्ष सं नायक/नायिका बाट नहि ताकि लय प्रतिरोध तं अवस्से। बाबा यात्री जी कहने छथि-

''प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव हं मेरा।''

ई कथा स्त्री अस्मिता पर लाल टरेस आंखिक चोट आ का ओकरा विरुद्ध, भयंकर संघर्षक गाथा छैक। प्रतीकक एहन सुन्नर उपयोग कथाक कलात्मकताकें बढ़बैत छैक।

संग्रहक एकटा कथा छैक- 'समकालीन नाटक'। पोथीक शीर्षक सेहो इएह छैक जे प्रथम दृष्ट्या भ्रमपूर्ण बुझाइत छैक मुदा कथा पढ़ला पर 'नाटक' शब्द सेहो प्रतीक रूप मे प्रयुक्त कएल बुझना जाइत अछि। वार्ड, गाम, खण्ड, प्रखण्ड, राजधानी, पुलिस थाना, जहल ये नाटक, रंगमंच आ पंच, सरपंच, पंच-पति, सरपंच-पति, मुखिया-पति, मुखिया, किरानी, बड़ा बाबू, सिपाही जी, चाहबला, चपड़ासी, बीडीओ, एमेले ई सभ नाटकक किरदार छैक। जीवंत किरदार। एहि नाटक सं विवशता, पाखयड, आडम्बर, देखाउंस, महत्वाकांक्षाक लपलपी, संख-सेहन्ता, कबिलपनी मे फंसल समाजक रूप प्रकट होइत छैक। इएह तं नाटक छैक।

संग्रहक एकटा कथा छैक- 'लिंग-निर्णय'। एहि कथाक परिवेश 'मोबाइल' छैक माने सचल परिवेश-चलैत ट्रेन। अस्थल किन्नड़, डुप्लीकेट किन्नड़, ट्रेनक यात्री सभ। एहि कथा मे रिंकी-प्राकृतिक- विकृति चलिते किन्नडिक उपहास पूर्ण जीवन जिबैत, पेट भरवा लेल नाच-गान, अपमानबला जिनगीक सत्य सं अनभिज्ञ, बालबोध जिज्ञासासं भरल एकटा बचियाक स्थिति बड्ड विचित्र भ' जाइत छैक। कथाक सभटा पात्र कतहु ने कतहु क्रूरता, करुणा आ लचारीक शिकार अछि। ई कथा कटु यथार्थपरक व्यंग्य... छैक। कथाकार लिखैत छथि-

''डर स्त्रीलिंग, निर्लज्जम, थेथरई पुल्लिंग, सर्भिसिया स्त्रीलिंग आ विजनेसिया पुल्लिंग होइत छैक।'' कतेक क्रूर व्यंग्य छैक नौकरिपाहा आ बेपारी वर्ग पर।

संग्रहक अंतिम कथा ''पानिबट बनवैत पानि'' स्त्री-संघर्षक नब आयाम सं परिचय करबैत अछि। सरिपहुं ई कथा सामाजिक क्रांति, कुरीतिक विरुद्ध संकल्प, कमजोर स्त्रीगण सभक त्राताक रूप मे ठाढ़ि एकटा स्त्रीक कथा अछि, नवोन्मेषक आह्वान। बिम्बात्मक दृष्टिकोण सं कही तं स्त्रीक एतेक कठिन संघर्ष आ आन स्त्रीगणकें उठाक' ठाढ़ कर' बाली स्त्रीक गाथा कम्मे पढ़ल जे ओ 'पानि मे बाट अछि', मतलब बूझू जे असंभव कें संभव कए रहल होइथि। सुनीता पासमान (पासवान)क किछु संवाद नव जीवनक जटिल समस्याक हल लेल नव इजोत देखबैत अछि-

''शोग-दुख के अपन समय हइ आ हंसी के अप्पन''

''भुक्खल पेट मे नूड़ी-जुन्ना ठूसि क' तं मनुक्ख नहि जी सकैत हइ।''

''परेम अग्मा के संबंध मानइ हइ। खेनाइ-पिनाइ सं की मतलब हइ। मोन कन्टरोल मे हइ त' सब कुछ ठीक हइ।''

''बहिते धार निम्मन होइ हइ आ पानि अपन पानिबट अपने ताकि लइ हइ। जिनगी ऊहे हइ।''

देखियउ, एकटा स्त्री संघर्षक धध रा मे तापिक' कोना सोन बनि आन स्त्री लेल 'त्वाम् सर्वभयेभ्य: मोक्षयिष्यामि, मामेकं शरणं व्रज'' बला भाव सं बजैत छैक-

''हइ पुतहुआ सब! के सब तोरा तंग करै छ?' हम छियां तोरा संग। कोनो चिन्ता नइ।''

सुनीता पासवानक कुरीति के उपटयबाक आह्वान देखियौक-

''सिमरिया के मेला सं मेटल-बला चूड़ी कीनिक' पहिरनाइ हइ, पियाज-लहसुन, कच-कचड़ी किच्छो, ने छोड़नाइ हइ। ठोप-बिन्दी सब करै, हइ आब। कोनो उजरा नूआ पहिरेके जरूरति नइ हइ, छींट के साड़ी पहिरनाइ हइ। ...आब भोलनी काकी बला पुरना जमाना नइ हइके।

क्षेत्रज शब्दे सं सौंसे कथा संग्रह भरल अछि। एहन शब्द सभक प्रयोग पाठक कें 'नास्टैल्जिक' बनर्बत छैक। आम पाठक के जकरा अकादमिक वा स्तरीय भाषा मे पढ़वाक अभ्यास छैक, ओकरा एहि शब्द सभक अर्थ बुझबा लेल अतिरिक्त प्रयास कर' पड़तैक। परमुख, पिलसिम, इनिसपेक्टर, बलॉक, मरदाबा, एमेले, महजिद एहन शब्दसं लैस कथा सभ जनभाषाक रूप ल' लैत छैक।

शैलीक गप्प करी तं व्याख्या (नैरेशन) पक्ष बेसी जगह बनौने अछि जे 'खिस्सागोई' पक्ष कें कमजोर करैत छैक।

पोथी पठनीय अछि। ■

ज्ञान संग मनोरंजनक गुलदस्ता

✍ **अमित मिश्र**

बाल साहित्य ओ जे बाल मन भाबय। एकर बहुत रास विधा अछि, जाहिमे प्रमुख अछि कविता, कथा, एकांकी, नाटक, चित्रकथा। एहि सभमे जे सबसं बेसी रुचिगर विधा अछि कथा।

बाल कथाक परम्परा बड़ पुरान अछि। नेना-भुटका सभ बाबा-बाबी, नाना-नानी आदिसं खिस्सा सुनबे टा करैत अछि। अपन मिथिलामे राति क' सुतबा बेर लोरीसं बेसी कथा कहबाक परम्परा रहल अछि। एकर प्रसिद्धिक अनुमान एहि बातसं लगाओल जा सकैए जे बिनु कथा सुनने नेना-भुटका सुतैत नै अछि आ यैह कारण अछि जे कतोको लोककथा सभ दंतकथा बनि हमरा सभक मोनपर अपन अमिट छाप छोड़ने अछि, ओना परिवेश बदलल अछि। समयाभाव लोकक़ें मनोरंजनक दुनियांसं अलग-थलग क' देने अछि। नेना सभपर पढ़ाइक बोझ तेना ने थोपल जा रहल अछि जे ओ खिस्सा-पिहानी वा खेल लेल समय निकालिए नै पाबि रहल अछि। कुल मिला क' एक वाक्यमे कही त' खिस्सा-पिहानी सुनबा-सुनेबाक धार आब सुखल सन लागि रहल अछि।

मैथिली बालसाहित्य शोध ग्रंथमे डॉ. दमन कुमार झा कहैत छथि "साहित्यक मुख्य उद्देश्य थिक समाजकें असत्य पथपर जयबासं रोकब तथा सत्य पथपर बढ़बाक प्रेरणा देब। एकर सभसं बेसी प्रयोजन नेनाकें छैक, कारण नेनाक मस्तिष्क कोरा कागत रहैछ, ओहिपर जैह लिखि देबैक, सैह अमिट भ' जयतैक। कोमल मनपर कोमलतासं कहल जायवला प्रत्येक शब्द पाथरक रेखा बनि जाइछ, जे कहियो मेटाइछ नहि। नेना प्रकृतिक एहन मोहक उपहार थिक जे वर्तमान आ भविष्यक बीच पूलक काज करैछ।" ई कथन सत्य अछि आ बाल साहित्यमे बेसीए लागू होइत अछि किएक त' नेना भविष्यक युवा छथि। तें हुनका लेल एकटा स्वस्थ साहित्य आवश्यक अछि। मुदा से भेटैत नै अछि। गद्य साहित्य आ ताहुमे बाल साहित्यक एहि अकालमे एकटा नाम बेर-बेर अभरैत अछि ऋषि बशिष्ठक। बाल साहित्यमे आधा दर्जन पोथी रचनिहार ऋषि बशिष्ठक एकटा कथा संग्रह अछि "ई फूलक गुलदस्ता"। नेना-भुटकाक हृदय फूले सन कोमल होइत अछि। ओकर जिनगीमे दुखक कोनो स्थान नहि। ओ त' मात्र फूलक पराग सन हंसी-खुशीक सुगंध पसारैत रहैत अछि। एहि प्रकारें पोथीक नाम सार्थक अछि। कथाकार नेना सभक लेल एकसं एक कथा सभक गुलदस्ता आनने छथि।

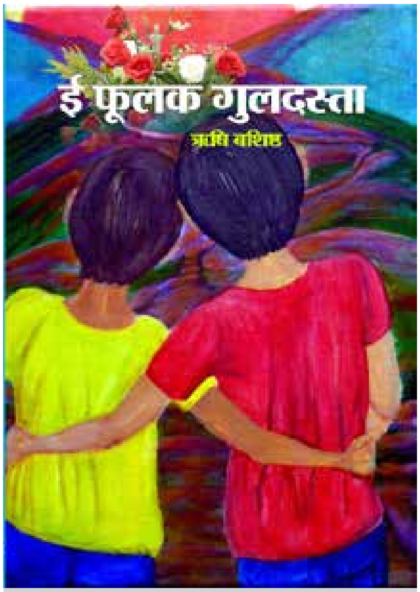

ई फूलक गुलदस्ता

रचनाकार	:	ऋषि बशिष्ठ
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 80
पृष्ठ	:	88
विधा	:	बाल कथा संग्रह

नामके अनुरूपे रंग-बिरंगक फूल सन रंग बिरंगक भाव-भंगिमासं भरल-पुरल चारि टा खण्डकें एक ठाम गुलदस्ता बना नेनाक स्वस्थ मानसिक विकास लेल आ पढ़ाइ-लिखाइक तनावसं दूर जा तरोताजा हेबाक लेल ई संग्रह प्रस्तुत केने छथि।

ई फूलक गुलदस्तामे कोनो भूमिका वा लेखकीय वक्तव्य नै राखि एकटा नव परंपराक आरंभ अछि। अधिकांश भूमिकामे मात्र लेखकक बड़ाइ रहैत अछि। रचनाक स्तरसं ओकरा कोनो मतलब नै रहैत अछि। ओहि भूमिकाकें पढ़ि लोक फसि जाइ छथि आ स्तरहीन रचनाकें सेहो खूब नीक बूझि समय आ टाका बर्बाद करै छथि। मुदा कथाकार एकर कोनो भूमिका नै द' भूमिका बान्हबाक काज पाठकपर छोड़ि देलनि अछि। ककरो कहलासं कथा नीक नै होइ छै तें कथाकार एतय भूमिका नै देबाक खतरा मोल लेने छथि।

समस्तीपुर जिलान्तर्गत मध्य विद्यालय, करियन मे प्रखंड शिक्षक। एखन धरि आध दर्जन सं बेसी पोथी प्रकाशित। हिनकर बहुचर्चित बाल कविता संग्रह अछि 'अंशु बनि पसरि जाएब'।

***संपर्क** : ग्राम+पोस्ट : करियन, भाया : इलमासनगर, जिला : समस्तीपुर, राज्य : बिहार, पिन : 848117*

***मो.**: 9122105183, **ईमेल**:mit11193@gmail.com*

कुल सोलह गोट कथाकें चारि उद्यान (खण्ड)मे बांटल गेल अछि। सोलहो कथाक शीर्षक एना अछि- 1. ई फूलक गुलदस्ता 2. डुगडुग्गी 3. सुटहा 4. दाम 5. एकटा मायक ममता 6. रंगमे भंग 7. जाड़-ठारमे 8. झिझियाक कथा 9. गोपीचन्द 10. सेर के सावा सेर 11. चमत्कारी हंडी 12. खिच्चड़ि-खिच्चड़ि 13. झीलमे डुमैए चान 14. जंगलमे हुआं-हुआं 15. ककरो कहबै नहि 15. इनाममे फिफ्टी-फिफ्टी।

उद्यान-एकमे ई फूलक गुलदस्तासं ल' क' जाड़ -ठारमे धरि कुल सात गोट कथा अछि। ई सभटा कथाक उद्देश्य बालकमे साहस उत्पन्न करब, ओकरा अपन दायित्व बोध कराएब, सामाजिक चेतना जगाएब आ जीवनक चुनौती स्वीकार क' ओकर समुचित निराकरण करनाइ सिखाएब अछि। पहिला कथा 'ई फूलक गुलदस्ता'मे कथाकार बाल मनोविज्ञानक बड़ नीक उदाहरण देने छथि। बाल दिवसपर प्रधानाध्यापक द्वारा वृक्षारोपण ाक उपयोगिता बताओल गेल-जकर प्रभाव किछु छात्र/छात्रा पर तेहन ने पड़लै जे ओ सब गुप्त रूपें एकटा ग्रुपक बना पंडित सीतारामक बंद पड़ल विशाल बंगलाक छहरदिवालीक अंदर फूलक बगीचा लगौलक। लोकक कुदृष्टि एहि ग्रुप पर पड़लै आ अनेक घटना घटैत-घटैत जखन असली भेद खुलल त' सभ वाह वाह कहि उठल। एहि कथामे पर्यावरणक प्रति प्रेम, शिक्षकक बातक अनुपालन करबाक सीख आ संगहि एकटा समूह बना काज करबाक सीख देल गेल अछि जे छात्रक लेल खूब उपयोगी साबित हएत।

'डुगडुग्गी' कथामे बच्चाक उपयोग क' माहिर चोर सभ चोरी करबाक फिराकमे छल, मुदा नेनाक बुद्धिक आगू सभ बेकार भ' गेल। नेना अपन बुद्धिसं डुगडुग्गी बजाबै लेल चोरकें मजबूर केलक आ अंततः सगरो जाग भ' गेल। ई कथा सिखबैत अछि जे केहनो विपति किए ने होइ हमरा सभकें अपराधक बाट नै पकड़बाक चाही।

'सुटहा' बहुत कारुणिक कथा अछि। बाल श्रमिकक रूपमे महानगरमे काज करैत एगारह वर्षीय नेना जखन अपन मांकें पत्र लिखैत अछि त' ओहि पत्रमे नाना प्रकारक बात सभ रहै छै, उत्सुकता रहैत छै आ त्याग त' अछिए। ई कथा कना दैत अछि आ सिद्ध करैत अछि जे परिस्थिति नेनाकें सेहो वयस्क बना दैत अछि। कथा नीक बनल अछि मुदा एकटा नेनाकें श्रमिक रूपमे देखाएब कने नकारात्मक सोच सेहो दर्शाबैत अछि।

'दाम' कथामे एकटा गुरु द्वारा शिष्यक योग्यता जांचक आ संगहिं संग शिष्यक व्यावसायिक प्रबंधन पर मनोरंजक तरीकासं टिप्पणी कएल गेल अछि। ई कथा नेनाकें व्यवसायमे लाभ कमेबाक लेल योजना बनेनाइ सिखबैत अछि।

'एक टा मायक ममता' कथामे कुकुर-बिलाड़िक माध्यमे एक दोसरसं प्रेम करबाक सीख बड़ विलक्षण तरीकासं देल गेल अछि। 'रंगमे भंग' कथामे चंचल हवा भरल सोफापर बैसल अछि आ ओकर डोरी पकड़ै बला नेनासं डोरी छुटि जाइ छै। चंचल खूब ऊंच उड़ि जाइ छै सोफा संगे। एतौ नेना सभक सकारात्मक सोच, सामूहिक निर्णयपर कएल गेल कार्यावाहीसं दुर्घटना होइत-होइत रहि जाइत अछि। कथा सूझ-बूझ संग काज करबाक लेल प्रेरित करैत अछि।

'जाड़-ठारमे' घरक खढ़ नोचि आगि पजाड़ि बाबाकें जाड़ ठारसं बचाएब बच्चाक साहसक एकटा नीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। ई कथा नेनाकें पैघक आदर करब सिखबैत अछि। एहि प्रकारें पहिल उद्यानक सातो कथा सामाजिक सरोकारसं जुड़ल अछि। ई सभटा कथा बाल मनोविज्ञानक विभिन्न प्रकारक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

उद्यान दूमे मात्र दूटा कथा अछि। ई दुनू कथा ऐतिहासिक कथा अछि। अपन मिथिलामे दंतकथाक रूपमे झिझिया नाच आ गुदरिया बाबाक कथा प्रसिद्ध अछि। ई दुनू कथा नेनाक मनोरंजन त' करिते अछि संगहिं इतिहाससं परिचय सेहो करबैत अछि। कथाक प्रस्तुति आ प्रवाह मनमोहक अछि।

उद्यान तीनमे तीन कथा अछि। एकर तीनू कथा हास्य संग-संग नेना सभकें नीक सीख दैत अछि। एहि खण्डमे एकटा कथा अछि 'खिच्चड़ि-खिच्चड़ि'। कमालकें हास्य तं अछिए, रटंत विद्यापर व्यंग्य सेहो भेल अछि। ई कथा नेना सभकें बुझि क' पढ़बाक लेल प्रेरित करैत अछि। एकरा तुलनामे सेर के सावा सेर आ चमत्कारी हंडी कनेक कमजोर कथा अछि।

उद्यान चारमे झीलमे डुमैए चान, जंगलमे हुआं हुआं, ककरो कहबै नहिं, इनाममे फिफ्टी-फिफ्टी चारि गोट कथा अछि। चारू कथाक प्लॉटमे विभिन्नता आ नवीनता अछि। 'झीलमे डुमैए चान' कथामे बानरक लाथें समाजमे बुजुर्गक महत्व आ हुनक छत्रछायाक आवश्यकता देखाओल गेल अछि। एहिमे उत्साह आ तागतसं बेसी उपयोगी अनुभव होइत अछि, से सीख देल गेल अछि जे नेनाक लेल प्रेरणास्पद अछि। 'जंगलमे हुआं हुआं' जंगलक राजाक मूर्खता आ प्रधानमंत्रीक ठकपन चातुर्यक कथा अछि। कथा हंसबैत अछि आ समाजमे पसरल राजनीतिक भ्रष्टाचारपर कटाक्ष सेहो करैत अछि। हास्य, मनोरंजनक अलावे कोनो खास सीख एहि कथासं नै भेटैत अछि। एहन कथानक आ निष्कर्ष बला और कथा सभ दंत कथाक रूपमे सुनल-सुनाएल अछि।

'ककरो कहबै नहिं' स्त्री मनोविज्ञानकें उजागर करैत एकटा नीक हास्य कथा अछि। बगीचाक पहरेदार ऐरावत हाथीक नांगरि पकड़ि स्वर्ग जाइत अछि आ ओत'सं घुरलाक बाद अपन पत्नीकें सभटा पिहानी कहैत अछि। आ शनैः शनैः पूरा गामकें पता चलि जाइत अछि। नियत तिथिकें सभ क्रमानुसार ऐरावतसं लटकि जाइत अछि। पहरेदारक पत्नी अपन प्रशंसामे खूब गप कहै छथि खुशीक अतिरेकमे पहरेदारसं नांगरि छोड़बा दै छथि। सभ धरतीपर धड़ामसं खसैत अछि।

'इनाममे फिफ्टी-फिफ्टी' सेहो एकटा सुन्दर कथा अछि। कुल मिला क' देखल जाए त' एहि संग्रहक सोलहो कथामे ओ सभटा विन्यास देखबाक भेटैत अछि जे एकटा नेनाक कथामे हेबाक चाही।

एकर कथा सभ सिद्ध करैत अछि जे कथाकार बाल मनोविज्ञानकें नीक जकां जानै छथि। सभटा कथाक किछु ने किछु विशेषता जरूर अछि। एहिमे करुणसं ल' क' हास्य धरि सभ तरहक कथा सभ अछि अर्थात 'ई फूलक गुलदस्ता' नेना सभकें पढ़बाक लेल उपयुक्त संग्रह अछि। ■

फार्म-4

तीरभुक्ति त्रैमासिक शोध पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य विवरणः

1.	प्रकाशन का स्थान	नयी दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	विजय चन्द्र झा
	नागरिकता	भारतीय
	पता	डी-327, गली नं. -7, डी-ब्लॉक, मुकुंद विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094
4.	प्रकाशक का नाम	विजय चन्द्र झा
	नागरिकता	भारतीय
	पता	डी-327, गली नं. -7, डी-ब्लॉक, मुकुंद विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094
5.	संपादक का नाम	विनीत कुमार झा उत्पल
	नागरिकता	भारतीय
	पता	सी-32, द्वितीय तल, गली नं.-1, मंडावली ऊंचेपर, आईपी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092
6.	उन व्यक्तियों का नाम व पते जो पत्रिका के पूर्ण स्वामित्व में कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के स्वामी/हिस्सेदार हों	अखिल भारतीय मिथिला संघ, मकान नं. 435 ई, ई-ब्लॉक, गली नं.-7, संगम विहार, नयी दिल्ली-110062

मैं, विजय चन्द्र झा, एतत् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

(विजय चन्द्र झा)
प्रकाशक

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आ एहि सं जुड़ल मुदा पर मैथिलीमे प्रकाशित ब्लाइंड पीयर रिव्यू प्रणालीक' शोध पत्रिका अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां कें सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। एहि शोध पत्रिका कें आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' केर पांच वार्षीय सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' केर सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,
नियमित सदस्यताः
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ड्राफ्ट सहित ***'अखिल भारतीय मिथिला संघ'*** *केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
पर मेल करी।

पत्राचार पता :
तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशा: ....

शिक्षा : ....

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली : **विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000

: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

: **भास्कर ज्योति**
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
: सोनू बुक कॉर्नर, मो. 9931291259

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : विभा रानी, मो. 887970891

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
: किताब कोनचर, लगिच: सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना- 800010 संपर्क: 9955995509

भागलपुर : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

सहरसा : अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' मो. 9771006810

मधेपुरा : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

समस्तीपुर : नरेश कुमार 'विकल', मो. 9430244114

कोलकाता : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

सिलचर : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

सुपौल : केदार कानन, मो. 7004917511

रायपुर : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

बिहार प्रगतिशील लेखक संघक कार्यक्रममे वर्तमान मैथिली पत्रकारिता आ तीरभुक्ति पर विमर्श

अखिल भारतीय मिथिला संघ आ रोटरी क्लब (राजेन्द्र प्लेस) द्वारा आयोजित कैंसर जागरूकता शिविर मे संघक उपाध्यक्ष आ प्रसिद्ध स्त्री स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. ममता ठाकुर संग लाभार्थीगण लोकनि

अखिल भारतीय मिथिला संघक मिथिलानी समूह द्वारा आयोजित सामा-चकेवा उत्सवक दृश्य

ISSN : 2582-1660
29 जनवरी, 2020 कें प्रकाशित

TEERBHUKTI - The Journal of Akhil Bhartiya Mithila Sangh
RNI No. : DELMAI/2018/76698

अतीत सुंदर : वर्तमान सुंदर : भविष्य सुंदर

संपूर्ण विश्वमे पसरल मैथिल समाज के जोड़बाक लेल
पिछला 52 बरख सं कृतसंकल्प

अखिल भारतीय मिथिला संघ

केर अभिनव संकल्पना

विश्व मैथिल सम्मेलन

(तिथिक घोषणा शीघ्र होयत)

मिथिलाक ज्ञान, संस्कृति, संस्कारक अस्तित्व
बचेबाक लेल आ विकासक लेल सदिक्खन तत्पर
अखिल भारतीय मिथिला संघ सं
जुड़ू आ जोड़ू

संपर्क करू :

अखिल भारतीय मिथिला संघ
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001, मो. 9650461788, 971753900
http://www.mithilasangh.com
https://www.facebook.com/sanghmithila/
https://twitter.com/SanghMithila
Instagram.com/akhilbhartiyamithilasangh
https://www.youtube.com/channel/UCtA81gehTaYofJgsOQTnn5w

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'